A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 22 मार्च, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 191, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

साहित्य वाचस्पति श्रीधरजी के माथे अक्षरों का मंगल टीका

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

इतिहास में दर्ज होना मलयानिल हवाओं के उन झोंकों के समान है, जो अपनी सुरभि, सौरभ और सौष्ठव से सर्जन-विसर्जन की भाव-भूमि पर सृजन के सौम्य विधान से वासंती-समाज का आव्हान करते हैं। ऊंचे पहाड़ों के किनारों पर मलयानिल हवाओं का उद्भव जितना नीरव और निशब्द होता है, तकरीबन उतना ही खामोश होता है हमारे इर्ग-गिर्द बहते पलछिनों का इतिहास में तब्दील होते जाना...समय की इबारत बन जाना...समाज में सबक बन जाना...। मध्य प्रदेश, खासतौर से भोपाल की मीडिया बिरादरी ऐसे ही खामोश पलछिनों के रूबरू खड़ी है, जबकि हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के 76वें अधिवेशन में हमारे बीच पिछले पचास साल से सक्रिय पत्रकार विजयदत्त श्रीधरजी को साहित्य वाचस्पति सम्मान से विभूषित किया जा रहा है। साहित्य वाचस्पति हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का सर्वोच्च अलंकरण है।

इतिहास की इबारत में श्रीधरजी का नाम शरीक होने की कहानी चट्टानों से जूझती मलयानिल हवाओं की तरह ही है, जिसका कथानक निस्पृहता, नीरवता और निशब्दता है। पत्रकारिता के इतिहास के गहन अध्येता और 'भारतीय भाषा सत्याग्रह' के सूत्रधार विजयदत्त श्रीधरजी का यह सम्मान इतिहास की इबारत में मध्य प्रदेश का नाम सुर्ख करने वाला दस्तावेज है। हिंदी साहित्य सम्मेलन का यह अधिवेशन 21 से 23 मार्च 2025 को आणन्द, गुजरात में सम्पन्न हो रहा है। इन पलछिनों का एक ऐतिहासिक पहलू यह भी है कि विजयदत्त श्रीधर जी 22 मार्च को अधिवेशन में राष्ट्रभाषा परिषद के सभापति का दायित्व भी निर्वहन करेंगे।

हिन्दी साहित्य सम्मेल की गुरूता और गौरव को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने वाली इस पीठ की गंभीरता और महत्ता का अनुमान इसी से लग सकता है कि ऐसे आयोजनों की अध्यक्षता करने वाली विभूतियों की सूची में महात्मा गांधी, देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसी विभूतियों के नाम दर्ज हैं। हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की स्थापना महामना पंडित मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में 1910 में हुई थी। राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन सम्मेलन के प्रधानमंत्री थे। अध्यक्षता की नामावली में यदि मध्य प्रदेश का जिक्र करें तो प्रादेशिक विभूतियों में विष्णुदत्त शुक्ल, माधवराव सप्रे, माखनलाल चतुर्वेदी और सेठ गोविंद् दास के नाम शरीक हैं। हिंदी को बलवती बनाने के आंदोलन का इतिहास इन विभूतियों के उल्लेख के बिना कभी भी पूरा नहीं होता है।

उल्लेखनीय है कि विजयदत्त श्रीधर जी ने भी शिद्दत से भारतीय भाषा सत्याग्रह की मशाल थाम रखी है। मध्य प्रदेश में एक बड़ी टीम इस आंदोलन को आकार प्रदान कर रही है। श्रीधरजी हिंदी साहित्य सम्मेलन के आणन्द अधिवेशन में भाषा सत्याग्रह की महत्ता को लेकर एक प्रस्ताव प्रस्तुत करने वाले हैं, ताकि राष्ट्रीय स्तर पर भाषा सत्याग्रह को घनीभूत किया जा सके।

ऐतिहासिक राष्ट्रीयता से ओतप्रोत हिंदी साहित्य सम्मेलन की गुरूत्तर पृष्ठभूमि में विजयदत्त श्रीधर को प्राप्त साहित्य वाचस्पति सम्मान जैसे अलंकरण के मायनों को अलग से रेखांकित करने की आवश्यकता नहीं है। विजयदत्त श्रीधर को मिलने वाले सम्मानों की सूची में लंबी है। सन् 2012 में वो पद्मश्री से भी अलंकृत हो चुके हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरूस्कार (2011) में मिल चुका है। उनके हक में मध्य प्रदेश के महर्षि वेदव्यास सम्मान (2013) और माधवराव सप्रे राष्ट्रीय रचनात्मकता सम्मान (2015) भी दर्ज हैं। लेकिन हिंदी साहित्य सम्मेलन का यह अलंकरण सम्मानों की श्रृंखला में एक अभूतपूर्व संयोग की निर्मिति भी है।

गौरतलब है कि विजयदत्त श्रीधरजी ने भोपाल में राष्ट्रभाषा के प्रखर चिंतक, मनीषी संपादक, स्वंतत्रता सेनानी कर्मयोगी माधनराव सप्रे के कृतित्व और और अवदान को स्थायी बनाने की गरज से माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय और शोध संस्थान की स्थापना की है। गौरतलब है कि सन् 1924 में माधवराव सप्रे ने देहरादून में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। यह दुर्लभ संयोग है कि एक प्रेरणा पुरूष के रूप में सप्रेजी के गुरूत्तर कार्य को आगे बढ़ाने वाले विजयदत्त श्रीधरजी को भी उसी पीठ की अध्यक्षता करने का मान प्राप्त हुआ हैं, जो सप्रेजी को राष्ट्रभाषा की सेवा करने के कारण सौ साल पहले जो प्राप्त हुआ था। यह सम्मान हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के इतिहास को ज्ञानतीर्थ सप्रे संग्रहालय के रूप में संजोने, संवर्द्धित करने और इस विरासत को भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने के श्रीधरजी के अतुलनीय भगीरथ प्रयासों का समूचे हिंदी जगत द्वारा किया गया गौरवमयी स्वीकार भी है।

विजयदत्त श्रीधर को मिलने वाले हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का यह सर्वोच्च सम्मान विभिन्न स्तर पर अनुभूतियों का खुशनुमा समागम रचने वाला है। पत्रकारिता के इस समकालीन परिदृश्य में एक व्यक्ति के ऐतिहासिक होने की इस प्रक्रिया के मुकम्मिल होने की दास्तान कई स्तरों पर अद्भुत है। आजादी के पूर्वाद्ध में पली-बढ़ी पीढ़ी के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की प्रतिष्ठा और साहित्यिक किंवदंतियाँ गहरे आकर्षण विषय थीं। इसलिये यह सम्मान किसी भी सरकारी-गैर सरकारी सम्मान से ज्यादा गुरूत्तर और गरिमामय माना जाता है। उपलब्धि के इस ताने-बाने के रेशम में खोट निकालना मुश्किल है। सम्मान में छिपी अक्षरों की अनुंगूज शाश्वत है।

हमजोली पत्रकारों की इस समकालीन पीढ़ी में विजयदत्त श्रीधरजी का यह सम्मान शब्दों की दुनिया में पत्ते की एक कोंपल फूटने की कहानी है, पता ही नहीं चला, वो पत्ता कब पौधा बना, पेड़ बना, वट-वृक्ष बना और कब पीपल और नीम की कोपलों के साथ 'त्रिवेणी' में रूपान्तरित हो मलयानिल की तरह बहने लगा...। त्रिवेणी के उद्भव के बाद दुनियादारी की खरपतवारों की जय-पराजय की तथा-कथा के बीच एक व्यक्ति 'विजयदत्त श्रीधर', एक पत्रकार 'विजयदत्त श्रीधर' और एक संस्था 'सप्रे संग्रहालय' के रूप में पल्लवित शब्द-संसार की यह त्रिवेणी रचनाधर्मिता के अक्षर-धाम को जीवंत रखे, यही कामना है।

जज के घर से कैश मिलने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कहा यह अफवाह है?

● सुप्रीम कोर्ट ने बैठा दी जांच, कहा अफवाह न फैलाएं, फायर डिपार्टमेंट ने कैश मिलने की बात नकारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाई कोर्ट के जज यशवंत वर्मा के घर पर लगी आग के दौरान मिली बड़ी रकम के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बड़ा ऐक्शन लिया है। कोर्ट ने जज के खिलाफ इन हाउस जांच शुरू कर दी है। दिल्ली हाईकोर्ट के जज यशवंत वर्मा के घर आग और कैश मिलने के मामले में शुक्रवार शाम नया मोड़ आ गया। दिल्ली फायर ब्रिगेड चीफ अतुल गर्ग का कहना है कि जस्टिस यशवंत वर्मा के घर आग बुझाने के दौरान फायर ब्रिगेड की टीम को कोई नकदी नहीं मिली।इससे ठीक पहले सुप्रीम कोर्ट ने भी इस मामले पर बयान जारी किया। जिसमें कहा गया कि कैश मिलने की गलत सूचनाएं और अफवाहें फैलाई जा रही हैं। दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस सीजेआई संजीव खन्ना को प्राइमरी रिपोर्ट सौंपेंगे। इसके बाद आगे की कार्रवाई होगी। हाल ही में जज के दिल्ली स्थित आवास पर आग लग गई थी, जिसके बाद अधिकारियों को कथित तौर पर उनके घर में बेहिसाब नकदी मिलने की खबर थी। जब यह मामला सरकार से होते हुए सुप्रीम कोर्ट के कॉलेजियम तक पहुंचा तो जज यशवंत वर्मा का ट्रांसफर इलाहाबाद हाई कोर्ट कर दिया गया। इस मामले के बाद कई वरिष्ठ वकीलों ने जज के खिलाफ जांच की मांग की थी। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष आदिश

अग्रवाल ने भी कहा था कि कॉलेजियम को जज यशवंत वर्मा के खिलाफ लगे आरोपों की गहन जांच करनी चाहिए और इन हाउस इन्क्वायरी भी की जानी चाहिए। उन्होंने कहा था कि ट्रांसफर करना एक सामान्य बात है, कलंक नहीं है। मैं यह नहीं कह रहा कि भ्रष्टाचार ही होगा, क्योंकि जब किसी को कभी-कभी अनुकूल परिणाम नहीं मिल रहे होते हैं, तो वे साजिश भी रच सकते हैं। ऐसे में कॉलेजियम को पूरी जांच करनी चाहिए। त्वरित कार्रवाई करते हुए, भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाले कॉलेजियम ने एक तत्काल बैठक की, जिसमें जस्टिस वर्मा को इलाहाबाद हाई कोर्ट में ट्रांसफर करने की प्रक्रिया शुरू करने की बात कही गई, जो कि उनका मूल हाई कोर्ट है। ऐसा कहा गया है कि प्रारंभिक जांच शुरू करना केवल एक कदम था और कॉलेजियम इस संबंध में आगे की कार्रवाई कर सकता है। जस्टिस वर्मा का प्रस्तावित तबादला केंद्र द्वारा कॉलेजियम की सिफारिश स्वीकार किए जाने के बाद लागू हो सकता है।

सुप्रभात

उसको सॉरी, सॉरी कह
रिश्ते की लाचारी कह
मुश्किल साथ निभाना हो
साथ को उस बीमारी कह
दूर दगाबाजों से रह
और उसको बेदारी कह
कम-क़द्री बर्दाश्त न कर
फख्र से तू खुद्दारी कह
दौलत है पर इश्क़ नहीं
इसको बस नादारी कह।

– मोनिका सिंह

आतंकवाद, नक्सलवाद और उग्रवाद देश के लिए हैं नासूर

● शाह बोले-ये हमें विरासत में मिले,हमने इसका मुकाबला किया ● 10 साल में बहुत कुछ बदला,मोदी सरकार के गिनाए बड़े काम ● आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई,की सर्जिकल स्ट्राइक

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में मोदी सरकार के 10 सालों के बड़े काम गिनाए। इस दौरान उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने पिछले 10 साल में तीन बड़े नासूरों को उखाड़ फेंका। ये तीन नासूर थे जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की समस्या, वामपंथी उग्रवाद और उत्तर पूर्व का उग्रवाद। गृहमंत्री ने आगे कहा, 2014 में सरकार बनाते समय हम कई सारे लेगेसी इश्यू मिले थे। अगर तीन बड़े नासूरों की बात की जाए तो उनके कारण देश की सुरक्षा, विकास और सार्वभौमिकता खतरे में आ गई थी। ये तीनों नासूर पिछले चार दशकों से देश की सुरक्षा-व्यवस्था में खलल डालते रहे। इनके कारण ही विकास की गति को अवरुद्ध हो रही थी। वामपंथी उग्रवाद की बात करते हुए अमित शाह ने कहा,ये तो तिरुपति से पशुपतिनाथ तक एक करने का सपना देखते थे. तीनों समस्याओं को एक साथ गिना जाए तो चार दशक में इनके कारण देश के 92 हजार नागरिक मारे गए। मोदी सरकार आने से पहले तक इनके उन्मूलन को कोशिश कभी नहीं की गई। इस काम को मोदी सरकार आने के बाद किया गया। आतंकियों का जुलूस नहीं निकलता हमने कई ऐसे कदम उठाए जिसकी वजह से आतंकियों से भारतीय बच्चों के जुड़ने की संख्या करीब-करीब शून्य हो गई है। आतंकी जब मारे जाते थे, बड़ा जुलूस निकलता था। आज भी आतंकी मारे जाते हैं और जहां मारे जाते हैं, वहीं दफना दिए जाते हैं। प्रदर्शन करने वाले जेल में घर का कोई आतंकी बन जाता था और परिवार के लोग आराम से सरकारी नौकरी करते थे। हमने उनको निकालने का काम किया। आतंकियों के परिवार के लोग बार काउंसिल में बैठे थे और प्रदर्शन होने लगता था। आज वो श्रीनगर या दिल्ली की जेल में हैं।

सेना को मिलेंगी 307 हॉवित्जर तोपें, अब होगी और ताकतवर

● केंद्र सरकार की मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने सेना की डिफेंस कैपसिटी बढ़ाने के लिए गुरुवार को दो बड़े फैसले लिए हैं। केंद्र सरकार ने 7,000 करोड़ की लागत से 307 एडवांस तोपें खरीदने को मंजूरी दे दी है, जिन्हें पाकिस्तान और चीन बॉर्डर पर तैनात किया जाएगा। साथ ही, रक्षा मंत्रालय ने 54,000 करोड़ की सैन्य खरीद को हरी झंडी दी। इसमें एयरबोर्न अर्ली वार्निंग सिस्टम, टी-90 टैंकों के नए इंजन और नौसेना के लिए वरुणास्त्र टॉरपीडो शामिल हैं। भारत में बनी, दुश्मनों पर भारी जैसा कि इसके नाम एडीएजीएस से जाहिर है कि यह टोड गन यानी ऐसी तोप है जिसे ट्रक से खींचा जाता है। हालांकि, यह गोला दागने के बाद बोफोर्स की तरह कुछ दूर खुद ही जा सकती है। इस तोप का कैलिबर 155 एमएम है। मतलब यह कि इस आधुनिक तोप से 155 एमएम वाले गोले दागे जा सकते हैं। एडीएजीएस को हॉवित्जर भी कहा जाता है। हॉवित्जर यानी छोटी तोपें।

औद्योगिक विकास में चंबल क्षेत्र लिख रहा है सुनहरा अध्याय : मुख्यमंत्री

सीएम ने मालनपुर में एक हजार करोड़ रूपए लागत की एलिक्सर इंडस्ट्रीज की आधुनिक मेगा इकाई का किया भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रदेश के औद्योगिक विकास का जो सपना देखा है, चंबल क्षेत्र उसमें सुनहरा अध्याय लिख रहा है। चंबल की भूमि उपजाऊ है, कमाऊ है, साथ ही टिकाऊ भी है। चंबल जैसा टिकाऊ जज्बा और कहीं देखने को नहीं मिलता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शुक्रवार को भिण्ड जिले के मालनपुर में एक हजार करोड़ रूपए की लागत से एलिक्सर इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड की आधुनिक मेगा इकाई का भूमि-पूजन करते हुए यह बात कही। इस मौके पर रेडीमेड गारमेंट ग्वालियर की 7 इकाईयों और मुरैना जिले के औद्योगिक क्षेत्र पिपरसेवा की 11 इकाईयों का भी भूमिपूजन किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि चंबल अब विकास के नाम से पहचाना जाता है। इस क्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सोच और प्रदेश सरकार के संकल्प के कारण अनेक औद्योगिक इकाईयां प्रारंभ हुई हैं। इन औद्योगिक इकाईयों के प्रारंभ होने से बेरोजगार युवकों को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। कार्यक्रम में प्रदेश के पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री श्री प्रहलाद पटेल, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कामना सिंह भदौरिया, राष्ट्रीय अनुसूचित जातिआयोग के अध्यक्ष श्री लाल सिंह आर्य, विधायक गोहद श्री केशव देसाई, लहार विधायक श्री अम्बरीश शर्मा, श्री देवेन्द्र सिंह नरवरिया एवं एलिक्सर इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमेन श्री अरुण गोयल सहित क्षेत्रीय जन-प्रतिनिधिगण एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर कार्यक्रम में वर्चुअलउपस्थित रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिये हर संभव कार्य किया जा रहा है। इन्वेस्टर्स समिट व रीजनल इंडस्ट्रीज कॉन्क्लेव से न केवल देश बल्कि विदेशों से भी इन्वेस्टर्स को आमंत्रित करने का कार्य किया गया है।

मुख्यमंत्री ने नवीन उद्योगपतियों से किया वर्चुअल संवाद

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मालनपुर में आयोजित समारोह से ग्वालियर रेडीमेड गारमेंट पार्क में स्थापित की जा रही नई इकाईयों के संचालकों और मुरैना जिले के पिपरसेवा में स्थापित की जा रही नई इकाईयों के संचालकों से भी वर्चुअली संवाद किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्वालियर रेडीमेड पार्क से श्री अमित जैन, श्री मोहित शिवहरे, हर्षित बंसल एवं श्री संजय खण्डेलवाल से नई इकाइयों के संचालन के संबंध में चर्चा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी को नई इकाई प्रारंभ करने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि नई इकाईयों के माध्यम से बेहतर कार्य कर प्रदेश के विकास में भागीदार बनें और जरूरतमंदों को रोजगार उपलब्ध कराने की दिशा में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करें।

टोल पर नहीं लगेगी लाइन, अब बनेगा सालाना पास

● नया सिस्टम लाने की तैयारी,नितिन गडकरी का है प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे पर टोल टैक्स के लिए फास्टैग की व्यवस्था लागू होने के बाद भी लंबी लाइनें देखी जाती हैं। अब इस समस्या से निजात के लिए केंद्र सरकार सालाना पास बनाने पर विचार कर रही है। लोकसभा में एक सवाल के जवाब में सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि इससे यात्रियों का समय बचेगा और बेवजह उन्हें लंबी लाइनों में नहीं खड़ा होना होगा। इसके अलावा उन्होंने कहा कि कुछ जगहों पर हमले सैटलाइट आधारित बैरियर फ्री टोल व्यवस्था लागू

करना शुरू किया है। अभी यह पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर लागू है। यदि यह योजना कामयाब रही तो इसे भविष्य में विस्तार देने पर बात होगी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि अभी घरौंदा, चोरयासी, नेमिली और द्वारका एक्सप्रेसवे पर अडवांस टोल व्यवस्था लागू हुई है। यहां पर ऑटोमेटिक नंबर प्लेट रिकॉग्निशन लागू है। इससे लोगों को बिना रुके ही टोल से निकलने की सुविधा मिल रही है और फीस भी कट पा रही है। उन्होंने कहा कि हाईवेज पर जो टोल फीस ली जाती है, उसकी जानकारी प्लाजा पर विस्तार से दी गई है। इसके अलावा नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया की वेबसाइट पर भी यूजर फीस की जानकारी दी गई है। यह सवाल सांसद राजकुमार चाहर ने पूछा था, जिसके जवाब में नितिन गडकरी ने पूरी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि फिलहाल सैटलाइट आधारित टोल व्यवस्था की ओर बढ़ने की कोशिश है, लेकिन उसमें समय लगेगा। इसकी वजह यह है कि इसके लिए अतिरिक्त सैटेलाइट की जरूरत होगी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 22 °c | न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 22 मार्च 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भारतीय युवा देशभक्त, लेकिन राजनीतिक दलों पर भरोसा नहीं

● 29 फीसदी युवा पॉलिटिक्स से पूरी तरह दूर, 81 फीसदी की पहली पहचान भारतीय होना

नई दिल्ली (एजेंसी)। वॉयस फॉर इन्क्लूजन, बिलॉन्गिंग, एंड एम्पावरमेंट और प्रोजेक्ट पोटेंशियल' की रिपोर्ट के मुताबिक, 81 फीसदी भारतीय युवाओं में देशप्रेम की भावना मजबूत है। मतलब वे खुद को पहले भारतीय मानते हैं, लेकिन 31 फीसदी व्यक्तिगत पहचान को ज्यादा महत्व देते हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में मतदान न करने की वजह 43 फीसदी युवाओं ने घर से दूर होना बताया है। जबकि 18 फीसदी ने कहा कि उन्हें राजनीतिक दलों पर भरोसा नहीं है। रिपोर्ट में सामने आया कि भारतीय युवा राजनीति से धीरे-धीरे दूर हो रहे हैं। देश में 29 फीसदी युवा पॉलिटिक्स से पूरी तरह दूरी बनाए हुए

हैं। 26 फीसदी किसी दल से जुड़े बिना राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेते हैं। 11 फीसदी ही किसी दल के सदस्य हैं। एजेंसी की ओर से तैयार की गई यह रिपोर्ट 4,972 युवाओं के सर्वे के आधार पर तैयार की गई है। यह सर्वे जून-अगस्त 2024 के बीच किया गया है। एनजीओ वाईएलएसी के को फाउंडर रोहित कुमार का मानना है कि युवाओं की भागीदारी को संस्थागत समर्थन की जरूरत है। युवाओं की आकांक्षाओं पर खरा उतरना सरकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। हमें ऐसे मंच तैयार करने होंगे जहां युवा सिर्फ सहभागी ही नहीं, बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा बन सके। 49 फीसदी युवा समाजसेवी उद्यम शुरू करना चाहते हैं, लेकिन 58 को फंडिंग और 39 फीसदी को सही मार्गदर्शन की कमी है।

आग से झुलसी हवलदार की बेटी, मौत

मच्छर अगरबत्ती जलाते समय पास रखे तारपीन से भभकी आग

हनुमानगंज इलाके में 24 साल की युवती आग से झुलस गई। इलाज के दौरान शुक्रवार सुबह उसकी मौत हो गई। युवती के पिता मप्र पुलिस में हवलदार हैं। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। मौत से पहले पुलिस ने उसके बयान दर्ज कर लिए थे।

थाना प्रभारी अवधेश सिंह भदौरिया ने बताया कि घटना 16 मार्च की है। पूनम सूर्यवंशी (24) आग से गंभीर रूप से झुलस गई थी।

गुरुवार को पूनम ने पुलिस को दिए

बयान में बताया कि वह मच्छर अगरबत्ती (कॉइल) जला रही थी। वहीं पास में तारपीन का तेल रखा था। कॉइल जलाते समय तारपीन का तेल गिरने से आग भड़क गई और वह आग की चपेट में आ गई। उसकी चीखें सुन परिजन कमरे में पहुंचे और आग बुझा कर उसे अस्पताल ले गए। यहां शुक्रवार सुबह युवती ने दम तोड़ दिया।

पूनम बैंक में जॉब करती थी। उसके पिता अशोका गार्डन थाने में हवलदार हैं। हालांकि पुलिस अन्य बिंदुओं पर भी मामले की जांच कर रही है।

चीन के खिलाफ अमेरिका का बड़ा ऐक्शन, झटका

● तेल रिफाइनरी पर लगाया प्रतिबंध भारत को रहना होगा सतर्क

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका ने ईरान पर दबाव बढ़ाते हुए चीन की एक तेल रिफाइनरी पर प्रतिबंध लगाया है। यह रिफाइनरी हूतियों से जुड़े जहाजों से लगभग 50 करोड़ डॉलर का ईरानी तेल खरीदती थी। अमेरिकी वित्त मंत्रालय ने गुरुवार को यह ऐलान किया। चीन ने इस कार्रवाई की कड़ी आलोचना की है। उसने कहा है कि अमेरिका चीन और ईरान के बीच सामान्य व्यापार में बाधा डाल रहा है। अमेरिका की यह कार्रवाई दिखाती है कि ग्लोबल एनर्जी मार्केट कितने जटिल रूप से भू-राजनीतिक संघर्षों से जुड़े हुए हैं। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए आयात पर निर्भर है। उसे इन जटिलताओं को सावधानी से देखना होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर अधिकतम दबाव बनाने की नीति फिर से शुरू की है।

पंजाब सरकार की मीटिंग से किसानों का किनारा

● विस के बजट सत्र में कांग्रेसियों ने कर दिया हंगामा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा-पंजाब के शंभू और खनौरी बॉर्डर से किसानों को जबरन हटाने को लेकर किसान पंजाब सरकार पर भड़के हुए हैं। पंजाब सरकार ने संयुक्त किसान मोर्चा के पंजाब चैप्टर और भारतीय किसान यूनियन (उगराहां) की चंडीगढ़ में शाम 7 बजे मीटिंग बुलाई गई थी। मगर, उगराहां के साथ साथ एसकेएम ने भी सरकार से बातचीत करने से मना कर दिया। एसकेएम

ने तो 28 मार्च को जबरी विरोध दिवस मनाने की घोषणा भी कर दी है, जिसके तहत राज्य के डीसी (डिप्टी कमिश्नर) को ज्ञापन सौंपे जाएंगे। उधर बीकेयू उगराहां के प्रधान जोगिंदर उगराहां ने कहा कि हमें यह नहीं पता कि शंभू-खनौरी बॉर्डर से कितने किसान हिरासत में लिए, वह कहां हैं। ऐसी स्थिति में हम मीटिंग नहीं कर सकते।

यूपी में उपद्रव नहीं अब उत्सव मनाए जा रहे हैं

● योगी बोले-सत्ता भी गंवानी पड़ी तो समस्या नहीं

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या पहुंचे सीएम योगी ने कहा कि हम सत्ता के लिए नहीं आए हैं। राम मंदिर के लिए सत्ता भी गंवानी पड़ी तो कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। यूपी में अब उपद्रव नहीं उत्सव मनाए जा रहे। जिसने राम पर लिखा वो महान हुआ। वह शुक्रवार सुबह 10

बजे हेलीकॉप्टर से रामकथा पार्क पहुंचे। भाजपा के नेताओं और गोसाईगंज से सपा के बागी विधायक अभय सिंह ने योगी का स्वागत किया। इसके बाद सीएम सीधे हनुमानगढ़ी मंदिर पहुंचे। यहां पूजा-अर्चना के बाद उन्होंने रामलला के दर्शन किए। करीब 20 मिनट तक निर्माण कार्यों का जायजा लिया। योगी यहां से कला और साहित्य महोत्सव में पहुंचे।

हमें भाषा विवाद आपस में मिलकर सुलझाना होगा

● बोला आरएसएस, मणिपुर के हालात पर जताई चिंता ● संघ के मंच पर मनमोहन सिंह को दी गई श्रद्धांजलि

बेंगलुरु (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की 3 दिन की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा शुक्रवार को बेंगलुरु में शुरू हुई। बैठक के शुरुआत में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, तबला वादक जाकिर हुसैन, प्रीतीश नंदी सहित संघ के दिवंगत कार्यकर्ताओं को श्रद्धांजलि दी गई। संघ के सह सरकार्यवाह मुकुंद सीआर ने मणिपुर की स्थिति को लेकर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि मणिपुर बीते 20 महीनों से बुरे दौर से गुजर रहा है, लेकिन केंद्र सरकार के कुछ राजनीतिक और प्रशासनिक फैसलों के बाद अब उम्मीद की किरण नजर आ रही है। हालांकि, राज्य में हालात सामान्य होने में अभी लंबा समय लगेगा। उन्होंने तमिलनाडु और केंद्र सरकार के बीच चल रहे

भाषा और परिसीमन विवाद पर कहा- कुछ ताकतें हैं, जो देश की एकता को चुनौती दे रही हैं। वह उत्तर और दक्षिण के बीच बहस को बढ़ावा दे रही हैं। चाहे वह परिसीमन की डिबेट हो या भाषा की डिबेट। उन्होंने कहा कि ये ज्यादातर पॉलिटिकली मोटिवेटेड हैं। उन्होंने कहा कि सभी सोशल ग्रुप को साथ आना होगा। यह सही नहीं है कि हम आपस में लड़ें। अगर कोई दिक्कत है तो उसे मिलकर, सद्भावना से हल किया जा सकता है। हमारे स्वयंसेवक और अलग अलग विचार परिवार के लोग सद्भावना की पूरी कोशिश कर रहे हैं, खासकर दक्षिण भारत के राज्यों में। मातृभाषा को प्राथमिकता, इंग्लिश को बताया जरूरी मुकुंद सीआर ने कहा कि संघ का हमेशा जोर यही रहा है कि मातृभाषा में ही पढ़ाई हो। सिर्फ पढ़ाई ही नहीं, बल्कि जहां भी संभव हो मातृभाषा का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दो भाषा या तीन भाषा फॉर्मूला को लेकर संघ का कोई रिजॉल्यूशन नहीं है, लेकिन मातृभाषा को लेकर ऐक्टिव है।

बदर खान को मिली बड़ी राहत, डिपोर्टेशन पर रोक

● अमेरिकी कोर्ट ने पक्ष में सुनाया फैसला, वकील बोले- फिलिस्तीनी पत्नी के कारण निशाने पर

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में भारतीय रिसर्चर बदर खान सूरी के डिपोर्टेशन (देश से निकाले जाने) पर अमेरिकी अदालत ने रोक लगा दी है। वर्जीनिया कोर्ट की जज पेट्रीसिया टोलिवर गिल्स ने आदेश दिया कि सूरी को तब तक अमेरिका से नहीं निकाला जाएगा, जब तक अदालत इससे जुड़े आदेश जारी नहीं करती। अमेरिका के इमिग्रेशन अधिकारियों ने सोमवार रात भारतीय छात्र बदर खान सूरी को वर्जीनिया से गिरफ्तार किया था। सूरी पर अमेरिका में हमास के समर्थन में प्रोपेगैंडा फैलाने और संगठन से जुड़ी आतंकी से रिश्ता रखने का आरोप है। सूरी स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत अमेरिका की जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी का छात्र है। वह सेंटर फॉर मुस्लिम-क्रिश्चियन अंडरस्टैंडिंग में पोस्ट डॉक्टोरल फैलो के रूप में

पढ़ाई कर रहा है। वकील बोले- सूरी की पत्नी फिलिस्तीनी, इसलिए निशाना बने बदर खान सूरी के वकील ने उन पर लगे आरोपों को खारिज किया है। वकील ने अदालत में दायर एक याचिका में कहा कि सूरी को निशाना इसलिए बनाया जा रहा है, क्योंकि उनकी पत्नी एक फिलिस्तीनी हैं। उनकी गिरफ्तारी का मकसद फिलिस्तीनी अधिकारों का समर्थन करने वाले लोगों की आवाज को दबाना है। वकील ने अदालत में दाखिल किए गए दस्तावेज में कहा कि न तो विदेश मंत्री मार्को रुबियो और न ही किसी अन्य सरकारी अधिकारी ने आरोप लगाया है कि सूरी ने कोई अपराध किया है या वास्तव में कोई कानून तोड़ा है। उन्होंने अपने विचार रखे हैं, जो कि पूरी तरह से संवैधानिक हैं।

हिन्दुओं के अलावा कोई नहीं कर सकेगा तिरुपति मंदिर में काम

● आन्ध्र सीएम चंद्रबाबू नायडू बोले-दूसरों धर्म के लोगों को हटाओ

तिरुपति (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने कहा है कि तिरुमाला-तिरुपति देवस्थानम यानी मशहूर तिरुपति मंदिर में केवल हिंदुओं को ही काम पर रखा जाना चाहिए। शुक्रवार को मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद नायडू ने कहा कि अगर दूसरे समुदाय के लोग मौजूदा समय में वहां काम कर रहे हैं, तो उनकी भावनाओं का अनादर किए बिना उन्हें दूसरी जगहों पर शिफ्ट किया जाएगा। नायडू ने कहा, तिरुमाला मंदिर में केवल हिंदुओं को ही काम पर रखा जाना चाहिए। अगर दूसरे धर्म के लोग वर्तमान में काम कर रहे हैं, तो उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाए बिना उन्हें दूसरी जगहों पर बसाया जाएगा। मुख्यमंत्री नायडू ने इसके साथ ही अपनी उस भव्य योजना भी लोगों से साझा की, जिसके तहत देशभर के सभी राज्यों की राजधानियों में वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर बनाने की योजना है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में भगवान वेंकटेश्वर की संपत्तियों की सुरक्षा के लिए पवित्र धागा

बांधा गया है। उन्होंने कहा कि कई भक्त विदेशों में भी ऐसे मंदिर स्थापित किए जाने की इच्छा रखते हैं। मंदिर के चारों तरफ यानी तिरुमाला की पहाड़ियों पर किसी भी तरह की कॉमर्शियल एक्टिविटीज की चर्चा करते हुए नायडू ने कहा कि पिछली सरकार ने मंदिर के निकट ही 35.32 एकड़ भूमि पर मुमताज होटल की स्थापना की मंजूरी दी थी जिसे उनकी सरकार ने रद्द कर दिया है। नायडू ने कहा कि तिरुमाला की सात पहाड़ियों के निकट किसी तरह की व्यवसायिक गतिविधि नहीं होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि इस क्षेत्र में किसी भी प्राइवेट पार्टी को व्यवसाय चलाने की इजाजत नहीं दी जाएगी। उन्होंने कहा कि खान-पान सेवा के लिए जिन्हें भी व्यवसाय की मंजूरी मिली हुई है, वे केवल शाकाहारी व्यंजन ही परोसेंगे। नायडू ने परिवार के सदस्यों के साथ वेंकटेश्वर मंदिर में पूजा की।

चुनाव से पहले 'राष्ट्रगान' पर घिर गए बिहार सीएम

● एक तरफ राबड़ी तो दूसरी ओर तेजस्वी ने खोला नीतिश के खिलाफ मोर्चा

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा में शुक्रवार को नीतिश के राष्ट्रगान के अपमान करने के मुद्दे पर जोरदार हंगामा होता रहा। सदन के अंदर और बाहर विपक्ष ने पोस्टर लेकर प्रदर्शन किया। कार्यवाही शुरू होने से पहले आरजेडी ने सीएम नीतिश कुमार से इस्तीफे की मांग की। सदन के बाहर पोर्टिको में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव भी हाथ में बैनर लिए खड़े दिखे।

विपक्ष के हंगामे के कारण आज सिर्फ 22 मिनट ही सदन की कार्यवाही चल पाई। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कहा- बिहार के लिए कल काल दिवस था। पीएम मोदी के लाडले सीएम ने राष्ट्रगान का अपमान किया है। लाडले सीएम पर पीएम क्या कहेंगे। भारत माता की जय करने वाले बीजेपी के दोनों डिप्टी सीएम गायब हैं। कल हम सब का सिर शर्म से झुक गया है। इंडिया की राजनीति में पहली ऐसी घटना है,जहां राष्ट्रगान

का अपमान हुआ है। पीएम मोदी ने एक ट्वीट तक नहीं किया। सीएम नीतिश कुमार को रिटायरमेंट ले लेना चाहिए। राष्ट्रगान को अपमान करने वाले को तीन साल की सजा होती है। विधान परिषद में भी राष्ट्रगान के अपमान पर हंगामा हुआ। कार्यवाही के दौरान राबड़ी देवी का माइक बंद हो गया। उन्होंने माइक चालू कराने की मांग की। राबड़ी ने कहा, अगर मुख्यमंत्री नीतिश कुमार का दिमाग खराब है, तो उनको गद्दी छोड़नी चाहिए और अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाना चाहिए। बेटा नहीं बनता तो किसी दूसरे अपने को कुर्सी सौंप दें।

कर्नाटक में पास हुआ मुस्लिम कोटा विधानसभा में बवाल

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक विधानसभा में शुक्रवार को जबरदस्त हंगामा हुआ। हालांकि, इस गहमागहमी के बीच अल्पसंख्यकों के लिए सरकारी ठेकों में चार फीसदी का आरक्षण देने वाला बिल पास हो गया है। इसके साथ ही मंत्रियों और विधायकों के वेतन से जुड़ा बिल भी पारित हो गया है। सदन में जारी हंगामे के बीच विधानसभा की कार्यवाही को 01.30 बजे तक स्थगित कर दी गई। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, मुख्यमंत्री की सैलरी को 75,000 रुपये से बढ़कर 1.5 लाख रुपये करने का प्रस्ताव है। वहीं मंत्रियों की सैलरी 60,000 रुपये से बढ़कर 1.25 लाख रुपये कर दिया जाएगा। बताया जा रहा है कि विधायकों की सैलरी 40,000 से बढ़ाकर 80,000 रुपये करने का प्रस्ताव है। भाजपा विधायकों ने चार फीसदी वाले कोटा विधेयक की प्रतियों फाड़कर उसे स्पीकर की तरफ फेंकी। बीजेपी इस विधेयक को 'असंवैधानिक' बताकर इसका विरोध कर रही है। पार्टी का कहना है कि वो इस विधेयक को कानूनी रूप से चुनौती देगी। बीजेपी विधेयक को पारित किए जाने के खिलाफ है।

● श्रीलंकाई समुद्र में ड्रैगन की नई साजिश

भारत के खिलाफ फिर से चलने लगा चाल, श्रीलंकाई मछुआरों को भड़काया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के खिलाफ चीन की चालबाजी एक बार फिर सामने आई है। इस बार ड्रैगन श्रीलंका में साजिश रचकर भारतीय मछुआरों को निशाना बनाने की

कोशिश कर रहा है। अपने षडयंत्र को अंजाम देने के लिए चीन के अधिकारी बकायदा श्रीलंका के मछुआरों से मुलाकात कर रहे हैं। सीधे तौर पर यह चीन की श्रीलंका में दबदबा बढ़ाने की कोशिश है। दरअसल, चीन इन दिनों उत्तरी और पूर्वी श्रीलंका के अशांत पानी में मछली पकड़ रहा है, लेकिन इसके साथ वह श्रीलंका के स्थायी मछुआरों को भारत के खिलाफ भड़काने की साजिश भी रच रहा है। चीन यह भी नहीं सोच रहा है कि इससे हिंद महासागर में भारत के हितों पर असर पड़ सकता है। चीन की इन चालबाजियों का ही असर है कि अब श्रीलंका के उत्तरी द्वीपों में मछुआरों ने भारत पर अतिक्रमण का आरोप लगाना शुरू कर दिया है। चीन की बातों में आकर ये मछुआरे अब जाफना शहर के मत्स्य विभाग के दफ्तर के सामने विरोध-प्रदर्शन करने की प्लानिंग कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक चीन के सीनियर अधिकारियों ने कुछ समय पहले श्रीलंका के उत्तरी द्वीपों के मछुआरों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की थी। उन्होंने मछुआरों से उनकी शिकायतें पूछीं। एक श्रीलंकाई एक्सपर्ट के मुताबिक चीन ने यह कदम उत्तरी क्षेत्र के मछुआरों को भारत के खिलाफ भड़काने के लिए उठाया है। चीन ऐसा इसलिए भी कर रहा है, क्योंकि उत्तरी और पूर्वी श्रीलंका में भारत के कई प्रोजेक्ट्स हैं, जो रणनीतिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण है। चीन इन क्षेत्रों के स्थानीय लोगों में भारत के खिलाफ फूट डालने की पूरी कोशिश कर रहा है। इस घटनाक्रम के बीच मछुआरा संघ ने मीटिंग की है।

शशि प्रभा शाक्य की काव्य कृति 'काव्य अमृत' का लोकार्पण आज

भोपाल। 'काव्य अमृत' का समारोहपूर्वक लोकार्पण 22 मार्च को होगा। इस काव्य कृति की रचियता वरिष्ठ कवयित्री, शिक्षाविद्, पूर्व प्रधानाचार्य व समाजसेवी शशि प्रभा शाक्य हैं। उनकी पुस्तक 'निर्दलीय प्रकाशन' ने प्रकाशित की है। आयोजन शनिवार को सुबह दस बजे शिवाजी नगर स्थित दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय में आरंभ होगा। समारोह सूत्रधार कैलाश आदमी ने बताया कि वरिष्ठ साहित्यकार राजेंद्र शर्मा 'अक्षर' व प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ कमलदास शाक्य कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे, जबकि नामचीन जनवादी साहित्यकार रामप्रकाश त्रिपाठी मुख्य अतिथि रहेंगे। वहीं माधवराव सप्रे संग्रहालय के अध्यक्ष शिवकुमार अवस्थी व गांधी भवन न्यास के सचिव दयाराम नामदेव विशिष्ट अतिथि होंगे। इस अवसर पर 'काव्य अमृत' पुस्तक की समीक्षा ज्येष्ठ साहित्यकार डॉ. सीमा अग्रवाल, श्रीमती मधुबाला पांडे एवं कृष्णदेव चतुर्वेदी प्रस्तुत करेंगे, जबकि उत्सव नायिका शशि प्रभा शाक्य अपनी पुस्तक से चुनिंदा रचनाओं का पाठ करेंगी। कार्यक्रम में राजधानी के अनेक चुनिंदा साहित्य मनीषी, शिक्षाविद्, समाजसेवी, धर्मसेवी व अन्य सृजनधर्मी शिरकत करेंगे। आरंभ में मशहूर गीतकार डॉ. लता स्वरांजलि सरस्वती वंदना करेंगी और हरिओम शाक्य मंगलगान गाएंगे, जबकि आभार मातृ-पितृ भक्त साहित्यकार राजकुमारी चौकसे मानेंगी।

प्रदेश में स्वच्छ सर्वेक्षण-2024 के जमीनी सत्यापन की प्रक्रिया जारी

भोपाल(नप्र)। स्वच्छता एक संकल्प है, जिसे मध्यप्रदेश में एक जन आंदोलन बनाया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छता संकल्प को प्रदेश ने आत्मसात किया है। स्वच्छता आंदोलन के परिणाम दिखाई देने लगे हैं। देश और प्रदेश में हर वर्ष की तरह दुनिया की सबसे बड़ी स्वच्छता प्रतियोगिता स्वच्छ सर्वेक्षण-2024 जारी है।

स्वच्छ सर्वेक्षण में प्रदेश के शहर बहुत गंभीरता के साथ अपनी भागीदारी कर रहे हैं। स्वच्छ सर्वेक्षण के दौरान केन्द्र सरकार की सर्वेक्षण टीमें शहरों में स्वच्छता व्यवस्थाओं का जायजा लेती हैं। इसमें स्वच्छता की आधारभूत तैयारियों का परीक्षण, खुले में शौच से मुक्ति और मल-जल का निस्तारण (ओडीएफ++ और वॉटर+) कचरा मुक्त शहरों के लिए स्टार रेटिंग (1,3 5 व 7 स्टार रेटिंग) सहित कुल तीन परीक्षण किए जाते हैं। अभी प्रदेश में आधारभूत तैयारियों का परीक्षण जारी है, जिसमें 269 शहरों में परीक्षण पूर्ण हो चुका है, शेष शहरों के परीक्षण के लिये टीमें पहुँच रही हैं। इसके बाद ओडीएफ++ और स्टार रेटिंग के परीक्षण शुरू होंगे।

मध्यप्रदेश के नगरीय निकाय वर्ष भर शहरी स्वच्छता को सँवारने में जुटे रहते हैं। प्रदेश में नियमित कचरा संग्रहण, परिवहन और निपटान के लिए प्रभावी तंत्र विकसित किया गया है। इससे शहरों की स्वच्छता सुनिश्चित की जा रही है। इसके साथ खुले में शौच पर प्रतिबंध को सफल बनाने के बाद शहरों को ओडीएफ़++ और वॉटर+ प्रमाण-पत्र दिलाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग प्रदेश के नागरिकों, युवाओं और जन-प्रतिनिधियों से शहरों को स्वच्छ बनाने में सहयोग की निरंतर अपील कर रहा है। शहरों का बदला हुआ स्वरूप शासन के प्रयासों की सफलता को प्रदर्शित कर रहा है।

पति पर चढ़ा कार का पहिया, मौत

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर के गढ़ीमलहरा गांव में पत्नी के इलाज के लिए डॉक्टर के पास गए एक व्यक्ति की अपने ही कार से नीचे कुचला कर मौत हो गई। घटना गुरुवार रात करीब 3 बजे की है।

जानकारी के अनुसार वार्ड नंबर 8 गढ़ीमलहरा निवासी राघवेंद्र सिंह सेंगर (40) अपनी पत्नी ज्योति सेंगर को पेट दर्द की शिकायत पर टवेरा कार से लुगासी रोड स्थित एक प्राइवेट डॉक्टर के पास ले गए थे।

कार रोकने की कोशिश में पहिए के नीचे आए- डॉक्टर को बुलाने के लिए उन्होंने कार चालू छोड़कर क्लीनिक का दरवाजा खटखटाया। कार ढलान पर खड़ी थी और उसमें उनकी पत्नी बैठी थीं। इसी दौरान कार लुढ़कने लगी। राघवेंद्र ने दौड़कर कार को रोकने की कोशिश की, लेकिन उनका पैर फिसल गया और वे कार के पहिए के नीचे आ गए।

सीने के ऊपर से निकली गाड़ी, मौत

घटना के दौरान कार का पहिया उनके सीने के ऊपर से निकल गया। परिजन तुरंत राघवेंद्र को जिला अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। थाना प्रभारी सुरभि शर्मा के अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर मामले की जांच की जाएगी।

बेड पर मृत मिली डॉक्टर, हाथ पर इंजेक्शन का निशान

भोपाल में कमरे का दरवाजा तोड़कर निकाली बॉडी; चार महीने पहले हुई थी शादी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक महिला डॉक्टर की संदिग्ध हालत में मौत हो गई। उसकी लाश घर के एक कमरे में बेड पर पड़ी मिली। हाथ पर इंजेक्शन के निशान मिले हैं। पति उसे अस्पताल लेकर पहुंचा। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

घटना शाहपुरा थाना क्षेत्र में शुक्रवार सुबह की है। डॉ. रिचा पांडे (25) मूल रूप से लखनऊ की रहने वाली थी। उनकी शादी चार महीने पहले सतना के रहने वाले डॉ. अभिजीत पांडे से हुई थी। अभिजीत डेन्टिस्ट हैं। उनका एमपी नगर में प्राइवेट क्लिनिक है। दंपती शाहपुरा में एक कवर्ड कैंपस में रहते थे।इस मामले में परिजन ने हत्या की आशंका जताई है। फिलहाल पुलिस ने हर एंगल से मामले की जांच शुरू कर दी है।

एनेस्थीसिया के इंजेक्शन लेने की आशंका- एएसआई महेंद्र चौकसे ने बताया कि बंसल अस्पताल से सूचना मिली थी। शुरुआती जांच में डॉ. रिचा के हाथ में इंजेक्शन लगाने के निशान मिले हैं। मामला संदिग्ध है। एनेस्थीसिया के इंजेक्शन लेकर सुसाइड करने की आशंका है। परिजनों से पूछताछ के साथ-साथ अन्य एंगल पर भी जांच की जा रही है। मौत की असली वजह पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद स्पष्ट होगी। डॉ. रिचा के हाथ पर इंजेक्शन लगाने के निशान मिले हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पति बोले- रात में साथ में डिनर किया- पति अभिजीत पांडे ने बताया कि बैक पैन की शिकायत के चलते वह अलग कमरे में सोए थे। इससे पहले रात में दोनों ने साथ डिनर किया था। शुक्रवार सुबह जब रिचा के कमरे का गेट नहीं खुला तब मजदूरों को बुलाकर गेट को तुड़वाया। पत्नी बेसुध हालत में बिस्तर पर पड़ी थी। आवाज देने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। तत्काल उसे बंसल हॉस्पिटल पहुंचाया गया।

पिता बोले- बेटी को जहर देकर मारा गया

मृतक डॉ. रिचा पांडे के पिता विनोद चंद्र पांडे ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि होली पर बेटी चार दिन के लिए घर आई थी। सोमवार को ही लखनऊ से भोपाल लौटी थी। घर रहने के दौरान उसने किसी परेशानी का जिक्र कभी नहीं किया। गुरुवार रात 11:15 बजे उससे बात हुई थी। तब भी उसने किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया।

पिता ने बताया कि मेरी बेटी निडर थी। वह सुसाइड जैसा कदम कभी नहीं उठा सकती। उसकी बॉडी पर निशान नीले पड़ चुके हैं। उसे जहरीला पदार्थ देकर मारा गया है। मेरी बेटी जिंदगी में आगे बढ़ने वालों में से थी, वह होनहार थी। उसने जबलपुर मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की थी। भोपाल के गांधी मेडिकल कॉलेज से उसने एमएस किया। फिलहाल आरकेडीएफ मेडिकल कॉलेज में असिस्टेंट प्रोफेसर के तौर पर जॉब कर रही थी। डॉ. रिचा पांडे (25) की शादी चार महीने पहले सतना के रहने वाले डॉ. अभिजीत पांडे से हुई थी

चाचा बोले- दामाद का आचरण ठीक नहीं था

मृतक डॉक्टर के चाचा प्रकाशचंद पांडे का आरोप है कि दामाद का आचरण ठीक नहीं था। उसने पुलिस को गेट तोड़कर रिचा को अस्पताल पहुंचाने की बात कही है। लेकिन, हमें उसकी बातों पर शंका है। भतीजी की मौत संदिग्ध हालातों में हुई है। उसकी हत्या की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता है।

पिता की मौजूदगी में होगा पोस्टमार्टम

रिचा की मां और पिता लखनऊ में रहते हैं। पुलिस ने उन्हें बेटी की मौत की सूचना दे दी है। शुक्रवार रात तक फ्लाइट से उनके भोपाल आने की संभावना है। एएसआई महेंद्र चौकसे के मुताबिक बॉडी का पोस्टमार्टम शनिवार को परिजनों की मौजूदगी में कराया जाएगा।

न मीटिंग तय हुई, न एजेंडा आया

भोपाल निगम की बैठक 1 महीना लेट; विरोध में उतरे कांग्रेस पार्षद

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम की बजट मीटिंग की तारीख अब तक तय नहीं हो पाई है। इससे कांग्रेस पार्षद विरोध में उतर आए हैं। निगम में नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी ने कहा कि नियमानुसार मीटिंग हर 2 माह में होनी चाहिए, लेकिन 3 महीने बीत चुके हैं। बावजूद अब तक न तारीख तय हुई है और न ही एजेंडा सामने आया है।

उन्होंने बताया, इसे लेकर 17 फरवरी को भोपाल कमिश्नर संजीव सिंह को लेटर भी लिखा था। इसके बाद निगम कमिश्नर को मीटिंग के लिए जरूरी कार्रवाई करने के आदेश दिए गए थे, लेकिन अब तक आदेश का पालन नहीं हो पाया।

इसलिए शुक्रवार को सभी कांग्रेस पार्षद कमिश्नर सिंह से मिले और आपत्ति दर्ज कराई। पार्षद योगेंद्र सिंह गुड्डू चौहान ने कहा कि लगातार दूसरी बार मीटिंग देरी से होगी। जिससे शहर से जुड़े मुद्दों पर बात नहीं कर पा रहे हैं।

जीआईएस की वजह से देरी से मीटिंग- पिछली बैठक 13 दिसंबर 2024 को हुई थी। यह मीटिंग करीब तीन महीने में हुई थी, जबकि नियम 2 महीने के अंदर का है। इस बार भी एक महीना ज्यादा बीत चुका है। ऐसे में विपक्ष यानी, कांग्रेस पार्षद विरोध जता रहे हैं। हालांकि, 24-25 फरवरी को भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट थी। मीटिंग में देरी होने की वजह इसे ही बताया जा रहा है।

मीटिंग 25 मार्च को संभावित- इधर, निगम की बजट मीटिंग 25 मार्च को संभावित है, पर इसका एजेंडा जारी नहीं किया गया है। दूसरी ओर, एमआईसी की मीटिंग में भी बजट पर चर्चा नहीं हुई है। इस वजह से कांग्रेस पार्षद हमलावर हुए हैं।

मीटिंग में जलकर बढ़ाने पर आ सकता है प्रस्ताव

मार्च के आखिरी सप्ताह में संभावित निगम की बजट मीटिंग में जनता से जुड़े कई महत्वपूर्ण फैसले लिए जा सकते हैं। संभावना है कि 'शहर सरकार' जलकर को 10 प्रतिशत तक बढ़ा सकती है। ऐसा होता है जनता को हर महीने 20 रुपए ज्यादा चुकाने पड़ेंगे। वहीं, पानी के बल्क कनेक्शन की राशि आधी की जा सकती है। यह बजट ढाई हजार करोड़ रुपए से अधिक का हो सकता है।

3 साल पहले बढ़ा था टैक्स

बता दें कि करीब 3 साल पहले जल कर पर 15 प्रतिशत की वृद्धि की गई थी। शहर में पौने 3 लाख से ज्यादा नल कनेक्शन हैं। इनमें 2 लाख कनेक्शन 2400 स्क्वायर फीट या इससे कम एरिये वाले मकानों में लगे हैं। करीब 25 हजार कनेक्शन 2400 स्क्वायर फीट एरिये वाले मकानों में लगे हैं। बाकी गरीब वर्ग के घरों में कनेक्शन है। जिन लोगों के मकान 2400 स्क्वायर फीट तक एरिये में बने हैं, उन्हें 210 रुपए देने पड़ रहे हैं। प्रतिमाह 30 रुपए की बढ़ोतरी की गई थी। जिनके मकान 2400 स्क्वायर फीट से अधिक एरिये में बने हैं, वे 300 रुपए प्रतिमाह चुका रहे हैं।

मौजूदा कार्यकाल में पहली बार बढ़ेगा

यदि जल कर में बढ़ोतरी होगी है तो यह मौजूदा कार्यकाल में पहली बार होगा। हालांकि, पिछली बैठकों में जल कर बढ़ाने की चर्चा थी, लेकिन बाद में फैसला टाल दिया गया था।

ठग नटवरलाल खुद फंसा अपने जाल में

भोपाल में मंचित हुआ नाटक 'मारे गए गुलफाम', शक और साजिश की मजेदार जुगलबंदी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के एल बी टी सभागार में फ्लाइंग फैरीज नाट्य संस्था द्वारा हास्य नाटक 'मारे गए गुलफ़ाम' का मंचन किया गया। इस नाटक ने दर्शकों को खूब हंसाया और ठगों की चालबाजियों पर करारा व्यंग्य किया। इस नाटक को वरिष्ठ निर्देशक डॉ आजम खान ने डायरेक्ट किया। वहीं, लेखक संदीप लेले ने लिखा है।

नाटक 'मारे गए गुलफाम' की कहानी एक धूर्त ठग नटवरलाल के इर्द-गिर्द घूमती है, जो अमीर घरों की महिलाओं को अपने प्रेमजाल में फंसाकर ठगने की साजिश रचता है। लेकिन उसकी यह चालाकी ज्यादा दिन तक नहीं चल पाती। रमा और कोकिला नाम की दो महिलाएं उसकी साजिश को समझ जाती हैं और उसे सबक सिखाने की योजना बनाती हैं।नाटक के बीच किरदारों का डांस दर्शकों को खूब पसंद आया।

इधर, रमा का पति भी किसी दूसरे से नटवरलाल की साजिश के बारे में जान लेता है और अपनी पत्नी को बिना बताए खुद ही इस मामले को सुलझाने में जुट जाता है। जब नटवरलाल अपने जाल में फंसा हुआ पाता है, तब हास्यास्पद घटनाओं की कड़ी शुरू हो जाती है। पति अपनी ही पत्नी पर शक करता है और रंगे हाथों पकड़ने की योजना बनाता है, लेकिन जब सच्चाई सामने आती है, तो नटवरलाल का पर्दाफाश हो जाता है।

आखिर में, नटवरलाल अपनी गलती मानकर सबसे

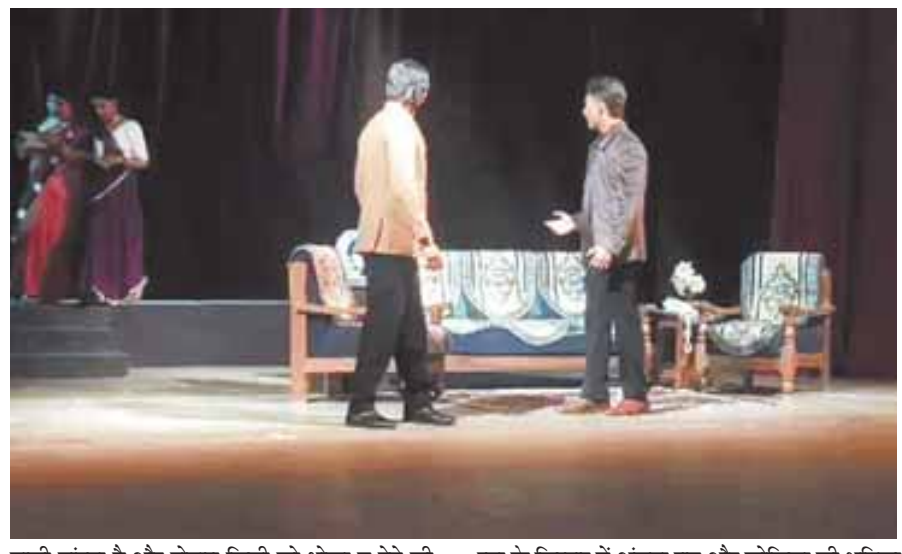

माफी मांगता है और दोबारा किसी को धोखा न देने की कसम खाता है। दर्शकों ने इस दिलचस्प और हास्य से भरपूर नाटक का खूब आनंद उठाया।

मंच पर जीवंत हुए किरदार- नटवरलाल की भूमिका में प्रदीप मंदरे ने शानदार अभिनय किया, जबकि रमा के किरदार में अंजना राय और कोकिला की भूमिका में शिवानी कटेरिया ने अपने प्रदर्शन से दर्शकों को खूब हंसाया। देवराज जोशी, संजय पंचाक्षरी, कपिल यादव, शेख शेफ, जुनैद हिंदुस्तानी, माही जोशी और अन्य कलाकारों ने भी अपने किरदारों को बखूबी निभाया।

भोपाल में पहली बार सिंधी मैराथन का आयोजन

23 मार्च को पंकज आडवाणी करेंगे फ्लैग ऑफ, 2.5 और 5 किमी की होगी दौड़

भोपाल (नप्र)। भोपाल में पहली बार सिंधी समाज की ओर से मैराथन का आयोजन किया जा रहा है। यह मैराथन शहीद हेमू कालानी की जयंती पर 23 मार्च रविवार को सुबह 6 बजे होगी। पद्मश्री और पद्मभूषण से सम्मानित पंकज आडवाणी मैराथन को हरी झंडी दिखाएंगे।

मैराथन लालघाटी स्थित सनसिटी गार्डन से शुरू होगी। इसमें दो श्रेणियां होंगी 2.5 किमी और 5 किमी। 2.5 किमी की दौड़ सनसिटी से नीना पैलेस यू-टर्न होकर लालघाटी से वापस सनसिटी तक होगी। 5 किमी की दौड़ सनसिटी से नीना पैलेस यू-टर्न, लालघाटी चौराहा, वीआईपी रोड और इंपीरियल सेब्रे होते हुए सनसिटी तक होगी।

सिंधी मेला समिति के अध्यक्ष मनीष दरयानी ने बताया कि इस मैराथन का मुख्य उद्देश्य युवाओं को स्वस्थ जीवनशैली के लिए प्रेरित करना है। सभी प्रतिभागियों को टी-शर्ट दी जाएगी। मैराथन के संयोजक कपिल भाटिया और सह-संयोजक राम आसुदानी तथा दीपक राजानी हैं।

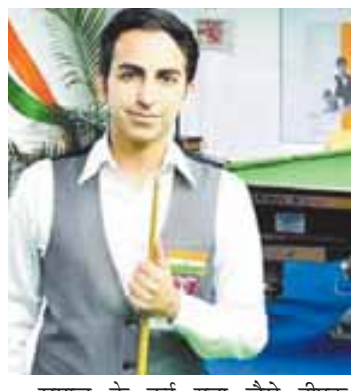

समाज के कई युवा जैसे दीपक राजानी, कमलेश चांदवानी, कविता चांदवानी, पूजा भाटिया, सागर, मनोज नागरानी, किरन बत्रा, संतोष लालचंदानी और करण भागचंदानी न सिर्फ मैराथन में भाग लेंगे बल्कि आयोजन में भी सहयोग कर रहे हैं। समिति ने सभी वर्गों से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील की है।

भोपाल में पहला वैचारिक महाकुंभ आज

कुशाभाऊ कन्वेंशन सेंटर में देशभर के विद्वान जुटेंगे, 12 वैश्विक मुद्दों पर होगा चिंतन-मंथन

भोपाल (नप्र)। मध्य भारत में अपने तरह का पहला वैचारिक महाकुंभ 'भोपाल मंथन 2025' 22 मार्च (शनिवार) को भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर में आयोजित किया जा रहा है। इस ऐतिहासिक आयोजन में देशभर के प्रमुख विद्वान, नीति विशेषज्ञ, आध्यात्मिक गुरु और विचारक राष्ट्र और वैश्विक स्तर के 12 अहम मुद्दों पर संवाद करेंगे।

आयोजन की विस्तृत जानकारी के लिए शुक्रवार को 9 मसाला स्ट्रीट में प्रेस वार्ता आयोजित की गई। फाउंडेशन के अध्यक्ष अंशुल तिवारी ने बताया कि इस मंच का उद्देश्य '2047 तक आत्मनिर्भर भारत के निर्माण' पर मंथन करना है, जिसमें भारत के सनातन मूल्यों, परंपराओं और नवाचारों को केंद्र में रखा जाएगा।

देशभर की प्रतिष्ठित हस्तियां होंगी शामिल- 'भोपाल मंथन' में धर्म, ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य और राष्ट्रीय विमर्श से जुड़ी जानी-मानी हस्तियां अपने विचार साझा करेंगी। प्रमुख वक्ताओं में आध्यात्मिक गुरु एवं कथावाचक साध्वी सरस्वती, सनातन महासंघ के संस्थापक गौतम खट्टर, वरिष्ठ लेखक एवं राजनीतिक विश्लेषक शांतनु गुप्ता, सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय, अभिनेत्री ('द कश्मीर फाइल्स') भाषा सुम्बली, पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग प्रियंक कानूनगो, संस्कृति शिक्षक एवं 'जेम्स ऑफ बॉलीवुड' के संस्थापक संजीव नेवर, ऐतिहासिक अनुसंधान और तुलनात्मक अध्ययन के राष्ट्रीय प्रमुख नीरज अत्री, पश्चिम बंगाल भाजपा की अल्पसंख्यक नेत्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता नाजिया इलाही खान शामिल हैं।

'कुशाभाऊ ठाकरे राष्ट्ररत्न पुरस्कार' से होगा सम्मान

इस आयोजन में उन महानुभावों को 'कुशाभाऊ ठाकरे राष्ट्ररत्न पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा, जिन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में असाधारण योगदान दिया है और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। इस वर्ष यह पुरस्कार निम्नलिखित विभूतियों को दिया जाएगा।

मनीष त्रिपाठी - प्रसिद्ध फैशन डिज़ाइनर, 'राम लला प्रतिमा की वस्त्र सेवा' (दिल्ली), नायक दीपचंद - कारगिल योद्धा (नाशिक), योगिता तांबे - दृष्टिहीन बहु-वाद्य वादक एवं संगीत शिक्षिका (मुंबई), अनंत वैश्य - सामाजिक उद्यमी, टीईडीएण्ड वक्ता एवं दिव्यांग अधिकार समर्थक (कानपुर)।

पांच सत्रों में होगा गहन विचार-विमर्श

कार्यक्रम सुबह 11 बजे से शाम 7 बजे तक चलेगा और इसे पाँच महत्वपूर्ण सत्रों में विभाजित किया गया है

सनातन- भारत की आत्मा
सनातन धर्म का वैश्विक प्रभाव
एक राष्ट्र, एक चुनाव

भारतीय सिनेमा में राष्ट्रवादी थीम

सोरस की कथा और भारत के खिलाफ गहरी साजिश एवं गंगा-जमुनी तहज़ीब

सीएम के काफिले में घुसी भाजपा जिला अध्यक्ष की कार

आरक्षक से विवाद में एफआईआर दर्ज, वर्दी उतरवाने की धमकी का आरोप

डिंडौरी (नप्र)। डिंडोरी में मुख्यमंत्री के काफिले में गाड़ी घुसाने और पुलिस आरक्षक से विवाद के मामले में भाजपा जिला अध्यक्ष चमरू सिंह नेताम के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है।

घटना गुरुवार की है, जब मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव वीरांगना रानी अवंतीबाई के बलिदान दिवस कार्यक्रम में शामिल होने बालपुर आए थे। मंडला जिले के मोहगांव थाने के आरक्षक हेमंत मरावी की शिकायत के अनुसार दोपहर साढ़े तीन बजे पलकी रोड घाट पर ड्यूटी के दौरान भाजपा जिला अध्यक्ष की गाड़ी सीएम के काफिले में प्रवेश करने लगी।

जब उन्होंने वाहन रोका, तो अध्यक्ष ने

हेमंत मरावी, आरक्षक

चमरू सिंह, भाजपा नेता

अभद्र भाषा का प्रयोग किया और वर्दी उतरवाने की धमकी दी। शाहपुर थाने में इस मामले में शासकीय कार्य में बाधा डालने सहित अन्य धाराओं में मामला दर्ज किया गया है।

भाजपा नेता ने कहा- ऐसा कुछ नहीं हुआ- भाजपा जिला अध्यक्ष चमरू सिंह नेताम ने किसी भी तरह के विवाद से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि वे इस मामले की जानकारी संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों को देंगे। वहीं, शाहपुर थाना प्रभारी और एडिशनल एसपी सहित पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी इस मामले पर कोई टिप्पणी करने से बच रहे हैं।

भोपाल मंडल से गुजरने वाली उदयपुर - शालीमार एक्सप्रेस रद्द

10 और 11 मई को ट्रेन रहेंगी कैंसिल, खड़गपुर मंडल में होना है रेलवे मेंटेनेंस कार्य

भोपाल (नप्र)। दक्षिण पूर्व रेलवे के खड़गपुर मंडल के संत्रागाछी स्टेशन पर यार्ड रीमॉडलिंग कार्य के चलते रेल यातायात प्रभावित रहेगा। इस कारण भोपाल मंडल से गुजरने वाली कुछ ट्रेनों को अस्थायी रूप से रद्द किया गया है। रेलवे ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे यात्रा से पहले अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा एनटीईएस /139 के माध्यम से अपनी ट्रेन की स्थिति की पुष्टि कर लें, जिससे किसी भी असुविधा से बचा जा सके। इसके अलावा यात्रियों को नियामानुसार रिफंड भी किया जाएगा।

ये ट्रेनें रहेंगी कैंसिल

गाड़ी संख्या 20971 (उदयपुर - शालीमार एक्सप्रेस) - 10 मई 2025 को निरस्त।

गाड़ी संख्या 20972 (शालीमार - उदयपुर एक्सप्रेस) - 11 मई 2025 को निरस्त।

भोपाल सहित डिवीजन के 9 स्टेशनों को मिला आईएसओ सर्टिफिकेशन

पर्यावरण सुरक्षा और यात्री सुविधाओं को

प्राथमिकता देते हुए, पश्चिम मध्य रेलवे के भोपाल मंडल के 9 प्रमुख रेलवे स्टेशनों को आईएसओ 14001:2015 पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली प्रमाणपत्र प्रदान किया गया है। इस सूची में भोपाल, बीना, इटारसी, गंजबासौदा, गुना, नर्मदापुरम, साँची, शिवपुरी और विदिशा स्टेशन शामिल हैं। आईएसओ 14001 प्रमाणपत्र रेलवे स्टेशनों पर स्वच्छता, जल संरक्षण, ऊर्जा दक्षता और हरित तकनीकों के प्रभावी क्रियान्वयन का मानक है।

संपादकीय

नागपुर दंगा : असली मास्टर माइंड कौन?

शायद ही किसी ने सोचा होगा कि कट्टरपंथी मुगल सम्राट औरंगजेब और उसकी 218 साल पहले बनी कब्र देश और खासकर महाराष्ट्र में भारी साम्प्रदायिक हिंसा और राजनीति का कारण बन जाएगी। नागपुर में हुई साम्प्रदायिक दंगा, आगजनी और पुलिस कर्मियों पर जानलेवा हमले की गंभीर घटना के मामले में पुलिस ने एक स्थानीय मुस्लिम नेता फहीम खान और उसके लगभग सौ साथियों को गिरफ्तार किया है। फहीम समेत लोगों पर देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया है। इस मामले में बांग्लादेश कनेक्शन भी सामने आया है। अभी तक तस्वीर यही है कि 17 मार्च को विश्व हिंदू परिषद द्वारा खुल्दाबाद से मुगल बादशाह औरंगजेब की कब्र हटाने की मांग को लेकर किए गए प्रदर्शन और प्रतीकात्मक कब्र जलाने के फेक वीडियो वायरल होने से मुसलमान भड़क उठे और उन्होंने भारी हिंसा की। फहीम खान से उन्हें हिंदुओं के खिलाफ भड़काने का काम किया। लेकिन अब सवाल उठ रहा है कि इस दंगे के पीछे असल मास्टर माइंड कौन है? फहीम खान तो एक मोहरा भर है। चर्चा यह है कि भाजपा की अंदरूनी राजनीति भी इस दंगे को भड़काने के पीछे बड़ा कारण है। यह आशंका इसलिए भी बलवती हो रही है, क्योंकि औरंगजेब और उनकी कब्र को लेकर भाजपा और विहिप के मातृ संगठन आरएसएस के बयान और रूख अलग-अलग हैं। बकौल संघ के प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर अगर औरंगजेब आज पूरी तरह से अप्रासंगिक है तो यह सारा आंदोलन क्यों? महाराष्ट्र में यह चर्चा आम है कि नागपुर में इस हिंसा के पीछे मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस की कुर्सी हिलाने की छुपी कोशिश थी। इसमें एक वरिष्ठ केन्द्रीय मंत्री का नाम भी आ रहा है। हालांकि इसकी कोई पुष्टि नहीं कर रहा। लेकिन नागपुर मध्य के भाजपा विधायक और सीएम फडणवीस के खास समर्थक प्रवीण दटके ने सवाल उठाया है कि हिंसा शुरू होने के बाद पुलिस ने तत्परता से कार्रवाई क्यों शुरू नहीं की? दूसरी तरफ नागपुर के प्रभारी मंत्री चंद्रशेखर बावनकुले अभी भी इस पूरे मामले में पुलिस की भूमिका को सही बता रहे हैं। चर्चा यह भी है कि नागपुर प्रकरण संघ और उसके अनुषांगिक संगठनों में नवहिंदुत्ववादी और पुराने हिंदुत्ववादियों की सोच में टकराव का गंभीर नतीजा है। इस पूरे मामले में मुख्यमंत्री फडणवीस काफी हद तक बचाव की मुद्रा में दिखे। उन्होंने विधानसभा में कहा कि नागपुर में हिंसा फैलने के पीछे असल कारण फिल्म 'छावा' में दिखाए गए औरंगजेब के अत्याचार हैं। लेकिन 'छावा' फिल्म का महिमा मंडन और उसे टैक्स फ्री करने का काम भी भाजपा सरकारों ने ही किया। इस फिल्म में औरंगजेब को चरित्र को अत्याचारी दिखाने पर भड़के सपा विधायक अबू आजमी ने बयान किया कि औरंगजेब तो महान बादशाह था। जिससे नफरत की आग और भड़की। हालांकि इस बयान के बाद आजमी को विधानसभा से पूरे बजट सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या नागपुर हिंसा वास्तव में मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस को अस्थिर करने की गुप्त योजना का परिणाम थी? वैसे नागपुर में यह साम्प्रदायिक हिंसा पहली बार नहीं हुई है। संघ की स्थापना के दो साल बाद 1927 में भी शहर में महालक्ष्मी जुलूस निकालने को लेकर साम्प्रदायिक दंगा हुआ था। इस जुलूस का मुसलमानों ने महाल इलाके से निकालने का विरोध किया था। उस दंगे में 22 लोग मारे गए थे और 100 से अधिक घायल हुए थे। हालांकि उसके बाद कोई बड़ा साम्प्रदायिक दंगा या हिंसा वहां नहीं हुई। केवल गांधी हत्या के बाद वहां ब्राह्मणों को निशाना बनाया गया था। तो क्या नागपुर में फिरकापरस्ती का वही जिन्न फिर सिर उठा रहा है? और उसका सरपरस्त कौन है?

नजरिया

बलदेव राज भारतीय

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

बलूच के रूप में क्या पाक एक बार और टूटेगा

जब से संसार के मानचित्र पर पाकिस्तान नामक देश को जगह मिली। उसका सबसे पहला उद्देश्य येन केन प्रकारेण भारत में आतंकी गतिविधियों को बढ़ाकर अस्थिरता फैलाना रहा है। कश्मीर पर अपना हक जताने के बहाने वह कई बार भारत पर आक्रमण करने की भूल कर चुका है। वहां के राजनैतिक दल पाकिस्तानी जनता का ध्यान दैनिक जीवन की समस्याओं से इतर कश्मीर की ओर लगाए रखते हैं और उनकी वतनपरस्ती की भावनाओं का दोहन कर उन्हें भारत के विरुद्ध भड़काते रहते हैं। सन् 1965 की लड़ाई में बुरी तरह मुंह की खाने के बाद 1971 में पूर्वी पाकिस्तान खो दिया। पूर्वी पाकिस्तान खोने का बदला, वह भारत में कई अलगाववादी आंदोलनों को हवा देकर, लेने का प्रयास करता रहा। 1999 में कारगिल में फिर से मुंह की खाई। उसके पश्चात पठानकोट और उरी जैसे स्थानों पर सैनिक ठिकानों पर छिपकर आतंकी घटनाओं को अंजाम दिया। परन्तु बदले में उससे भी अधिक नुकसान उसे उठाना पड़ा तथा अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समक्ष न उसे स्वीकार करते बना और न अस्वीकार बनते। आज आतंक की उसी आग में पाकिस्तान स्वयं झुलसने लगा। अभी 11 मार्च को बलूच लिबरेशन आर्मी ने जाफर एक्सप्रेस को हाइजैक कर जो संदेश दिया वह न केवल पाकिस्तान के सैन्य बलों के लिए चुनौती है, बल्कि बलूचिस्तान में दशकों से चल रहे संघर्ष की जटिलता को भी उजागर कर दिया। यह उसी आग में झुलसने का एक उदाहरण है।

जाफर एक्सप्रेस को हाइजैक करना महज एक आतंकवादी हमला नहीं थी, बल्कि एक गहरे असंतोष और विद्रोह की अभिव्यक्ति थी, जो बलूच लोगों के दर्द, उनकी उपेक्षा और उनके अधिकारों के लिए संघर्ष को दर्शाती है। इसके ठीक चार दिन बाद, 15 मार्च को नोशकी में हुए एक और आत्मघाती हमले ने इस विद्रोह की आग को और भड़का दिया। बीएलए ने दावा किया कि उसने 90 पाकिस्तानी सैनिकों को मार डाला, हालांकि सरकार इस संख्या को कम बताकर अपनी हार को छिपाने की कोशिश कर रही है। इन घटनाओं ने न केवल पाकिस्तानी सेना की कमजोरियों को उजागर किया, बल्कि यह भी सवाल उठाया कि क्या बलूचिस्तान पर उसका नियंत्रण वास्तव में उतना मजबूत है, जितना वह दावा करती है?

बलूचिस्तान, पाकिस्तान का सबसे बड़ा प्रांत, सरकार द्वारा उपेक्षित, अपनी प्राकृतिक संपदा–तेल, गैस, सोना और तांबे-के लिए जाना जाता है। लेकिन यह विडंबना ही है कि इस संपदा का लाभ वहां के मूल निवासियों, बलूच लोगों को, लगभग न के बराबर मिलता है। बलूच समुदाय लंबे समय से यह आरोप लगाता रहा है कि पाकिस्तानी सरकार उनकी जमीन का शोषण तो करती है, लेकिन बदले में उन्हें विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं से वंचित रखती है। 1948 में जब बलूचिस्तान को पाकिस्तान में शामिल किया गया, तब से ही वहां के लोग इसे एक जबरन अधिग्रहण मानते हैं। उस समय के शासक, खान ऑफ कालात मीर अहमद यार खान, ने कथित तौर

पर स्वतंत्रता की मांग की थी, लेकिन सैन्य दबाव में उन्हें हार माननी पड़ी। तब से लेकर आज तक, बलूचिस्तान में असंतोष की यह आग कभी शांत नहीं हुई। बीएलए जैसे संगठन इसी असंतोष की उपज हैं। यह संगठन बलूचिस्तान की आजादी के लिए लड़ रहा है और इसे पाकिस्तान से अलग एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाना चाहता है। हालांकि इसे पाकिस्तान, अमेरिका और कई अन्य देशों ने आतंकवादी संगठन घोषित किया है, लेकिन बलूच समुदाय के एक बड़े हिस्से के लिए यह उनकी आवाज बन गया है। जाफर एक्सप्रेस हाईजैक और नोशकी हमला इस बात का सबूत हैं कि बीएलए अब पहले से कहीं अधिक संगठित, साहसी और प्रभावशाली हो गया है।

11 मार्च को जाफर एक्सप्रेस पर हमला बीएलए के लिए एक टर्निंग पॉइंट था। यह ट्रेन क्वेटा से पेशावर जा रही थी, जिसमें लगभग 500 यात्री सवार थे। बीएलए ने न केवल ट्रेन को हाईजैक किया, बल्कि उसने दावा किया कि उसने 214 बंधकों को मार डाला। एक घायल सैनिक के अनुसार बलूच आतंकियों ने पाक सैनिकों को चुन चुन कर मारा और ट्रेन को सुरंग नंबर 8 में रोककर अपनी रणनीति को अंजाम दिया। बीएलए ने 48 घंटे का अल्टीमेटम दिया था कि सरकार उनकी मांगें-बलूच राजनीतिक कैदियों और गायब लोगों की रिहाई–पूरी करे, वरना बंधकों को मार दिया जाएगा। पाकिस्तानी सेना ने इस मांग को ठुकरा दिया और जवाब में सैन्य ऑपरेशन शुरू किया, जिसमें उसने दावा किया कि सभी 33 हमलावर मारे गए और 346 यात्रियों को बचा लिया गया। लेकिन बीएलए का कहना है कि यह ऑपरेशन असफल रहा और उसने अपने वादे के मुताबिक बंधकों को मार डाला। इस घटना ने कई सवाल खड़े किए। पहला, क्या बीएलए वास्तव में इतना सक्षम हो गया है कि वह इतने बड़े पैमाने पर हमला कर सके? दूसरा, क्या पाकिस्तानी सेना की रणनीति बलूच विद्रोह को दबाने में विफल हो रही है? और तीसरा, क्या यह हमला बलूचिस्तान में एक बड़े विद्रोह की शुरुआत है? बीएलए के इस कदम ने पाकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय मंच पर शर्मिंदगी का सामना करने के लिए मजबूर किया। उसकी सेना, जो खुद को दक्षिण एशिया की सबसे मजबूत सेनाओं में से एक मानती है, एक 'कमजोर' समझे जाने वाले संगठन के सामने बेबस नजर आई।

जाफर एक्सप्रेस हाईजैक के चार दिन बाद 15 मार्च को नोशकी में हुए आत्मघाती हमले ने बीएलए की ताकत को और साबित कर दिया। इस हमले में उसने एक सैन्य काफिले को निशाना बनाया और दावा किया कि 90 सैनिक मारे गए। इन हमलों को देखते हुए एक बड़ा सवाल उठता है: क्या बीएलए का यह रास्ता उचित है? हां, बलूच लोगों के साथ अन्याय हुआ है। उनकी जमीन का शोषण, उनकी संस्कृति का दमन और उनकी आवाज को कुचलने की कोशिशें निर्विवाद हैं। मानवाधिकार संगठनों ने बार-बार बताया है कि बलूचिस्तान में हजारों लोग 'लापता' हो गए हैं, जिन्हें कथित तौर पर सुरक्षा बलों ने उठाया है। लेकिन क्या हिंसा इसका जवाब हो सकती है? जाफर एक्सप्रेस में सैकड़ों निर्दोष यात्रियों को बंधक बनाना और उनकी हत्या करना क्या बलूच लोगों के संघर्ष को न्यायसंगत बनाता है? यहां मानवता का एक गहरा संकट है। बीएलए का कहना है कि वह अपने लोगों की आजादी के लिए लड़ रहा है, लेकिन इस प्रक्रिया में वह उन लोगों की जान ले रहा है जो शायद इस संघर्ष से सीधे जुड़े भी न हों। दूसरी ओर, पाकिस्तानी सरकार और सेना की नीतियां भी इस हिंसा को बढ़ावा दे रही हैं। बलूच लोगों के साथ बातचीत करने, उनकी शिकायतों को सुनने और उन्हें मुख्यधारा में शामिल करने की बजाय, सरकार ने सैन्य दमन को चुना है। नतीजा यह है कि दोनों पक्षों के बीच की खाई बढ़ती जा रही है, और आम लोग इसकी कीमत चुका रहे हैं।

बीएलए का उदय और उसकी हालिया कार्रवाइयां इस बात का संकेत हैं कि बलूचिस्तान में स्थिति अब सरकार के नियंत्रण से बाहर हो रही है। पहले बीएलए को एक कमजोर संगठन माना जाता था, जो छिटपुट हमले ही कर सकता था। लेकिन अब वह बड़े पैमाने पर ऑपरेशन करने में सक्षम हो गया है। जाफर एक्सप्रेस हाईजैक और नोशकी हमले ने दिखाया कि उसके पास न केवल हथियार और प्रशिक्षण है, बल्कि स्थानीय समर्थन और रणनीतिक समझ भी है। कई विशेषज्ञों का मानना है कि अगर पाकिस्तान ने अपनी नीति नहीं बदली, तो यह विद्रोह और बढ़ेगा। कुछ तो यह भी कहते हैं कि पाकिस्तान चार हिस्सों में बंट सकता है-पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा। यह भविष्यवाणी भले ही अतिशयोक्ति लगे, लेकिन बलूचिस्तान में बढ़ती अशांति इसे असंभव भी नहीं बनाती। बीएलए का कहना है कि वह तब तक लड़ता रहेगा, जब तक बलूचिस्तान को आजादी नहीं मिल जाती। लेकिन इस आजादी की कीमत क्या होगी? क्या यह और खूनखराबे, और तबाही के बाद हासिल होगी?

पाकिस्तान के सामने अब दो रास्ते हैं, या तो वह बलूच लोगों के साथ संवाद शुरू करे, उनकी शिकायतों को सुने और उन्हें सम्मान दे, या फिर सैन्य दमन को जारी रखे और इस आग को और भड़कने दे। मानवता की जीत तभी होगी, जब दोनों पक्ष हिंसा को छोड़कर बातचीत की मेज पर आएंगे। लेकिन मौजूदा हालात को देखते हुए, यह उम्मीद धुंधली नजर आती है। बलूचिस्तान की यह जंग अभी खत्म होने वाली नहीं है। इसकी परिणति क्या होगी? क्या संसार का मानचित्र एक बार फिर बदलने वाला है? क्या पाकिस्तान एक बार फिर से टूटने जा रहा है? ये प्रश्न अभी काल के गर्भ में हैं। इनका उत्तर समय ही देगा।

प्रतिक्रिया

निदा रहमान

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

मी लॉर्ड, आप ही बताएं बलात्कार या उसकी मंशा कैसी होती है?

हम अपने बच्चों के होश संभालने के बाद से ही गुड टच और बैड टच में फर्क समझाते हैं, उन्हें बताते हैं कि कोई उनके प्राइवेट पार्ट को छूता है तो वो बैड टच है, लेकिन यहां तो एक फ़ैसले ने ऐसी नज़ीर पेश कर दी है कि हम किस मुंह से अपने बच्चों को बेड टच के बारे में बताएंगे, कैसे हम अपनी बच्चियों को समझाएंगे कि कोई आपके प्राइवेट पार्ट को जबरन छूता है तो वो गलत है क्योंकि इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज साहब ने तो साफ़ कह दिया है कि महिला के स्तन को पकड़ना, उसके पजामे के नाड़े को तोड़ना और खींचकर कहीं ले जाने की घटना बलात्कार या बलात्कार की कोशिश नही है। जज साहब का कहना है कि इन हरकतों से ये कतई नहीं माना जा सकता है कि उन्हें रेप की घटना देने के लिए अंजाम दिया गया था। अब मेरी ये समझ में नहीं आ रहा है कि इस पर क्या प्रतिक्रिया दी जाए। कभी कभी शब्द भी कम पड़ जाते हैं और जज राम मनोहर नारायण मिश्र की इस टिप्पणी ने तो दिलो ओ दिमाग को हिलाकर रख दिया है।

यह मामला यूपी के कासगंज जिले के पटियाली थाना क्षेत्र में 10 नवंबर 2021 को शाम पांच बजे हुई एक घटना से जुड़ा हुआ है। इसमें एक महिला ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी कि वह अपनी 14 साल की बेटी के साथ कहीं जा रही थी। रास्ते में पवन, आकाश और अशोक नाम के तीन युवकों ने बेटी को घर छोड़ने के बहाने अपनी बाइक पर बैठा लिया. एफआईआर में कहा गया कि आरोपियों ने रास्ते में एक पुलिया के पास गाड़ी रोककर उसकी बेटी के स्तन पकड़े और पायजामे का नाड़ा तोड़ दिया। इसके बाद गलत इरादे से उसे पुलिया के नीचे खींच कर ले जाने लगे। इस बीच चीख पुकार सुनकर वहां लोगों की भीड़ छूट गई, जिसकी वजह से आरोपी उसकी बेटी को छोड़कर भाग निकले। इस मामले में आरोपियों के खिलाफ आईपीसी में रेप की धारा 376 और पोक्सो एक्ट की धारा 18 यानी अपराध करने के प्रयास का केस दर्ज किया गया। निचली अदालत ने इन्हीं धाराओं में आरोपियों के खिलाफ समन जारी किया.

निचली अदालत के फैसले के खिलाफ आरोपियों ने पिछले साल इलाहाबाद हाईकोर्ट में क्रिमिनल रिवीजन की अर्जी दाखिल की। हाईकोर्ट में इस मामले आरोपियों की याचिका को आंशिक रूप से स्वीकार करते हुए अहम फैसला सुनाया है। जस्टिस राम मनोहर नारायण मिश्र की सिंगल बेंच ने अपने फैसले में कहा है कि महिला के स्तन को पकड़ना, उसके पजामे के नाडे को तोड़ना और खींचने की घटना को कतई रेप की कोशिश का अपराध नहीं माना जा सकता। इन हरकतों से यह नहीं माना जा सकता कि इन्हें रेप की घटना को अंजाम देने के लिए ही कारित किया गया है।

हालांकि ऐसे ही एक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाई कोर्ट की नागपुर बेंच के फ़ैसले को पलट दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने 2021 में कहा कि किसी बच्चे के यौन अंगों को यौन इरादे से छूना पॉक्सो अधिनियम की धारा 7 के तहत यौन हिंसा माना जाएगा। इसमें चाहे त्वचा का संपर्क नहीं हुआ हो लेकिन इरादा महत्वपूर्ण है. इस मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट की एडीशनल जज पुष्पा गनेडिवाला के अभियुक्त को बरी करने का फ़ैसला लिया था। हाईकोर्ट ने त्वचा से त्वचा का संपर्क न होने के आधार पर फैसला सुनाया था।

दरअसल इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज के इस बयान से एक नई बहस छिड़ गई है। ज़्यादातर लोग जज साहब के इस बयान से इत्तेफ़ाक नहीं रखते हैं और इस पर तीखी प्रतिक्रिया भी देखने को मिल रही है। बीजेपी की राज्यसभा सांसद रेखा शर्मा ने भी इस फ़ैसले पर सवाल खड़े किए हैं। रेखा शर्मा ने कहाकि मुझे लगता है कि जज बिल्कुल भी संवेदनशील नहीं हैं, उनको देखना चाहिए कि लोगों की मंशा क्या है, मंशा पर सज़ा मिलनी चाहिए ना कि रेप होगा तभी सज़ा होगी। रेखा शर्मा ने कहाकि जजों को रेप का इंतज़ार नहीं करना चाहिए, अगर जज ही इस तरह की असंवेदनशील बात कहेंगे तो हमारी बच्चियां कहां जाएंगी।

इस फ़ैसले के बाद हम सोच में हैं कि अब किसी बच्ची के प्राइवेट पार्ट को कोई छूता है, उसके कपड़े फाड़ देता है तो वो और उसके घरवाले कहां इंसाफ़ मांगेगे, अब वो कहां जा कर कहेंगे कि हमारी बच्ची के साथ न्याय कीजिए क्योंकि ये टिप्पणी न्याय देने वाले न्यायाधीश ने ही तो दी है। हो सकता है कि इसमें कई पेंच हों लेकिन एक जज की ये टिप्पणी बेहद असंवेदनशील कही जा सकती है। जज साहब के बयान से इस बच्ची के साथ ना जाने कितनी पीड़िताओं और उनके परिवारों के हौसले कमज़ोर पड़ गए होंगे, उनकी हिम्मत टूटने लगी होगी और अपराधियों के हौसले बुलंद हो गए होंगे। जो पीड़ित है अब उसे ही साबित करना होगा कि जिसने उसके स्तर पकड़े, उसकी शलवाल खोली उसकी मंशा बलात्कार करने की थी।

बताइए ज़रा 14 साल की बच्ची के स्तन क्यों दबाए गए होंगे, उसकी शलवार का नाड़ा क्यों तोड़ा गया होगा, उसे खींचकर पुलिया के नीचे क्यों ले जा रहा होगा ? जज साहब की टिप्पणी के बाद तो जज साहब को ही बताना चाहिए कि आरोपियों की मंशा क्या थी, कोई किसी लड़की, महिला के साथ ये क्यों करेगा, क्या ये बलात्कार की कोशिश नहीं या फिर लड़की के साथ बलात्कार हो जाता फिर कोर्ट आरोपियों को सज़ा देता। लेकिन अब तो लगता है कि बलात्कार होने के बाद भी क्या इंसाफ़ मिलने की उम्मीद लगाई जा सकती है। जब इतना सब होने के बाद भी जज साहब को लगता है कि आरोपियों की मंशा बलात्कार की नहीं तो फिर वही बता दें कि क्या मंशा रही होगी।

कभी कभी लगता है कि देश आगे की तरफ़ बढ़ने के बजाए और पीछे की तरफ़ जा रहा है। लेकिन ऐसा तो शायद गुज़र ज़माने में भी नहीं होता होगा। ये उस बच्ची की किस्मत ही थी कि उसकी चीख पुकार सुनकर कुछ राहगीरों ने उसे बचा लिया, अगर वो राहगीर ना आते तो। किसी महिला के स्तन को दबाना, उसके कपड़े फाड़ना उस महिला के जिस्म पर ही नहीं उसकी रूह को भी ज़ख़्मी कर जाते हैं। इतना आसान तो नहीं ये कहना कि बलात्कार तो हुआ ही नहीं, मतलब बलात्कार हो जाने का इंतज़ार किया जाए, तब न्याय मिलेगा, फिर ऐसे न्याय का फ़ायदा ही क्या। हम अपने परिवार, समाज और आसपास की बच्चियों को जज साहब के इस फ़ैसले के बारे में क्या जबाव देंगे। दरअसल जवाब मांगने का काम तो सुप्रीम कोर्ट को करना चाहिए। क्योंकि हाईकोर्ट का जज होने का मतलब ये नहीं कि आप कुछ भी बेतुका बयान दे सकते हैं, इन बयानों से लंबी बहस छिड़ती है और कई सवाल भी खड़े हो जाते हैं। न्यायाधीश को अपनी कुर्सी पर बैठकर संवेदनशील भी होना चाहिए, ताकि उनके बयानों से समाज में बेहतर संदेश जाए। लेकिन अब देखा जा रहा है कि जज भी अजीबो-गरीब तरह के बयान देते हैं और उनका सबसे ज़्यादा असर महिलाओं, बच्चियों पर होता है।

सभ्यता और संस्कृति के संस्थापक भगवान आदिनाथ

जन्मकल्याणक विशेष

संदीप सृजन

लेखक शाश्वत सृजन के संपादक हैं।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ, जिन्हें ऋषभनाथ, ऋषभदेव या आदिनाथ के नाम से जाना जाता है, उन्होंने न केवल आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि मानव सभ्यता को एक सुसंस्कृत और संगठित रूप देने में भी अतुलनीय योगदान दिया। उन्हें संसार में कर्म, कर्तव्य और कला का संस्थापक माना जाता है। क्योंकि उन्होंने मानव जीवन को जीने की कला, सामाजिक व्यवस्था की नींव, और विभिन्न व्यावहारिक कौशलों का ज्ञान प्रदान किया।

जैन ग्रंथों में भगवान आदिनाथ को एक ऐसे युग-प्रवर्तक के रूप में देखा जाता है, जिन्होंने उस समय के असंगठित और अज्ञानी समाज को सभ्यता की ओर अग्रसर किया। भगवान आदिनाथ का जन्म त्रेतायुग में हुआ था। यह वह समय था जब धरती पर मानव जीवन अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में था। वे अयोध्या के कुलकर नाभिराय और रानी मरुदेवी के पुत्र थे। जैन ग्रंथ आदिपुराण और त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित्र में उनके जन्म और जीवन की घटनाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। उनका जन्म चैत्र मास की कृष्ण अष्टमी को हुआ था, और उनके जन्म के साथ ही प्रकृति में शुभ संकेत देखे गए थे। उनके पिता नाभिराय आदर्श शासक थे, और उनकी माता मरुदेवी एक आदर्श नारी के रूप में जानी जाती थीं। भगवान ऋषभदेव का बचपन और युवावस्था राजसी वैभव में बीती। उन्होंने युवावस्था में सुनंदा से विवाह किया और उनके कई पुत्र-पुत्रियाँ हुईं, जिनमें भरत, बाहुबली, सुंदरी और ब्राह्मी प्रसिद्ध हैं। एक राजा के रूप में उन्होंने अपने राज्य को समृद्धि और शांति की ओर ले गए। योग्य समय जानकर संन्यास लेने का निर्णय लिया और अपने पुत्र भरत को राज्य सौंप दिया।

जैन परंपरा में यह माना जाता है कि भगवान आदिनाथ ने मानवता को 72 पुरुष कलाओं और 64 स्त्री-कलाओं की शिक्षा दी। उस समय तक लोग जंगलों में रहते थे, प्रकृति पर निर्भर थे, और उनके पास जीवन को व्यवस्थित करने का कोई ज्ञान नहीं था। भगवान आदिनाथ ने उन्हें सभ्यता की ओर ले जाने के लिए कई महत्वपूर्ण कौशल सिखाए। जिनमें असि, मसि और कृषि का उल्लेख विशेष रूप से मिलता है।

भगवान आदिनाथ ने केवल व्यावहारिक कलाएँ ही नहीं सिखाईं, बल्कि समाज को संगठित करने के लिए नियम और व्यवस्थाएँ भी स्थापित कीं। उस समय तक लोग असंगठित समूहों में रहते थे, लेकिन उन्होंने विवाह प्रथा की शुरुआत की, जिससे परिवार का ढाँचा बना। उन्होंने समाज को तीन वर्गों - क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - में विभाजित किया, जो उस समय की आवश्यकताओं के अनुसार कार्य-विभाजन का आधार था। इसके अलावा, उन्होंने राज्य संचालन के नियम बनाए और उनका पुत्र भरत पहला चक्रवर्ती सम्राट बना। भरत के नाम पर ही भारत देश का नाम पड़ा, जो उनके प्रभाव को दर्शाता है। आध्यात्मिक कला और तीर्थंकर के रूप में जीवन संन्यास लेने के बाद भगवान आदिनाथ ने कठोर तपस्या की। जैन ग्रंथों के अनुसार, उन्होंने एक वर्ष तक बिना भोजन और पानी के ध्यान किया और अंततः केवलज्ञान प्राप्त किया। केवलज्ञान वह अवस्था है जिसमें आत्मा सर्वज्ञ और सर्वदर्शी हो जाती है। इसके बाद उन्होंने अपनी पहली देशना दी, जिसमें उन्होंने अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, और आत्म-शुद्धि के सिद्धांत सिखाए। उनकी देशना सुनकर उनके पुत्र भरत और बाहुबली सहित लाखों लोगों ने संन्यास लिया। भगवान आदिनाथ के जीवन में उनकी साधना का प्रमुख स्थान शत्रुंजय नदी के किनारे रहा जो आज पालिताणा तीर्थ के नाम से जाना जाता है। जिसको महत्वपूर्ण सिद्ध क्षेत्र माना जाता है। उनकी निर्वाण-स्थली अष्टापद पर्वत मानी जाती है।

भगवान आदिनाथ द्वारा सिखाई गई कलाएँ केवल भौतिक कौशल तक सीमित नहीं थीं। इनमें एक गहरा दार्शनिक आधार भी था। उदाहरण के लिए, कृषि कला आत्म-निर्भरता और प्रकृति के साथ संतुलन का प्रतीक थी। लेखन कला ज्ञान के संरक्षण और प्रसार का माध्यम बनी। संगीत और नृत्य आत्मा को शांति और आनंद देने के साधन थे। इस तरह, उनकी हर कला जीवन को संपूर्णता और अर्थ देने वाली थी। आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता आज के युग में भगवान आदिनाथ की शिक्षाएँ और भी प्रासंगिक हो गई हैं। उनकी आत्म-निर्भरता की कला हमें आधुनिक उपभोक्तावाद से बचने की प्रेरणा देती है। उनकी अहिंसा और पर्यावरण के प्रति सम्मान की शिक्षा जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी समस्याओं के समाधान के लिए जरूरी है। उनकी सामाजिक व्यवस्था हमें संगठन और सहयोग की महत्ता सिखाती है। इस तरह, वे न केवल प्राचीन काल के लिए, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी प्रेरणा स्रोत हैं।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पंद्रह टुकड़े वाली मोहब्बत ए आजादी कथा

अब प्यार की परिभाषा बदल रही है। सब नई चीजें जुड़ रही हैं। जबकि अंततः लव मैरिज भी प्यासा है। नई मोहब्बत से कुछ आशा है। आजकल प्यार अंधा, गूंगा और अंत में पंद्रह टुकड़ों वाला हो गया है। बस अपनी ही जिद पर ठहरा होता है इसपे अनगिनत विश्वास का पहरा होता है और इसलिए ये बेपरवाह होता है। ऐसी स्त्री को भगवान न जाने तो हम कैसे जाने? बड़ी विडंबना है समाज की जो कलुषित हृदय को माज नहीं पा रहा है। आज पढ़ा-लिखा समाज ज्यादा है और ऐसी हरकतों पर कोई नहीं लाज हैवान का बन गया प्यादा है। उसने तो देवी जैसी पूरी स्त्री जाति को ही कलंकित कर दिया। ऐसी घटनाओं से कमजोर दिल वाले पति सुनकर बेचारे आतंकित हैं। वह भय से कांप रहे हैं। वे हनुमान चालीसा का बराबर जाप कर रहे हैं। किसी अनहोनी से भय खाए

हैं। उनको पत्नी यदि प्यार से भी खाना खिलाना चाह रही है तो पंद्रह टुकड़े याद आने से खाना हलक के अंदर नहीं ले जा पा रहे हैं। जैसे कि दांपत्य जीवन पर नर्क का बर्क चढ़ गया हो।

कैसे -कैसे लोग यहां रहते हैं। चुड़ैल भी सुनकर डर जावे। नाम मुस्कान और करतूत सुनकर हलक सुख जा रहा है।किसी को भी जिंदगी में ऐसी मुस्कान तो नहीं चाहिए। मौत का दूसरा नाम मुस्कान है। 'अवैध संबंध में पगलाया जो नर-नारी, विपदा आए जीवन में भारी।' इस पंक्ति में बड़ी गुढ़ बात है। पत्नी की प्रताड़ना से फांसी लगा रहे थे तो सब उस पति को कमजोर मान कर भूल चुके थे, लेकिन अब तो पंद्रह टुकड़ों में मौत मिल गई। सावधान! प्रेमियों यह घोर कलयुग उच्चस्तर है, जहां निम्नस्तर की कहानियों का बोलबाला रहेगा। ऐसी कमीनेपन की कथा हर ओर गुंजित होगी और समझ में कुछ न आएगा। डायन भी सात घर छोड़ कर मारती है। अब असली डायन भी मानवरूपी हैवानियत से स्तब्ध है। अब कोई पति निर्भीकता से बिस्तर पर सो न सकेगा क्योंकि प्रेम का स्तर इतना गिर चुका है। डायन से भी बुरी है जो शातिराना तरीक़े से अंजाम देती हैं। सीमेंट से चुनवा कर रख देती है।

आज ऐसी मॉडर्न स्त्री को आजादी चाहिए। उसको आजादी जब नहीं मिलती तो ज्यादती दिखती है। ऐसी कथा जैसी मॉडर्न स्त्री चाहती है उसके लटको-झटकों में पुरुष भटके और अटके। वह प्रेम की देवी बनना चाहती है। उसके सौंदर्य के भक्त एक से ज्यादा हों। इसी उधेड़बुन में वह पंद्रह टुकड़ों की आजादी की बादी से आदी हो जाती है। उसके चरित्र पर कलंक लिंक और ब्लिन्क करता है। जिससे उसकी समझ ब्लैंक हो जाता है। उसके प्रेम में पगा पुरुष तो बस मोहरा है। अंततः उसके भाग्य में हथकड़ी से गठबंधन और बेशर्मी का सेहरा तय है।अखबार, सोशल मीडिया और न्यूज चैनल पर यह खबर ट्रेंड कर रहा है। जिससे मासूम पतियों का बैंड बज गया है। अपनी-अपनी पत्नी पर नज़र रखें या बेखबर रहें, बेचारे उलझन में हैं। यह खबर समाज के मुंह पर तमाचा है। क्या जान बचाने को अवैध को वैध माने? भई! बड़े धोखे हैं इस राह पर, जरा संभलना। इस खबर में प्रेम का साइड इफेक्ट देखिए। सभी मासूम पतियों के जनहित में जारी है - 'पंद्रह टुकड़े वाली मोहब्बत ए आजादी कथा।'

विश्व जल दिवस पर

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक स्तम्भकार हैं!

सूने हैं पनघट और प्यासे हैं पोखर-ताल

किसी अनुष्ठान हेतु उद्यत यजमान हथेली में कुश, अक्षत और जल लेकर ही संकल्पबद्ध होता है। तो सरिता एवं सरोवरों में स्नानोपरांत अंजुलि में जल लेकर सूर्य को अर्पित कर लोक के योगक्षेम की कामना के मनोहारी दृश्य भी दिखते हैं। संस्कृत काव्य का प्रथम छंद प्रवाहित सरिता-नीर के जल मध्य ही ऋषि वाल्मीकि के मुख से उच्चरित हुआ था। जल का अर्घ्य देकर ही देवता और अतिथि के अर्चन, वंदन एवं सत्कार करने की हमारी शाश्वत परम्परा अनवरत् गतिमान है। जल ही रक्त का रूप धारण कर हमारी देह में दौड़ रहा है। जल जीवन का पर्याय है, जल मानवीय अस्तित्व, अस्मिता और गौरव का आधार है। जल मर्यादा का बिम्ब बनकर उभरा तो पौरुष, शौर्य और पराक्रम का सुदृढ़ स्तम्भ भी। तभी तो किसी के अमर्यादित कर्म पर कहा गया कि उसके आंख का पानी मर गया है और युद्ध के लिए एक-दूसरे को चुनौती देने में कहते हैं कि देह में पानी बचा हो तो मैदान में आओ।

संस्कृत वांग्मय का आंगन जल-महात्म्य के श्लोंको-ऋचाओं से परिपूर्ण है। 'आपः वंदे मातरम्' कह कर प्राणिमात्र के पोषण के लिए जल को माता की भूमिका में स्वीकार कर श्रद्धा एवं सम्मान अर्पित किया गया है। लोक जीवन में जल वरुण देवता के रूप में पूजित एवं अर्चित हैं। हिंदू परम्परा में जन्म से मृत्यु पर्यंत समस्त कर्मकाण्ड जल के सान्निध्य में ही सम्पन्न होते हैं। नव प्रसूता द्वारा कुआं पूजन की रस्म इसी रीति का आवश्यक अंग बनकर जीवन के सर्वांगीण विकास में जल की उपयोगिता पर लोक की ललित छाप ही है। किसी अनुष्ठान हेतु उद्यत यजमान हथेली में कुश, अक्षत और जल लेकर ही संकल्पबद्ध होता है। तो सरिता एवं सरोवरों में स्नानोपरांत अंजुलि में जल लेकर सूर्य को अर्पित कर लोक के योगक्षेम की कामना के मनोहारी दृश्य भी दिखते हैं। संस्कृत काव्य का प्रथम छंद प्रवाहित सरिता-नीर के जल मध्य ही ऋषि वाल्मीकि के मुख से उच्चरित हुआ था। जल का अर्घ्य देकर ही देवता और अतिथि के अर्चन, वंदन एवं सत्कार करने की हमारी शाश्वत परम्परा अनवरत् गतिमान है। जल ही रक्त का रूप धारण कर हमारी देह में दौड़ रहा है। जल जीवन का पर्याय है, जल मानवीय अस्तित्व, अस्मिता और गौरव का आधार है। जल मर्यादा का बिम्ब बनकर उभरा तो पौरुष, शौर्य और पराक्रम का सुदृढ़ स्तम्भ भी। तभी तो किसी के अमर्यादित कर्म पर कहा गया कि उसके आंख का पानी मर गया है और युद्ध के लिए एक-दूसरे को चुनौती देने में कहते हैं कि देह में पानी बचा हो तो मैदान में आओ। इतना ही नहीं, प्राणीमात्र की उत्पत्ति भी जल में ही हुई है। मानव सभ्यताएं जल के स्रोतों-संसाधनों के आसपास ही विकसित हुईं, इसीलिए उन्हें नदी-घाटी सभ्यता कहा जाता है। पर अति आधुनिकता के दौर में भोगवादी पालने में बैठा मानव जल को केवल उपभोग की वस्तु समझ केवल वर्तमान जी रहा है। उसे बिल्कुल भान नहीं है कि उसके पैरों के नीचे की नमी सूख चुकी है। और यह नमी का सूखना दरअसल मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों का सूखना-छीजना है। प्रकृति और मानव के परस्पर आत्मीय सम्बन्धों का निर्जल एवं रसहीन हो जाना है। ऐसे रसहीन जीवन में कुंठा, घृणा, हिंसा, अमानवीयता तो सम्भव है पर प्रेम, माधुर्य, सौहार्द, सौंदर्य, समता, सद्भाव, अहिंसा एवं शांति का अजस्र स्रोत सम्भव नहीं।

भले ही आज की पीढ़ी ने जल संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्द्धन से दूरी बना मुंह मोड़ लिया हो पर हमारे पूर्वजों ने जल संसाधनों के रूप में कुंआ, तालाब, पोखर, बावड़ी आदि न केवल निर्मित किये बल्कि उनको समाज का एक जरूरी हिस्सा मानकर संवर्धन एवं संरक्षण के लगातार उपाय भी करते रहे हैं। इसीलिए तालाब-कुएं खुदवाना पुण्य का क्षेत्र माना गया और जो सामर्थ्यवान थे वे नैतिक दृष्टि से इस जल संरक्षण परम्परा को सहर्ष स्वीकारते भी रहे। जल स्रोतों को दूषित करना पाप कर्म समझा गया। नदी, सरोवर आदि के निकट भी गंदगी करना, साबुन से कपड़े धोना वर्जित था। नदियां मां समान थी, तभी श्रम क्लांत और आतप से तप्त देह शीतल सरिता जल में अवगाहन कर पुनः नवल ऊर्जा एवं उत्साह संजो लेती। तृषित पथिक पद प्रक्षालन कर थकान मिटा अंजुलि भर जल पान कर तृप्त हो स्वच्छ निर्मल जल के सतत प्रवाह की प्रभु से प्रार्थना करता। पर समय कहां ठहरता है। समय अपनी गति चलता रहा, पीढ़ियां बदलती रहीं और बदलती रही सोच, दृष्टि एवं जल-दर्शन की सांस्कृतिक परम्परा। फलतः जल के महात्म्य से दूरी बनी और एक संकट सामने उपस्थित हुआ। यह संकट मानव की भोगवादी एवं अप्राकृतिक जीवन शैली से उपजा है। संकट की विकरालता का ही परिणाम है कि सम्पूर्ण विश्व में जल के प्रति जागरूकता, संरक्षण एवं संवर्धन के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को विश्व जल दिवस मनाने की घोषणा करनी पड़ी।

विश्व के सामने एक गंभीर समस्या के रूप में उपस्थित जल संकट के प्रति हम जागरूक होकर जल संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन में योगदान देने की बजाय पानी की बर्बादी और संसाधनों को नष्ट होते देख रहे हैं, मौन हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के एक आंकड़े के अनुसार 3-4 अरब लोग प्रत्येक वर्ष एक महीने के लिए पानी की उपलब्धता की भारी कमी से गुजरते हैं। विश्व के सभी देशों में सभी नागरिकों को स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने, जल संरक्षण के महत्व पर जागरुकता का प्रसार करने और जल के समुचित उपयोग करने के लिए 1992 में रियो डि जेनेरियो (ब्राजील) में संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण एवं विकास विषय पर आयोजित सम्मेलन में विश्व जल दिवस मनाने की घोषणा की गई थी। 1993 में पहली बार विश्व जल दिवस मना कर संपूर्ण विश्व का ध्यान इस गंभीर संकट की ओर खींचा गया। तब से प्रत्येक वर्ष एक थीम आधारित आयोजन पूरे विश्व में सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर संपन्न किए जाते हैं, जिसमें स्कूल-कॉलेज में जल संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएं यथा वाद-विवाद, भाषण, परिचर्चा, चित्र बनाना, पोस्टर निर्माण एवं वृत्त चित्र के द्वारा आम जन को जल के भयावह संकट से परिचित कराने का प्रयास किया जाता है। उल्लेखनीय है कि हमारी पृथ्वी का तीन-चौथाई भाग जल से ढका हुआ है। धरती पर उपलब्ध जल का 99 प्रतिशत सागर एवं महासागरों में है। केवल एक प्रतिशत जल ही उपयोग को उपलब्ध है। जिसका लगभग 75 प्रतिशत भाग पहाड़ों की चोटियों और ग्लेशियरों में बर्फ के रूप में जमा हुआ है। केवल चौथाई हिस्से का उपयोग ही सम्भव है जिसे कृषि, उद्योग, बागवानी, पशुपालन एवं मानव के दैनंदिन कार्य व्यवहार में उपयोग किया जाता है। जल दिवस के अवसर पर प्रत्येक वर्ष संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक विश्व जल विकास रिपोर्ट जारी की जाती है जिसमें विभिन्न देशों में जल के संसाधनों, नागरिकों तक की जल की उपलब्धता, घटते भूजल के स्तर और किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख होता है। 2025 की थीम ग्लेसियर संरक्षण है, ग्लेसियर ही नदियों के मायके हैं।

आज मानव के अविवेकी उपभोग के कारण प्रति वर्ष भूजल का स्तर एक मीटर नीचे गिर रहा है। सबमर्सिबल पम्पों के अत्यधिक प्रयोग और धरा गर्भ से अनवरत निरर्थक पानी निकासी, कार, बाईक आदि वाहनों एवं सड़क की धुलाई करने, जल आपूर्ति के पाइपों में लगातार लीकेज होने, नदियों में अशोधित घरेलू प्रयुक्त जल के मिलने, कूड़ा- कचरे का नदियों- सरोवरों में उड़ेलने शहरीकरण एवं कंक्रीट की चादर बिछाते जाने से वर्षा जल का धरती की कोख में न समाकर व्यर्थ बह जाने, विभिन्न उद्योगों में प्रचुरता से प्रयोग करने आदि से यह संकट उपजा है।

जल संरक्षण के लिए जरूरी है कि हमारे मन में जल के प्रति श्रद्धा का भाव जगे। जल के प्राकृतिक संसाधनों नदियों, झीलों, झरनों के अस्तित्व की रक्षा की जाये, मृतप्राय कुंओं, तालाबों को जीवित कर नये तालाब निर्मित किये जायें। दैनंदिन जीवन में जल का उचित उपयोग करें और वर्षाजल के संचय हेतु उपाय किये जायें। बच्चों से संवाद हो। निश्चित रूप से तब पनघट पनिहारिनों के मंगल गीतों से गुंजित होंगे, पोखर-ताल खुशियों से लहरा रहे होंगे। तब यह धरती समृद्ध सलिला होगी और हमारा जीवन भी होगा जल से भरा-भरा, सुरभित, शीतल एवं सतत प्रवाहमय।

जन्मदिन/ उस्ताद बिस्मिल्लाह खां साहब

सविता आनंद

संस्थापक विरासत-ए-बिस्मिल्लाह

'सुर कभी हिंदू या मुसलमान हुआ है?'

उ स्ताद बिस्मिल्लाह खाँ सुरों के ऐसे देवता थे जिनकी सादगी के सामने हर सम्मान ने सर झुकाया। उनकी पारंपरिक सोच हर सम्मान व पुरस्कार से थोड़ा और झुक जाने को प्रेरित करती है। अपनी सादगी विनम्रता और ईमानदारी के वे बेमिसाल उदाहरण थे।

खाँ साहब हमेशा कहते थे, 'सुर भी कभी हिंदू या मुसलमान हुआ है? सुर तो सुर है।' उनके लिए संगीत और शहनाई कोई साधारण कला नहीं, बल्कि इबादत थी। आज की युवा पीढ़ी को उनकी संगीत साधना से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है।

उस्ताद की जयंती पर हम बात करेंगे शहनाई की उस विरासत की जिसे बेनिया बाग़ की उस इमारत ने संजो कर रखा है जिसपर भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब का नाम दर्ज है। जी हाँ उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का वही पुश्तैनी मकान जिसमें कभी उस्ताद रहमत खाँ साहब रहा करते थे।

लगभग 200 साल पुरानी इस इमारत की बूढ़ी कांपती दीवारों ने अपने अंदर सैकड़ों किस्से कहानियों को समाहित किया है।

इसके हर एक स्पर्श में अभी भी कंपन है शहनाई की उस गूंज का जिसे कभी बाल बिस्मिल्लाह ने छेड़ा तो कभी भारत रत्न बिस्मिल्लाह ने। इसकी भीतरी सफेद रंग की दीवारों पर शहर की मशहूर हस्तियों की तस्वीरें इसके खूबसूरत सफ़र को बयां ही नहीं करती बल्कि इसके होने का वजूद भी पेश करती हैं। प्रवेशद्वार से सटे अपने छोटे से कमरे में उस्ताद हर रोज़ अपने दोस्तों और परिजनों के साथ शाम की नमाज़ के बाद बैठकी लगाया करते थे और जीवन के हल्के फुल्के पलों को जिया करते थे। इसी बैठकी में अपने साथियों के साथ वह घंटों होने वाली चर्चा में शामिल रहा करते थे।

इस इमारत ने उनकी बेग़म की उस आवाज़ को भी सुना जब ऊपर रसोईघर के वह चाय बनाकर भेजती थी और उस्ताद अपने हुक्के का आनंद लिया करते थे। ऊपरी मंजिल के छोटे से कमरे में उस्ताद ने अपना पूरा जीवन जीया जिसमें सिर्फ एक चारपाई, कुर्सी, छड़ी, छाता, पानी का घड़ा, एक टेबलफैन था। इसी कमरे में उस्ताद से मिलने हज़ारों लोग आते उनसे बतियाते उनके सादेपन से प्रभावित होते और कुछ कर गुजरने का वादा करके चले जाते पर फ़िर लौट कर न आते। इस इमारत ने वह दौर भी देखा जब दुनिया भर में उस्ताद कामयाबी का परचम लहरा रहे थे, जब अमेरिका में बसने का उन्हें न्यौता आया था और जब बनारस और बिस्मिल्लाह एक हो गए थे।

आज उस्ताद नहीं हैं लेकिन उनका एहसास इसके कण कण में समाहित है। आज देश के लिए उस्ताद भले यादों में ही शामिल दिखते हैं लेकिन यह इमारत अपने अंदर एक इतिहास एक विरासत समेटे है।

एक शिया मुसलमान, जो सुरों की देवी माँ सरस्वती के अनन्य उपासक थे, गंगा स्नान के बाद नमाज़ पढ़ते और फिर काशी विश्वनाथ मंदिर जाकर रियाज़ करते–यह अपने आप में भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति की अद्वितीय मिसाल है। जब भी देश की साझी सांस्कृतिक धरोहर की बात होगी, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ का नाम लिया जाएगा। जब भी शहनाई की बात होगी, उस्ताद की छवि उभर आएगी। जब भी बनारस का ज़िक्र होगा, उस्ताद सर्वोपरि होंगे। और जब भी माँ गंगा की धारा बहेगी, उसमें उस्ताद की आत्मा समाहित होगी।

उस्ताद पर बहुत कुछ लिखा पढ़ा जा चुका है लेकिन अब समय है उनकी विरासत को संजोने का। क्योंकि कुछ विरासतें अनमोल होती है और यही अतीत के पन्नों में कहीं पुस्तकों, कहीं इमारतों तो कहीं किस्से कहानियों में कैद हो जाती है। वक्त के साथ धूमिल होती इन यादों को आने वाली पीढ़ियों के लिए संजोना ही वर्तमान पीढ़ी का दायित्व होता है। उस्ताद की विरासत भी मानवता की सच्ची परिभाषा गढ़ती है। इस धरोहर को जीवंत कर हम नई चेतना का सृजन कर सकते हैं। कहीं ऐसा न हो कि शहनाई की यह धरोहर उपेक्षा की शिकार होकर इतिहास में ही खो जाए।

क्रिकेट की शिखर यात्रा के शिल्पकार 'जज'

जन्म शताब्दी वर्ष : ए. डब्ल्यू. कनमडीकर

विजय रांगणेकर

इंदौर ने देश को कई बड़ी हस्तियां दी हैं। अहिल्या बाई होल्कर, लता मंगेशकर, मकबूल फिदा हुसैन, नारायण श्रीधर बेन्द्रे, मीररंजन नेगी, कर्नल नायडू, सुशील दोषी, मुश्ताक अली और फिल्म लेखक सलीम खान जैसे जाने माने और ख्यात लोगों की सूची में ए. डब्ल्यू. कनमड़ीकर, जिन्हें लोग 'जज साहब' के नाम से जानते थे, का नाम भी शामिल किया जाना चाहिए। यहाँ तक कि 'महाराज' के नाम से संबोधित किए जाने वाले माधवराव सिंधिया भी उन्हें जज साहब ही कहते थे। यह वर्ष उनके जन्म शताब्दी का वर्ष है। सौम्य, शालीन, प्रभावशाली व्यक्तित्व के श्री कनमडीकर अपनी प्रशासनिक क्षमता, नवोन्मेषी सोच, प्रतिबद्धता और पारदर्शी कार्यशैली के लिए विख्यात थे।

कनमड़ीकर सर की भारतीय क्रिकेट के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी और क्रिकेट को व्यावसायिकता से जोड़ने का काम उन्होने बखूबी किया। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड आज समृद्धि के शिखर पर है। क्रिकेट बोर्ड का यह स्वर्णिम महल सिर्फ सोने की ईंटों से नहीं बना है, बल्कि इसमे कनमडीकर जैसे खेल अधिकारियों के परिश्रम, साधना, प्रतिबद्धता और समर्पण का मजबूत कांक्रीट लगा है। जिन्होने अपने जीवन का सबसे बेहतरीन समय क्रिकेट की उन्नति के लिए समर्पित किया है। एक वक्त था, जब विश्वकप की मेजबानी के लिए विभिन्न देशों के क्रिकेट बोर्डों से मिन्नतें करनी पड़ती थी। खिलाड़ियों को विदेशी टूर पर भेजने के लिए क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था लेकिन 1987 में भारत में आयोजित हुए 'रिलायंस विश्वकप' ने क्रिकेट के साथ-साथ खिलाड़ियों की आर्थिक दुनिया भी बदल दी। रिलायंस विश्वकप के आयोजन के शिल्पकार श्री कनमड़ीकर ही थे। यह उनका ही विजन था कि क्रिकेट मैचों के प्रसारण अधिकार बेचें जाएं और आप देखिये कि 1987 के विश्वकप के बाद से ही क्रिकेट खेल व बोर्ड किस तरह से धनवान होता गया है।

1961-62 से कनमडीकर जी पर क्रिकेट का रंग चढ़ना शुरू हुआ था। महारानी उषादेवी, सतीश मल्होत्रा और विधिवेत्ता के.ए. चितले के सहयोग से उन्होने महाराजा यशवंतराव क्रिकेट क्लब की स्थापना 1965 में की। मध्यप्रदेश क्रिकेट संगठन की 10 साल की सदस्यता के बाद वे सचिव बने और चैयरमैन भी रहे। 1975 से 1980 तक उन्होंने भारतीय क्रिकेट बोर्ड में संयुक्त सचिव की कुर्सी संभाली तो 80 के बाद से 1985 तक वे बोर्ड के सचिव रहे। बोर्ड में सचिव के साथ-साथ उन्होंने एशियाई क्रिकेट परिषद के सचिव का कार्यभार भी संभाला। उन्हीं के कार्यकाल में कपिल देव की अगुआई वाली भारतीय टीम 1983 में विश्वकप जीतने में सफल रही। लॉर्ड्स की बालकनी से जब भी कपिल देव के हाथों में विश्वकप की तस्वीर सामने आती है तो उसी बालकनी में कनमडीकर सर भी खड़े नजर आते हैं। तब वे बोर्ड सचिव की हैसियत से विश्वकप में मौजूद थे। 1990 से 1993 तक वे बोर्ड के उपाध्यक्ष रहे। मेरिलबोर्न क्रिकेट क्लब (एमसीसी) ने उन्हें मानद सदस्यता भी प्रदान की। कनमडीकर साहब के प्रयासों से ही इंदौर के नेहरू स्टेडियम में 1983 में पहला वनडे इंटरनेशनल मैच (भारत-वेस्टइंडीज) आयोजित हुआ था।

पानी बचाना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य

जल संचय

श्रीराम माहेश्वरी

लेखक पर्यावरण और जैव विविधता पुस्तक के लेखक हैं।

भारतीय संस्कृति में जल पूजनीय है। पवित्र नदियों के जल को हम माता के रूप में पूजते हैं। प्रयागराज महाकुंभ में 66 करोड़ से ज्यादा लोगों ने स्नान किया। स्पष्ट है कि पवित्र नदियों के प्रति लोगों की अत्यधिक आस्था है। जैसा कि हम जानते हैं कि धरती का उद्गम जल के गर्भ से हुआ है। मनुष्य के जन्म से ही उसका रिश्ता पानी से हो जाता है, जो मृत्यु पर्यंत तक चलता रहता है। मनुष्य का परिचय नदियों के तटीय स्थानों से होता रहा है। प्राचीन काल से ही मानवीय बसाहट ही नदियों के किनारे स्थापित हुई। आज भी गांवों और नगरों का विकास पानी की उपलब्धता को देखते हुए किया जाता है। कृषि विकास हो या औद्योगिक विकास, इसका आधार पानी ही है। मनुष्य सहित सभी जीव प्राणियों के जीवन का आधार जल ही है।

बचपन से हमारे संस्कारों में जल का प्रयोग शुरू हो जाता है। पूजन शुरू करते हैं तो देवी देवताओं को जल अर्पित करते हैं। पाठ शुरू करने पर जल का आचमन करते हैं। कलश यात्रा हो या पूजा में रखे जाने वाले जल कलश की बात हो, हर समय जल की पूजा हमारे संस्कारों में रची बसी है। सुबह उठते ही हम नित्य क्रिया करते हैं। स्नान करते हैं, भोजन बनाते हैं । पौधों और खेतों को पानी देते हैं। पशु पक्षियों को जल देते हैं । इस तरह हम देखते हैं कि दिनचर्या की शुरुआत जल से होती है और रात को सोने तक हम जल का उपयोग करते रहते हैं। स्पष्ट है कि जल के बिना जीवन असंभव है। यह जानते हुए भी हम दैनिक व्यवहार में पानी का अपव्यय करते हैं । जल को प्रदूषित करते हैं। जलापूर्ति की पाइप लाइनों में लीकेज कई महीनों तक चलते रहते हैं। इस ओर हमारा ध्यान नहीं जाता है। हमें जल संरक्षण और जल की बचत की आदत अपनाने की जरूरत है। तभी हम अगली पीढ़ियों को जल उपयोग के लिए दे सकेंगे।

स्वतंत्रता के बाद देश में अनेक बड़े और छोटे बांध बनाए गए। जल संरक्षण की योजनाएं लागू की गई, परंतु आज भी हम देखते हैं कि ग्रीष्मकाल आते ही जलसंकट शुरू हो जाता है। देश के अनेक राज्यों में जल संकट के कारण त्राहिमाम मची रहती है। शुद्ध जल लोगों की पहुंच से दूर होता जा रहा है। खेतों की प्यास बुझ नहीं पा रही है। प्यास से आम आदमी भी परेशान है। जहां जल स्रोत हैं वहां प्रदूषण बढ़ रहा है। हमने ओद्योगिक विकास की

जो राह चुनी उसकी शुरुआत से ही हमने प्रदूषण का ध्यान नहीं रखा, इसलिए यह दुष्परिणाम हमारे सामने आ रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि है कि दुनिया के 2.1 अरब लोगों को पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है। पानी प्राप्त करने के लिए करोड़ों की आबादी ऐसी है, जिसे साफ पानी लेने के लिए कई किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। भूगर्भ के जल में आर्सेनिक और यूरेनियम जैसे प्रदूषक तत्त्व बढ़ रहे है, इससे पानी प्रदूषित हो रहा है और प्रदूषित पानी का उपयोग करने से अनेक बीमारियां हो रही हैं।

इस देश में नदियों को सदानीरा कहा जाता था, परंतु आज स्थिति उलट है। आज नदियां अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही हैं। नदियां सूख रही हैं, उनमें प्रदूषण बढ़ने से वे गंदे नाले में तब्दील हो रही हैं। पानी बचाने की आज हमें पानी बचाने के लिए गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। जल संकट की समस्या के कारण कई स्थानों पर लोगों को पानी के भीतर खड़े होकर पानी बचाने के आंदोलन को करना पड़ता है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि हमारे देश में इतना जल उपलब्ध है, फिर भी जल संकट क्यों बढ़ रहा है। प्राचीन ग्रंथों में जल सूक्त जल महत्त्व का अद्भुत उदाहरण है। पूर्वजों का कहना है कि हम पानी का मान रखेंगे, तो पानी हमारा मान रखेगा। इस बात को हमें समझना होगा।

ऋषि-मुनियों और पूर्वजों ने जल, अग्नि, आकाश और वायु को देवता माना और हमारे कर्मों के साथ पाप पुण्य से उन्हें जोड़ दिया। प्यासे को पानी पिलाना पुण्य का कार्य है। यह हमें बताया। भूखे को भोजन कराने से पुण्य मिलता है, यह हमारे संस्कारों में है। हमारे यहां गर्मियों में प्याऊ खोलकर पानी पिलाने की परंपरा रही है। शहरों में अब धीरे-धीरे यह परंपरा खत्म हो रही है। पानी अब बिकने लगा है।

यह सत्य है कि पानी प्रकृति प्रदत्त है। इसे नैतिक रूप से बेचा नहीं जा सकता। इसके बावजूद निजी व्यापारी और कंपनियां बोतलबंद पानी का व्यापार कर मोटा मुनाफा कमा रही हैं। नगरीय निकाय और पंचायत भी पानी की आपूर्ति करके मोटा शुल्क वसूल कर रही हैं। इस शुल्क में रखरखाव के नाम पर साल दो साल में वृद्धि कर रही हैं। जनता पर इसका बोझ भी पड़ रहा है, फिर भी जिम्मेदार मौन हैं। अन्न,पानी, बिजली, कपड़ा, ये मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं हैं। सरकार को चाहिए कि इन चीजों पर शुल्क न बढ़ाया जाए। स्टेशन, बस स्टैंड और बस्तियों में निशुल्क पानी जनता को मुहैया कराया जाए। जगह-जगह नगरीय निकायों द्वारा प्याऊ लगवाकर प्यासे लोगों को पानी पिलाया जाए। शुल्क वसूल करके यदि जल दिया जा रहा है तो यह व्यापार है, धर्म नहीं। अन्न जल से प्रजा का पोषण करना राज दायित्व है। यही हमारी संस्कृति है।

सरकार और नगरीय निकायों को इस विषय में गंभीरता से सोचना चाहिए। साथ ही पानी की बचत करना जनता और उपभोक्ताओं का पहला कर्तव्य होना चाहिए। जल की बूंद बूंद का महत्व समझाने के लिए जन जागरूकता की आवश्यकता है।

सर्व ब्राह्मण समाज का होली मिलन 23 को

बैतूल। सर्व ब्राह्मण समाज का होली मिलन समारोह 23 मार्च रविवार को शुक्ला चौक बैतूल बाजार स्थित राम मंदिर में आयोजित किया जा रहा है। होली मिलन समारोह शाम 4 बजे से होगा। सर्व ब्राह्मण समाज के पदाधिकारियों ने जिलेभर से विप्र बंधुओं से होली मिलन में शामिल होकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

मासूम की कुएं में गिरने से मौत

बैतूल। ग्राम बडगीखुर्द में एक मासूम की कुएं में गिरने से मौत हो गई। शुक्रवार सुबह मृतक का जिला चिकित्सालय में पोस्टमार्टम कर परिजनों को सौंप दिया है। पाढर चौकी प्रभारी वाहिद खान ने बताया कि पाढर क्षेत्र के ग्राम बडगीखुर्द में गुरूवार को रियांश पिता सुखदेव इवने उम्र 4 वर्ष घर के पास गेंद खेल रहा था। बच्चा गेंद को पकडने के लिए पीछे दौड़ा, इसी दौरान गेंद सहित बच्चा कुएं में गिर गया। पानी में डूबने से मासूम की मौत हो गई। मासूम देर तक नहीं दिखने से परिजनों ने उसकी तलाश करना शुरू कर दी। जब कुएं में जाकर देखा तो गेंद सहित मासूम का शव कुएं में पड़ा मिला। हादसे की जानकारी लगते ही पाढर पुलिस मौके पर पहुंच और मासूम के शव को कुएं के बाहर निकाला। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

पुरानी रंजिश में दो भाईयों पर चाकू से किया हमला

बैतूल। पुरानी रंजीश को लेकर युवकों के बीच चाकू बाजी हो गई। इस घटना में दो युवकों को चोटे आई है। कोतवाली पुलिस ने मिली जानकारी के मुताबिक सीमेंट रोड मामाजी ज्वेलर्स के पास गली में गुरूवार रात लगभग 9 बजे पुरानी रंजीश को लेकर कुछ युवकों के बीच चाकू बाजी हो गई। पुलिस ने बताया कि खंजनपुर निवासी सुक्का, राज और बादशाह उईके ने स्वाप्रिल चौरसिया के साथ मारपीट करना शुरू कर दी। छोटे भाई पीटते देख बचाने बडा भाई सपन भी पहुंच गया। युवकों के बीच गाली-गलौच के बाद हाथापाई शुरू हो गई। विवाद में राज उईके ने स्वप्रिल के सिर पर चाकू से हमला कर दिया और सपन के साथ जमकर मारपीट की। चाकू से हमला करने पर युवक के सिर पर चोट आई है। पुलिस के अनुसार युवक के बीच विवाद होने का कारण पुरानी रंजीश है। शिकायत पर पुलिस ने सुक्का, राज और बादहशा के खिलाफ मामला पंजीबद्ध कर जांच शुरू कर दी है। घटना को अंजाम देने के बाद से ही आरोपी फरार चल रहे है, वहीं पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है।

सावंगीधाम पहुंचे नोवर्टिस कंपनी थाईलैंड के वैज्ञानिक

बैतूल। जिले के सावंगी स्थित प्रसिद्ध मां बगलामुखी मंदिर में नित्य हो रहे यज्ञ और अनुष्ठानों से भक्तों के जीवन में चमत्कार हो रहे हैं। दस महाविद्याओं में आठवीं महाविद्या के रूप में पूजनीय मां बगलामुखी को माता पीतांबरा भी कहा जाता है। यह भगवती पार्वती का उग्र स्वरूप मानी जाती हैं और भक्तों को भोग तथा मोक्ष दोनों प्रदान करती हैं। यहां हरिद्रा गणपति और श्रीं बटुक भैरव जी की भी पूजा होती है। मुंबई के अमोल कुंदे, जो वर्तमान में नोवर्टिस फार्मास्युटिकल कंपनी में कंप्यूटेशनल बायोलॉजिस्ट के पद पर कार्यरत हैं, मां बगलामुखी की कृपा से अपने जीवन में आए परिवर्तन को लेकर सावंगी पहुंचे। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के दौरान जब वे थाईलैंड की एक कंपनी में वैज्ञानिक के रूप में कार्यरत थे, तब उन्हें मां बगलामुखी की शक्ति का एहसास हुआ। विश्व जब इस महामारी से जूझ रहा था, उस समय उन्होंने मां बगलामुखी के मंत्रों का जाप किया, जिससे उनके जीवन में नई राह खुली और वे विदेश छोडक़र भारत लौट आए। अमोल कुंदे ने माँ बगलामुखी सिद्ध साधक आचार्य रविंद्र मानकर के आध्यात्मिक यूट्यूब चैनल से जुडक़र अपनी कुण्डली का विश्लेषण करवाया और उनके मार्गदर्शन से संतुष्ट होकर सावंगी धाम में मां बगलामुखी की मंत्र दीक्षा प्राप्त की। उन्होंने मंदिर में यज्ञ और अनुष्ठान करवाकर अपने अनुभव को भक्तों के बीच साझा किया। सावंगी स्थित मां बगलामुखी मंदिर जिले का एकमात्र ऐसा महाविद्या पीठ है, जहां देशभर से भक्त आकर यज्ञ और पूजा-अनुष्ठान करवा रहे हैं। मान्यता है कि जिस स्थान पर मां बगलामुखी का प्राकट्य होता है, वहां वे स्वयं अपने भक्तों को संकटों से मुक्त करती हैं।

शहरवासियों पर करीब 6 करोड़ बकाया, कर्मचारियों के अवकाश पर प्रतिबंध

वित्तीय वर्ष की समाप्ति को 10 दिन शेष, नपा 35 प्रतिशत ही कर पाई वसूली

संजय द्विवेदी, बैतूल। वित्तीय वर्ष की समाप्ति को अब सिर्फ 10 दिनों का समय शेष बचा है। ऐसे में शासन के लक्ष्य के अनुरूप राजस्व वसूली को लेकर नगरपालिका ने राजस्व शाखा को अवकाश के दिनों में भी खोले रखने के आदेश जारी कर दिए हैं। राजस्व संग्रहण कार्य में लगे सभी कर्मचारियों के समस्त प्रकार के अवकाशों पर भी प्रतिबंध लगा दिया है। राजस्व वसूली कर्मचारियों को अपने मोबाइल नंबर चालू रखने तथा मुख्यालय पर उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं। दरअसल नगरपालिका शहर के वार्डो में रहने वाले लोगों से संपत्ति, जलकर सहित अन्य करों की वसूली करती है। लेकिन इस वर्ष नगरपालिका की राजस्व वसूली 35 फीसदी ही हो पाई है। ऐसे में वसूला का लक्ष्य हासिल करने के लिए राजस्व वसूली कर्मचारियों को टारगेट भी दिया गया है। बता दे कि नपा की राजस्व डिमांड हर साल बढ़ रही है, जो बकाया राशि शेष रह जाती है उसे अगले वित्तीय वर्ष में जोड़ दिया जाता हैं। जिसकी वजह से आने वाले वित्तीय वर्ष की डिमांड बढ़ जाती है। यहीं कारण है कि नपा का राजस्व संग्रहण का कार्य शत-प्रतिशत पूर्ण नहीं हो पाता है। यदि नगरपालिका इस साल भी पूरी वसूली नहीं करती हैं तो अगले वित्तीय वर्ष में डिमांड 10 करोड़ से और बढ़ जायेगी।

पिछले 2023-24 का ही करीब 2.50 करोड़ बकाया

वर्ष 2023-24 का करीब ढाई करोड़ रुपए बकाया था, जो इस वित्तीय वर्ष की डिमांड में जोड़ दिए जाने के कारण कुल डिमांड 10 करोड़ से ऊपर पहुंच गई है। नगरपालिका के राजस्व विभाग ने विगत वित्तीय वर्ष में 64.15 फीसदी राजस्व वसूली कर ली थी, लेकिन इस साल यह आंकड़ा महज 35 प्रतिशत तक ही पहुंच पाया है। नगरपालिका के राजस्व वसूली का कार्य इसी तरह धीमी गति से चलता रहा तो वित्तीय वर्ष की समाप्ति तक नपा का राजस्व वसूली लक्ष्य तक पहुंच पाना मुश्किल लग रहा है।

कर का नाम	कुल डिमांड 2024-25	वर्तमान तक कुल वसूली	वर्ष 2024-25 वर्तमान तक वसूली का प्रतिशत
2	3	4	5
संपत्ति कर	37078418	18164792	48.99
समेकित कर	8581354	2284257	26.62
सामान्य जलकर	801761	362556	45.22
जल शुल्क	27987191	6645180	23.74
दुकान/भवन भूमि किराया	8350753	2223010	26.62
शिक्षा उपकर	9076274	2898977	31.94
नगरीय विकास उपकर	10274026	3350054	32.61
योग:-	102149777	35928826	35.17

शहरवासियों पर करीब 6 करोड़ बकाया

शहरवासियों पर करीब 6 करोड़ से अधिक का टैक्स बकाया है। नगरपालिका को इस वित्तीय वर्ष 2024-25 में कुल 10 करोड़ 21 लाख 49 हजार 777 रूपये वसूली का लक्ष्य मिला था, जिसमें से नपा का राजस्व अमला 3 करोड़, 59 लाख 28 हजार 826 रूपये की वसूली कर पाया है, जो कि लक्ष्य के 35.17 फीसदी है। वहीं पिछले वित्तीय वर्ष 2023-24 की बात करे तो नपा को कुल 9 करोड़ 51 लाख 56 हजार 141 रूपये की वसूली का लक्ष्य मिला था, जिसमें से नपा ने 6 करोड़ 10 लाख 41 हजार 384 रूपये की वसूली की थी। शेष दो करोड़ 51 लाख 12 हजार 558 रूपये वसूली शेष रह गई थी। इस तरह नपा को अभी 6 करोड 62 लाख 20 हजार 951 रूपये वसूलना बाकी है।

संपत्तिकर और जलशुल्क का करोड़ों बकाया

शहर में करीब 20665 मकान है, वहीं 13500 नल कनेक्शन दिये गये है। नपा मकान मालिकों और नल कनेक्शनधारियों से संपत्ति व जल शुल्क वसूल करती है। नगरपालिका के मुताबिक संपत्तिकर की कुल डिमांड 3 करोड़ 70 लाख 78 हजार 418 रुपए है। जिसके विरूद्ध नगरपालिका को अभी तक 1 करोड़ 81 लाख 64 हजार 762 रूपये वसूली मिल सकी हैं, जो कुल वसूली के 48.99 प्रतिशत है। इसी प्रकार जल शुल्क का शहरवासियों पर 2 करोड़ 13 लाख 42 हजार 011 रूपये बकाया है। बता दे कि नपा के पास राजस्व अमले की टीम मौजूद है। यह टीम टैक्स की वसूली के लिए काम करती है, लेकिन वित्तीय वर्ष समाप्ति को महज 10 दिन का समय शेष है और अभी तक नपा सिर्फ कुल 35 फीसदी की करों की वसूली कर पाई है।

नपा की वित्तीय स्थिति पर पड़ रहा असर

शहर के लोग जागरूक होने के बावजूद विभिन्न करों का भुगतान देने में लेटलतीफी करते आए हैं। इसका खामियाजा नपा की वित्तीय स्थिति बिगड़ते जाती है। सीएमओ ने पूर्व में शहर के 33 वार्डों में अलग-अलग दिनों संपत्ति कर वसूली के लिए अभियान चलाने और करो की वसूली के लिए टीम भी बनाई थी। नपा ने 33 वार्डों में शिविर भी लगाए, लेकिन अपेक्षाकृत वसूली नहीं हो पाई। वैसे नपा सालभर करों की वसूली करती है, लेकिन वित्तीय वर्ष की समाप्ति में करों की वसूली का अभियान तेज कर देती है। जागरूक नागरिकों का कहना है कि राजस्व अमले के पीछे राजस्व वसूली के अलावा कई अन्य काम भी सौंपे जा रहे हैं। इस वजह राजस्व वसूली का काम पिछड़ जाता है।

नगरपालिका के कर संग्रहण की स्थिति

कर का नाम	कुल डिमांड	वर्तमान वसूली	प्रतिशत
संपत्ति कर	37078418	18164792	48.99
समेकित कर	8581354	2284257	26.62
सामान्य जलकर	801761	362556	45.22
जल शुल्क	27987191	6645180	23.74
दुकान/भवन भूमि किराया	8350753	2223010	26.62
शिक्षा उपकर	9076274	2898977	31.94
नगरीय विकास उपकर	10274026	3350054	32.61
योग	102149777	35928826	35.17

इनका कहना है -

राजस्व वसूली के लिए कर्मचारियों को लक्ष्य दिया गया है। राजस्व वसूली के लिए दल गठित कर सभी कर्मचारियों की ड्यूटी लगा दी गई है। कर्मचारियों के सभी प्रकार के अवकाशों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। अवकाश के दिनों में भी राजस्व शाखा खुली रखी जाएगी ताकि लोग आसानी से टैक्स जमा कर सके।

- ब्रजगोपाल परते, वरिष्ठ राजस्व अधिकारी नगरपालिका बैतूल

पीआईसी की बैठक में वार्षिक बजट की अनुशंसा

पेवर ब्लाक, नाली, सड़क समेत अन्य निर्माण कार्यों की दरें स्वीकृत

बैतूल/सारणी। नगर पालिका परिषद सारणी में शुक्रवार प्रेसिडेंट इन काउंसिल की बैठक का आयोजन नपा अध्यक्ष के कक्ष में से किया गया। इसमें विभिन्न 88 बिंदुओं पर चर्चा की गई। पीआईसी सदस्यों ने सभी प्रस्ताओं पर चर्चा के बाद उन्हें मंजूरी दी। मुख्यत- नगर पालिका के वार्षिक बजट 2025-26 का पीआईसी ने परिषद हेतु अनुशंसा की। इसे अब स्वीकृति के लिए परिषद के सम्मेलन में प्रस्तुत किया जाएगा। बैठक में निर्माण, कार्यों की दरों को स्वीकृत किया गया। नगर पालिका में अध्यक्ष कक्ष में अध्यक्ष किशोर बरदे, पीआईसी सदस्य दशरथ सिंह जाट, भीम बहादुर थापा, गणेश महस्की, भावना बंडू माकोड़े, रोशनी संदीप झपाटे, संगीता धुर्वे, मुख्य नगर पालिका अधिकारी सी.के. मेश्राम की उपस्थिति में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सहायक लेखाधिकारी ब्रजेश नागर ने वार्षिक बजट 2025-26 प्रस्तुत किया। इसे पीआईसी ने परिषद के लिए अनुशंसित किया। बैठक में सभी शाखा प्रभारी, उपयंत्री उपस्थित थे। नगर पालिका अध्यक्ष एवं पीआईसी सदस्यों ने बंदरों के पकडने के अभियान को तेजी से करने के निर्देश दिए। बैठक में शासन के रेबिज मुक्त अभियान के तहत आवारा श्वानों के जनसंख्या प्रबंधन हेतु आवश्यक कार्यवाही करने के प्रस्ताव पर चर्चा हुई। पीआईसी की बैठक में वार्ड 2, 3, 4, 8, 10, 11, 12, 13, 14, 18, 27, 28, 30, 35, 31, 32 में पेवर ब्लाक फिक्सिंग, वार्ड 3, 5, 8, 15, 16, 17, 19, 20, 22, 25, 26, 36 में आर.सी.सी. नाली निर्माण, वार्ड 1, 5, 6, 15, 19, 29, 36 में सी.सी. रोड रिन्यूवल कोट, वार्ड 07 में एक्यूप्रेशर पार्क की बाउण्ड्रीवाल निर्माण, वार्ड 24 में व्हालीवाल ग्राउण्ड में सांस्कृतिक मंच कमरा सहित एवं शौचालय निर्माण, वार्ड 09 में मंगल भवन के पीछे निर्मित भंडारा कक्ष टीन शेड का मरम्मत कार्य, वार्ड 19 में पर प्रीकास्ट स्लेब निर्माण, वार्ड 24 में पशु चिकित्सालय निर्माण, वार्ड 7 में न्यू वेलफेयर सारनी के समीप सार्वजनीक शौचालय निर्माण, वार्ड 17, 21, 23 में यू शेप नाली निर्माण, वार्ड 33 में बी.टी. रोड रिन्यूवल कोट, वार्ड 29 में छवि निकुंज के चारों ओर बाउंड्रीवाल, वार्ड 34, 35 में आर.सी.सी. नाला निर्माण, पार्कों के संचालन, संधारण कार्य, वार्ड 18 में आर.सी.सी. रिटेर्निंग वाल निर्माण, निर्माण, मरम्मत सामग्रियों की दरें आमंत्रित करना। इसके अलावा निकाय में कार्यरत आउटसोर्स अस्थायी कर्मचारियों, दै.वे. भो. श्रमिकों को, दिनांक 01 अप्रैल 2024 से बढ़ी हुई दरों पर निर्धारित पुनरीक्षित वेतनमान मय एरियर सहित, भुगतान करने पर भी निर्णय हुआ।

राशि जमा नहीं करने वालों के पीएम आवास आवंटन होंगे निरस्त- प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत राशि जमा नहीं करने वाले हितग्राहियों के आवंटन निरस्त किए जाएंगे। ऐसे हितग्राही जिन्होंने पंजीयन हेतु 20 हजार या कम राशि जमा की है। अस्थाई आवंटन के पश्चात भी वे देय अंशदान राशि जमा नहीं कर रहे हैं, उनके आवंटन निरस्त कर नवीन हितग्राहियों को आवास आवंटन किए जाएंगे।

आरडीपीएस के छात्र धीरज खाकरे ने गेट में हासिल की ऑल इंडिया रैंक 99

गेट-2025 में शामिल हुए थे 6 लाख 53 हजार 292 परीक्षार्थी

बैतूल। प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में पास आउट मेधावी छात्र धीरज खाकरे ने ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग गेट 2025 परीक्षा में ऑल इंडिया रैंक हासिल कर बैतूल का नाम गौरान्वित किया है। गेट 2025 परीक्षा में देश भर के 6 लाख 53 हजार 292 परीक्षार्थी शामिल हुए थे। ऑल इंडिया रैंक 99 हासिल करने पर धीरज खाकरे को राष्ट्रीय स्तर के ख्यातिनाम तकनीकि संस्थान आईआईटी खडगपुर में मॉस्टर ऑफ आर्किटेक्चर एण्ड प्लानिंग में एडमीशन होना तय माना जा रहा है। गेट 2025 में 99 ऑल इंडिया रैंक हासिल करने वाले मेधावी छात्र धीरज मोती वार्ड न्यू बारस्कर कालोनी बैतूल निवासी सिविल कांट्रेक्टर दिनेश खाकरे एवं श्रीमती अनिता खाकरे के सुपुत्र है। धीरज आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक अध्ययनरत रहे। वर्तमान में वे आईपीएस कॉलेज इंदौर में बैचलर ऑफ आर्किटेक्चर अंतिम वर्ष में अध्ययनरत है। धीरज खाकरे की इस उत्कृष्ट सफलता के लिए जिले के जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारियों, आर.डी.पी.एस. बैतूल की डायरेक्टर श्रीमती ऋचु खण्डेलवाल, प्राचार्य, शिक्षकों, परिजनों, समाजिक बंधुओं, इष्टमित्रों ने उन्हें बधाई देकर उज्जवल भविष्य के लिए कामना की है।

शिशु रोग शल्य चिकित्सा शिविर में 40 बच्चों की हुई स्क्रीनिंग

बैतूल। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत शुक्रवार को डीईआईसी जिला चिकित्सालय परिसर बैतूल में शिशु रोग शल्य चिकित्सा स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ रविकांत उइके ने बताया कि शिविर में इन्वाइनल हार्निया के 8, अम्लाइकल हार्निया के 2, क्लैफ्ट लिप पैलेट के 1, हाइपोस्पेडियास के 2, ऐनोरेक्टर मालफॉर्मेशन के 1 एवं अन्य 26 बच्चों की स्क्रीनिंग की गई। चिन्हित बच्चों को 24 मार्च 2025 को पाढर चिकित्सालय में डॉ.धुव्र घोष बाल्य शल्य क्रिया विशेषज्ञ सीएमसी लुधयाना द्वारा स्क्रीन किया जाकर यथोचित उपचार दिया जाएगा। शिविर में जिला अस्पताल से जनरल सर्जन डॉ.निकेश चौकीकर, शिशु रोग चिकित्सक डॉ सुरेन्द्र कुशवाह, डीआईसी मैनेजर योगेन्द्र दवंडे, स्पेशल एजुकेटर कमलेश कास्लेकर, एनएमए श्री शेखर हारोडे, पाढर चिकित्सालय से डायरेक्टर डॉ राजीव चौधरी, जनरल सर्जन डॉ राहुल एलफ्यूज, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ जोश्ना, मेडिकल ऑफीसर डॉ अनुपमा चांदेकर, अस्पताल प्रबंधक जोसेफ सेमसन एवं शब्बीर मसीह एवं जिला शीघ्र हस्तक्षेप केन्द्र का स्टाफ मौजूद रहा।

14 माह बाद भी अधर में लटका परमंडल जोड़ से मुलताई मार्ग निर्माण

ठेकेदार ने मार्ग की खुदाई कर बढ़ा दी लोगों की समस्या

बैतूल/मुलताई। लोक निर्माण विभाग द्वारा मूलताई नगर के मध्य से गुजरने वाले परमंडल जोड से मुलताई 1 किलोमीटर मजबूती निर्माण मार्ग एवं साईखेड़ा बिसनूर मार्ग निर्माण का 300 लाख रुपए लागत का ठेका राही कंस्ट्रक्शन नागपुर को दिए अब 1 साल से अधिक हो चुका है। ठेकेदार को उक्त कार्य चार माह में पूर्ण करना था, किंतु ठेकेदार 14 माह बाद भी 10त कार्य पूर्ण नहीं कर पाया है। जिसका खामियाजा नगर वासियों को भुगतना पड़ रहा है। ठेकेदार द्वारा समय सीमा पर कार्य पूर्ण ना करने पर लोक निर्माण कार्यपालन यात्री बैतूल द्वारा 24 जनवरी 025 ठेका निरस्त की कार्रवाई की गई थी, किंतु बाद में बताया कि ठेका निरस्त न करके ठेकेदार को कार्य पूर्ण करने हेतु समय दिया गया है, किंतु यह समय दिए भी अब दो महा हो गया है। इन दो माह में भी मुलताई प्रमंडल 1 किलोमीटर एवं साइखेड़ा बिसनुर मार्ग के निर्माण कार्य में कोई गति नहीं आ पाई है।

ठेकेदार ने निर्माण कार्य को गति देने की बजाय बढ़ा दी समस्या

मुलताई उक्त दोनों सडक़ का ठेका निरस्त करने की कार्रवाई के बाद ठेकेदार को समय देने के लिए भी अब दो माह बीत चुके हैं। लोक निर्माण विभाग का यह मानना था कि ठेकेदार निर्माण कार्य को गति देगा, किंतु निर्माण कार्य को गति मिलना तो दूर साईखेडा बिसनुर मार्ग प्रारंभ ही नहीं हुआ ,मुलताई परमंडल मार्ग की समस्या और अधिक बढ़ गई है। ठेकेदार ने इन दो माह में प्रमंडल से मुलताई की ओर 1 किलोमीटर मार्ग के कुछ भाग में डामरीकरण की लेयर को तोड़ कर कहीं-कहीं पर मुरम के ढेर लगा दिए जिससे नागरिकों की समस्या और बढ़ गई है। जिसके चलते मार्ग की समस्या अधिक बढ़ गई है। और वर्तमान में इस मार्ग पर दो पहिया वाहन लेकर चलना भी कठिन है। सबसे बड़ी चिंता का विषय यह है कि ठेकेदार द्वारा इस प्रमुख मार्ग पर सुरक्षा के इंतजाम भी नहीं किए गए हैं।

नगर का प्रमुख मार्ग है मुलताई परमंडल मार्ग

नगर के मध्य से गुजरने वाला परमंडल जोड़ से बस स्टैंड की ओर मार्ग नगर वासियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मार्ग है। बैतूल परमंडल जोड़ के मुलताई की ओर जहां से यह मार्ग चौड़ीकरण कीया जाना था मार्ग कम चौड़ा होने से यहां आए दिन दुर्घटनाएं होती है, जिसे देखते हुए लोक निर्माण विभाग ने मूलताई परमंडल जोड़ से मुलताई की ओर 1 किलोमीटर मजबूती कार्य लागत 150 लाख रुपए का ठेका राही कंस्ट्रक्शन को दिया था जिसके अंतर्गत मार्ग का चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण करण 1 किलोमीटर में डामरीकरण किया जाना था। ठेकेदार द्वारा किए गए अनुबंध के अनुसार यह 21 जून 2024 तक पूर्ण किया जाना था, किंतु मामूली कार्य करके ठेकेदार गायब हो गया था जो अब लौट है, तब भी कार्य को गति नहीं मिल सकी है अब यह देखना होगा कि लोग निर्माण विभाग क्या कार्रवाई कर पता है।

इनका कहना है -

परमंडल जोड़ से मुलताई की ओर 1 किलोमीटर रोड निर्माण के लिए ठेकेदार को समय सीमा बढा दी गई है। कार्य संतोषजनक नहीं होने पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

- डी आर करमकर, उपयंत्री, लोक निर्माण विभाग मुलताई

आदिवासी कांग्रेस ने मंडला में फर्जी एनकाउंटर के खिलाफ किया प्रदर्शन

पीड़ित परिवार को न्याय दिलाने कांग्रेस ने सौंपा राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन, हत्याकांड की सीबीआई जांच की मांग की

बैतूल। मध्यप्रदेश के मंडला जिले में हुए एनकाउंटर के विरोध में बैतूल जिला आदिवासी कांग्रेस ने शुक्रवार 21 मार्च को जोरदार प्रदर्शन किया। सुबह 11.30 बजे कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने रानी दुर्गावती प्रतिमा से जिला कलेक्टर कार्यालय तक रैली निकाली और राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा। यह विरोध प्रदर्शन मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी, ऑल इंडिया आदिवासी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विक्रांत भूरिया और प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम के निर्देश पर किया गया। आदिवासी कांग्रेस ने फर्जी एनकाउंटर का आरोप लगाते हुए मांग की कि हिरण सिंह बेगा की हत्या की निष्पक्ष जांच हो और दोषियों को सख्त सजा मिले। कांग्रेस जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने कहा कि हिरण सिंह बेगा का फर्जी एनकाउंटर सरकार की आदिवासी विरोधी मानसिकता को दिखाता है। निर्दोष आदिवासियों को नक्सली बताकर मारा जा रहा है, जो पूरी तरह अन्याय है।

प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम ने कहा कि भाजपा सरकार निर्दोष आदिवासियों की हत्या कर रही है। उन्होंने कहा कि इस घटना में गरीब मजदूर को नक्सली बताकर मार दिया गया, जिससे उसके बच्चे अनाथ हो गए और परिवार के सामने जीवन यापन की समस्या खड़ी हो गई। टेकाम ने मांग की कि पीड़ित परिवार को 2 करोड़ रुपये का मुआवजा दिया जाए, एक सदस्य को सरकारी नौकरी मिले और सरकार नक्सलियों के नाम पर आदिवासियों की हत्याएं बंद करे। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि आदिवासियों पर हो रहे अत्याचारों पर रोक नहीं लगी तो पूरे प्रदेश में बड़ा आंदोलन खड़ा किया जाएगा।

आदिवासी जज की निगरानी में निष्पक्ष जांच की मांग- आदिवासी कांग्रेस ने इस हत्याकांड की निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए राष्ट्रपति से अपील की है कि हाईकोर्ट के जज की निगरानी में पांच सदस्यीय जांच समिति गठित की जाए, जिसमें एक आदिवासी जज और आदिवासी पक्ष-विपक्ष के विधायक शामिल हों। इसके अलावा, थाना प्रभारी, पुलिस अधीक्षक और हॉक फोर्स के अधिकारी को तत्काल निलंबित करने की मांग की गई है। ज्ञापन में यह भी कहा गया है कि पीड़ित परिवार को सरकार दो करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता दे, एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए और बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का पूरा खर्च उठाया जाए। साथ ही, नक्सलवाद के नाम पर निर्दोष आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार को बंद करने और जल-जंगल-जमीन से बेदखल करने की प्रक्रिया पर रोक लगाने की भी मांग की गई है। विरोध प्रदर्शन एवं ज्ञापन सौंपने वालों में कांग्रेस जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे, आदिवासी कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष रामू टेकाम, जिला अध्यक्ष डॉ. रमेश काकोडिया, अरुण गोठी, प्रदेश सचिव समीर खान, रमेश गायकवाड़, धनराज इवने और सरपंच ढप्पा शामिल थे।

प्रसंगवश

राजभाषा : राष्ट्रभाषा : मातृभाषा

विजयदत्त श्रीधर

संपूर्ण स्वाधीनता के लिए भारत को चाहिए भाषा - स्वराज

भाषा केवल संवाद और अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है। किसी भी समाज की संस्कृति की संवाहक होती है भाषा। यह मनुष्य को जड़ों से जोड़ने का दायित्व निभाती है। मनुष्य को स्वयं को पहचानने और परिभाषित करने का माध्यम होती है। भाषा का प्रश्न राष्ट्र की अस्मिता का भी है। महात्मा गांधी ने भाषा के संबंध में स्पष्टोक्ति की है- जिस राष्ट्र की अपनी कोई भाषा नहीं होती, वह राष्ट्र गूँगा होता है। मूर्धन्य संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी का मत और अधिक मुखर एवं प्रखर रहा है-'मुझे देश की आजादी और भाषा की आजादी में से किसी एक को चुनना पड़े तो मैं निस्संकोच भाषा की आजादी चुनूँगा। देश की आजादी के बावजूद भाषा की गुलामी रह सकती है। लेकिन अगर भाषा आजाद हुई तो देश गुलाम नहीं रह सकता।'

भाषा के संदर्भ में व्यापक परिप्रेक्ष्य में विचार करना अधिक उपयुक्त रहेगा। ये परिप्रेक्ष्य हैं- मातृभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा। वस्तुतः एक हजार से अधिक भाषाएँ जिस भारत की संस्कृति को विशिष्ट बनाती हैं, उसे भाषायी स्वराज की सर्वाधिक आवश्यकता है। क्योंकि अंग्रेजी की गुलामी ने भारतीय मानस को मर्माहत कर रखा है, हीन भावना से भरा है। स्वत्व और स्वाभिमान को खण्डित किया है। जब तक भारत में भाषायी स्वराज अस्तित्व में नहीं आता तब तक स्वाधीनता को संपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

जिन तीन परिप्रेक्ष्य का उल्लेख मैंने किया है, उनसे पहले इस समय देश के कुछ राज्यों में हिन्दी की जगह अंग्रेजी को स्थान देकर जो विषम स्थिति पैदा की गई है, उसकी चर्चा करना आवश्यक है। यह स्थिति दुखद है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी, जब हम भारतीय भाषाओं के उत्थान और राजकीय कार्यों में उनके उपयोग के प्रयास करते रहे हैं, देश के चार राज्यों ने विदेशी भाषा अंग्रेजी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में बनाए रखा है। ये राज्य- अरुणाचल, मेघालय, नगालैंड और सिक्किम हैं। तमिलनाडु, जहाँ राजनीतिक कारणों से हिन्दी विरोधी आंदोलन होते हैं, उसने तमिल को तो अपनी राजभाषा बनाया, किंतु उसकी दूसरी आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। तमिलनाडु तीसरी भाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार नहीं करना चाहता। मणिपुर ने मैतेयी अथवा मणिपुरी को अपनी प्रथम भाषा बनाया लेकिन दूसरे स्थान पर अंग्रेजी को रखा है। यही ओडिशा ने भी किया है, जहाँ पहली भाषा ओडिया तो दूसरी अंग्रेजी है। खेद की बात यह है कि हिमाचल प्रदेश और राजस्थान जैसे हिन्दी भाषी राज्यों ने हिन्दी को तो प्रथम आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया है, परंतु यहाँ भी दूसरी भाषा के रूप में किसी अन्य भारतीय भाषा की जगह अंग्रेजी को बैठाया गया है। मिजोरम ने अपनी आधिकारिक भाषाओं में मिजो और अंग्रेजी के साथ हिन्दी को भी स्थान दिया है।

राजभाषा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में प्रावधान है-''देवनागरी में लिखित हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा होगी और संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप अंतरराष्ट्रीय होगा।' भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को प्रभावशील हुआ। इसमें हिन्दी को राजभाषा की मान्यता प्रदान की गई। परंतु 15 वर्ष तक अंग्रेजी में भी राज-काज चलाते रहने का प्रावधान किया गया। वस्तुतः संकल्प का विकल्प नहीं होता। परंतु हिन्दी को राजभाषा की मान्यता प्रदान करने के संकल्प का विकल्प अंग्रेजी के रूप में बनाए रखा गया। यह स्वीकार करने में कतई संकोच नहीं होना चाहिए कि अंग्रेजी के विकल्प ने हिन्दी के संकल्प को कमजोर किया और एक सीमा तक अर्थहीन भी बनाया। मूलसंकल्प के अनुसार सन् 1965 में भारत को अंग्रेजी की गुलामी से मुक्ति मिल जानी थी। परंतु इसके पहले ही राजभाषा हिन्दी राजनीतिक षड्यंत्रों का शिकार हो गई। तमिलनाडु में उठे विरोध के बवंडर में संविधान सभा के सदस्यों की भावनाएँ और संकल्प ढह गए। हिंसक विरोध और राजनीतिक स्वार्थों के दबाव में राजभाषा अधिनियम में संशोधन कर दिया गया। संशोधित अधिनियम में यह प्रावधान किया गया कि'संविधान के प्रारंभ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि समाप्त होने के बाद भी संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाती रहेगी।' व्यवहार में इन संशोधनों का परिणाम यह निकला है कि अंग्रेजी ही राजकाज, संसदीय व्यवहार और न्यायालय की मुख्य भाषा बनी हुई है।

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास और वर्चस्व के युग में अंग्रेजी रोजगार की भाषा के रूप में भी सशक्त हुई है। अंग्रेजियत भरी मानसिकता के कारण हिन्दी के विकास की दिशा में ठोस कदम नहीं उठ पा रहे हैं। भविष्य पर तो यह संकट भी मँडरा रहा है कि नई पीढ़ियाँ भारत, भारतीयता, भारतीय संस्कृति और परंपराओं से कटकर न रह जाएँ। हिन्दीतर भाषी राज्यों के साथ-साथ हिन्दी राज्य भी अंग्रेजी वर्चस्व के बहाव में बह रहे हैं। अंग्रेजी को ज्ञान का पर्याय मान लिया गया है। अंग्रेजी रोजगार के लिए भी अनिवार्य मानी जाती है। सत्ता के प्रभाव में अंग्रेजी रौब-दाब की भाषा बनी हुई है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (वर्ष 2020) में मातृभाषा और हिन्दी भाषा विषयक प्रावधान के विरोध में अंग्रेजी गुलामी की मानसिकता ने जैसे प्रहार और प्रतिरोध किए, उन्हें स्वतंत्रता के 77 वर्ष और भारत का संविधान लागू होने के 75 वर्ष की कालावधि के बाद भी सर्वथा नकारात्मक ही माना जाएगा। परंतु भाषा का सवाल विधान और नियमों के सहारे हल नहीं किया जा सकता। इसके लिए सामाजिक पहल, जागरूक नागरिक चेतना, राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वराज के संकल्प की आवश्यकता है। उसका स्वरूप भी बहुआयामी होना चाहिए। हिन्दी साहित्य सम्मेलन इस दिशा में युगांतरकारी अनुष्ठान का मंच सिद्ध हो सकता है।

मातृभाषा/लोकभाषा: हम मध्यप्रदेश में इस दिशा में कुछ पहल और प्रयास कर रहे हैं और वह है, भारतीय भाषा सत्याग्रह। इसमें पहले स्थान पर मातृभाषा को रखा गया है। महात्मा गांधी और सभी शिक्षा आयोगों का स्पष्ट मत रहा है कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए। पराई भाषा में शिक्षा देना नौनिहालों पर अत्याचार है। बच्चे जो भाषा माता-पिता, परिजनों और समाज से सीखते हैं, उसी में शिक्षा देना सीखने का सबसे सुचारु माध्यम है।

हिन्दी राज्यों के संदर्भ में यह तथ्य रेखांकित किया जाना चाहिए कि उनके जनपदों में लोकभाषाएँ विद्यमान हैं। हमारा आशय भोजपुरी, बृज, अवधी, कौरवी, बुंदेली, बघेली, मालवी, निमाड़ी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, कुमाऊँनी, गढ़वाली, हिमाचली, हरियाणवी आदि लोकभाषाओं से है। इनकी समृद्ध संस्कृति और प्रचुर साहित्य है। इन लोकभाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य ने हिन्दी का कलेवर परिपूर्ण किया है। सूर, तुलसी, मीरा, जायसी, प्रभृति हिन्दी साहित्याकाश के जगमग सितारे मूलतः अपने जनपद की लोकभाषा के महान साहित्यकार हैं। अपने-अपने अंचल में इन लोकभाषाओं का प्रचलन बना रहे और उनसे हिन्दी का साहित्य भण्डार भरता रहे, यह समन्वित सोच हिन्दी की आवश्यकता है। सभी लोकभाषाओं के संरक्षण और संवर्द्धन पर ध्यान दिया जाए।

भारतीय भाषाएँ: मातृभाषा के पश्चात हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं का स्थान आता है। भारत भाषायी बहुलता वाला राष्ट्र है। देश के 10 राज्य- उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली हिन्दी भाषी राज्य हैं। गुजरात में गुजराती, महाराष्ट्र में मराठी, पंजाब में पंजाबी, तमिलनाडु में तमिल, कर्नाटक में कन्नड, केरल में मलयालम, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश में तेलुगु, ओडिशा में ओडिया, पश्चिम बंगाल में बांग्ला, असम में असमिया, जम्मू-कश्मीर में डोगरी और कश्मीरी, गोवा में कोंकणी, मणिपुर में मणिपुरी आदि भाषाएँ अष्टम अनुसूची में सम्मिलित हैं। इस सूची में संस्कृत, नेपाली, बोडो, सिंधी, संथाली, उर्दू और मैथिली का भी समावेश है। व्यावहारिक और राष्ट्रहितैषी भाषा नीति तो यही हो सकती है कि हिन्दी भाषी राज्यों में राजकाज, शिक्षा और न्यायालय की भाषा केवल हिन्दी हो। अन्य राज्यों में, जिस राज्य की जो भाषा है उसी में समस्त कामकाज किया जाए। तात्पर्य यह कि राजकाज, शिक्षा और न्यायालय में अंग्रेजी का प्रभुत्व ही नहीं, अपितु प्रचलन भी नहीं होना चाहिए। दो टूक और सच्चा

भाषा के संदर्भ में व्यापक परिप्रेक्ष्य में विचार करना अधिक उपयुक्त रहेगा। ये परिप्रेक्ष्य हैं- मातृभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा। वस्तुतः एक हजार से अधिक भाषाएँ जिस भारत की संस्कृति को विशिष्ट बनाती हैं, उसे भाषायी स्वराज की सर्वाधिक आवश्यकता है। क्योंकि अंग्रेजी की गुलामी ने भारतीय मानस को मर्माहत कर रखा है, हीन भावना से भरा है। स्वत्व और स्वाभिमान को खण्डित किया है। जब तक भारत में भाषायी स्वराज अस्तित्व में नहीं आता तब तक स्वाधीनता को संपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

सिद्धांत यह है कि जिस जनता की खून-पसीने की कमाई से राज्य का खजाना भरता है और कामकाज चलता है, उसमें अन्नदाता का दर्जा जनता का होता है। बाकी सब सेवक की श्रेणी में आते हैं। ऐसी स्थिति में उस भाषा का प्रचलन जो एक-दो प्रतिशत लोगों को छोड़कर, अधिकांश जनता को नहीं आती हो, किसी भी रूप में लोकतांत्रिक मान्यता और नैतिकता की दृष्टि से उचित नहीं है। स्वीकार्य भी नहीं होना चाहिए।

सामंजस्य और समन्वय: अब सवाल आता है भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच सामंजस्य और समन्वय का। यह परस्पर सौहार्द्र और आदान-प्रदान के माध्यम से सुचारु हो सकता है। इसमें सबसे बड़ा दायित्व और भूमिका हिन्दी की है। समूचा देश हिन्दी को अपनाए और हिन्दी वाले अन्य भारतीय भाषाओं को अपनाने में रुचि न लें, तब सौहार्द कदापि संभव नहीं। अंग्रेजी साम्राज्यवाद के स्थान पर हिन्दी साम्राज्यवाद का राजनीति प्रेरित आक्षेप भी ध्वस्त नहीं किया जा सकता। आवश्यक हो जाता है कि हिन्दी भाषी राज्यों के शासकीय विश्वविद्यालयों में किसी एक (हिन्दीतर) भारतीय भाषा के अध्ययन-अध्यापन का प्रावधान किया जाए। इन भाषाओं के लिए संबंधित भाषा के सर्वमान्य/बहुप्रतिष्ठित साहित्यकार के नाम से पीठ स्थापित की जानी चाहिए। डिप्लोमा और उपाधिस्तर के पाठ्यक्रम अनुवाद जैसे रोजगार के नए अवसर उपजा सकते हैं। अधिक महत्वपूर्ण यह कि हिन्दी भाषी राज्यों की ओर से अन्य भारतीय भाषाओं के लोगों तक अपनेपन का संदेश पहुँचेगा। भाषायी सौहार्द बढ़ेगा जो अंततः राष्ट्रीय एकता की महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध होगा। हिन्दी राज्यों में विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही हो। माध्यमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालयी शिक्षा तक पूरे देश में हिन्दी का पठन-पाठन हो।

भारतीय भाषाओं के बीच शब्दों का आदान-प्रदान बढ़ना चाहिए। हिन्दी को अपना शब्द भण्डार बढ़ाने के लिए अन्य भारतीय भाषाओं से उपयुक्त शब्द ग्रहण करना चाहिए। इसी तरह अन्य भारतीय भाषाएँ भी हिन्दी से शब्द ग्रहण करेंगे। संस्कृत के शब्द तो लगभग सभी भारतीय भाषाओं में प्रचलित हैं। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद के माध्यम से उत्कृष्ट साहित्य का आदान-प्रदान बढ़े। बांग्ला, मराठी, गुजराती एवं अन्य भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ है और वे वृहत् हिन्दी पाठक समाज तक पहुँची भी हैं। बींसवीं सदी के उश्रार्द्ध में धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिनमान, नवनीत, सारिका, कल्पना आदि हिन्दी की बहु प्रसारित पत्रिकाओं ने अन्य भारतीय भाषाओं के अनेक साहित्यकारों की रचनाओं का से हिन्दी भाषियों को आस्वादन कराया है। पहले सरस्वती, विशाल भारत, माधुरी आदि पत्रिकाएँ यह काम करती रही हैं। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के पुस्तकालयों में सभी भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद संजोया जाना चाहिए। इन ग्रंथों के आधार पर विद्यार्थियों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँ और विजेताओं को समुचित पुरस्कार प्रदान किए जाएँ।

राज्यों में त्रिभाषा सूत्र का निष्ठापूर्वक पालन आवश्यक है। हिन्दी राज्यों में दूसरी भाषा के रूप में किसी अन्य भारतीय भाषा को सम्मिलित किया जाए और अन्य भारतीय भाषाओं वाले राज्यों में हिन्दी दूसरी भाषा हो। रहा सवाल ज्ञान-विज्ञान की भाषा का, उसका इकलौता दारोमदार अंग्रेजी पर नहीं हो सकता। अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच, जर्मन, जापानी, रूसी, स्पेनिश, मंदारिन आदि भाषाएँ भी ज्ञान-विज्ञान का माध्यम हो सकती हैं। लेकिन विदेशी भाषाओं का दर्जा स्किल के रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है। विदेशों में रोजगार के अभिलाषियों के लिए विदेशी भाषा का ज्ञान सहायक होता है। यह शिक्षार्थियों पर छोड़ दिया जाए कि वे किस विदेशी भाषा के माध्यम से अपना ज्ञान बढ़ाना चाहते हैं। ये उन्नत भाषाएँ जिन देशों की हैं, उन्होंने प्रगति के लिए अंग्रेजी का प्रभुत्व नहीं स्वीकारा। परंतु प्रगति में वे अंग्रेजी वाले देशों से कतई पीछे नहीं हैं।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा जिन्होंने निरूपित किया,

उनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी।

हिन्दी वालों को यह तथ्य हृदयंगम करना आवश्यक है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा की लोकमान्यता नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन के दौरान मिली। इसका श्रेय भी उन महापुरुषों को जाता है जो मूलतः हिन्दी भाषी नहीं थे। स्वामी दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी की मातृभाषा गुजराती थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, केशवचन्द्र सेन, सुभाषचन्द्र बोस की मातृभाषा बांग्ला थी। चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की मातृभाषा तमिल थी। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, आचार्य विनोबा भावे, पं. केशव वामन पेठे, विष्णु सखाराम खांडेकर की मातृभाषा मराठी थी। इन सभी का उद्घोष था कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक पूरे देश में हिन्दी भाषा के माध्यम से कार्य व्यवहार सहज संभव है। माधवराव सप्रे, बाबूराव विष्णु पराडकर, लक्ष्मणनारायण गर्दे, सिद्धनाथ माधव आगरकर जैसे मराठी मातृभाषी मनीषियों ने हिन्दी पत्रकारिता को शिक्षर तक पहुँचाया। काका कालेलकर, गुणाकर मुले, जयंत विष्णु नार्लीकर ने हिन्दी लेखन में मानक रचे। कन्नड भाषी नारायण दत्त हिन्दी के सर्वाधिक गुणी संपादक रहे हैं। यह महात्मा गांधी ही थे जिन्होंने सन् 1918 में इन्दौर में संपन्न हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय संबोधन में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया था। दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए जो टोली उन्होंने भेजी थी, उसमें देवदास गांधी, स्वामी सत्यदेव, मोटूरि सत्यनारायण, पट्टाभि सीतारामय्या, भालचन्द्र आपटे सदृश भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों का समावेश किया गया था।

हिन्दी का दायित्व: यह प्रकट तथ्य है कि खड़ी बोली हिन्दी के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता ने हिन्दी गद्य का परिमार्जन किया। हिन्दी के शब्द भण्डार को बढ़ाने में हिन्दी के संपादकों की उल्लेखनीय भूमिका रही है। इस गर्वीली पृष्ठभूमि से उलट वर्तमान हिन्दी पत्रकारिता में जिस तरह अंग्रेजी शब्दों की घुसपैठ की जा रही है, वह सोचनीय है। भाषाओं में दूसरी भाषाओं के शब्दों की आवाजाही स्वाभाविक है। इसे स्वीकार भी किया जाता है। हिन्दी में भी दुनियाभर की भाषाओं के सैकड़ों शब्दों का प्रचलन हुआ है। परंतु उन्हें हिन्दी के रूप-रंग में ही आत्मसात किया गया है।

राजभाषा हिन्दी में प्रशासनिक शब्दावली में एकरूपता के लिए अभी बहुत काम किया जाना है। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में जिस भौगोलिक इकाई को संभाग कहा जाता है, वह उत्तरप्रदेश में मंडल है। यही स्थिति जिले की है, जिसे उत्तरप्रदेश में जनपद कहा जाता है। किसी राज्य में अभियंता तो किसी में यंत्री शब्द प्रयुक्त होता है। जिलाधीश, जिलाधिकारी भी ऐसे पदनाम हैं। सभी हिन्दी राज्यों में नामावलियों की एकरूपता इसलिए भी जरूरी है ताकि अन्यत्र यह उपहास का विषय न बने।

हिन्दी शिक्षण, विशेष रूप से प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर, उच्चारण और वर्तनी की परिशुद्धता और मानक प्रयोग पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए। शुद्ध वर्तनी से लेखन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि होगी। शुद्ध उच्चारण से संभाषण भाषा के दोष से मुक्त होगा। इससे अभिव्यक्ति प्रभावी और आकर्षक होगी। पहले हिन्दी के अध्यापक अपने विद्यार्थियों से शुद्ध वर्तनी और उच्चारण के प्रयोग के लिए नियमित अभ्यास कराते थे। सुलेख पर भी ध्यान दिया जाता था। अब ऐसा नहीं होता।

यहाँ मध्यप्रदेश की 4 अप्रैल 2018 की ऐतिहासिक परिघटना का उल्लेख विशेष संदर्भ में करना चाहता हूँ। चिंतक, कवि, संपादक 'एक भारतीय आत्मा माखनलाल चतुर्वेदी के जन्मस्थान बाबई का नामकरण 'माखननगर किया गया। दूसरी ओर यह अनुभव पीड़ादायी है कि हिन्दी जगत में इस परिघटना पर गर्व और गौरव की जैसी अनुभूति होनी चाहिए थी, वह दिखी नहीं।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि हिन्दी को उसका अपेक्षित स्थान दिलाने में हिन्दी साहित्य सम्मेलन जैसी संस्थाओं और हिन्दी सेवियों का महत्वपूर्ण योगदान है। सरकारों की ओर देखे बिना यह यत्न किए गए। जन सामान्य के बीच हिन्दी के प्रचार-प्रसार से स्थिति में सुधार हुआ है। आशा है कि हमारे यत्न से सरकारें भी हिन्दी के लिए आगे बढ़ने को प्रेरित होंगी।

अपनी बात का समापन इस आग्रह के साथ करना चाहूँगा-

'अपनी भाषा पर अभिमान,
सब भाषाओं का हो सम्मान।

किसी भारत प्रेमी ने अपनी भावना इस तरह व्यक्त की है-

'अपनी माटी अपना देश,
अपनी भाषा अपना वेश।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का आह्वान स्मरण कीजिए-

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती,
भगवान भारत वर्ष में गूँजे हमारी भारती।

हम सबका स्वर इस स्वर में मिले और वह भाषा-स्वराज का शंखनाद बने, यही कामना है।

(हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के 76 वें अधिवेशन आणंद में 22 मार्च को'राष्ट्रभाषा परिषद के अध्यक्षीय संबोधन के संपादित अंश)

भाजपा नगर मंडल के तत्वाधान में विधायक कप सीहोर क्रिकेट प्रतियोगिता 23 मार्च से

सीहोर। शहर सहित आस-पास के खिलाड़ियों को मंच देने के लिए भाजपा नगर मंडल सीहोर के तत्वाधान में रविवार से शहर के भोपाल नाका स्थित पीजी कालेज में विधायक कप सीहोर क्रिकेट प्रतियोगिता का रविवार को शुभारंभ किया जाएगा।

इस संबंध में जानकारी देते हुए भाजपा नगर मंडल के अध्यक्ष सुदीप प्रजापति ने बताया कि प्रतियोगिता की सफलता के लिए विधायक सुदेश राय के निर्देश पर आयोजन समिति का गठन किया गया है। जिसमें आयोजक जितेन्द्र यादव, कमलेश कुशवाहा और महेन्द्र मेवाड़ा सहित अन्य को शामिल किया गया है। रविवार से होने वाले भोपाल नाका स्थित पीजी कालेज में विधायक कप सीहोर क्रिकेट प्रतियोगिता में करीब शहर सहित आस-पास की करीब 32 टीमों को शामिल किया गया है। प्रतियोगिता का प्रत्येक मैच 8-8 ओवर के होंगे, वहीं सेमीफाइनल और फाइनल मैच 10-10 ओवर के रहेंगे। प्रतियोगिता में शामिल होने वाले आयोजक श्री यादव से संपर्क कर जानकारी ले सकते है। प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार 51 हजार और उप विजेता को 21 हजार के अलावा ट्राफी प्रदान की जाएगी। इसके अलावा हर मैच में मैन आफ द मैच सहित अन्य पुरस्कार प्रदान किए जाऐंगे। रविवार को प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर विधायक सुदेश राय, समाजसेवी अखिलेश राय सहित आयोजक मंडल के द्वारा किया जाएगा।

अष्टादश दीक्षांत समारोह

भोपाल। श्री सिद्धि ज्योतिष केन्द्र- ओंकार पीठ द्वारा संचालित निःशुल्क ज्योतिष कशाओं के पाठ्यक्रम की पूर्णता पर अष्टादश दीक्षांत समारोह 23 मार्च को आरोग्य भारती सभागार, 94/5, तुलसी नगर, भोपाल पर प्रातः 11:00 बजे आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम में 20 से अधिक विद्यार्थियों को उपाधियाँ वितरित की जायेंगी। कार्यक्रम में भोपाल तथा अन्य नगरों के प्रतिष्ठित विद्वानों, ज्योतिषाचार्यों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान किया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राकेश शुक्ला मन्त्री, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा, विशिष्ट अतिथिद्वय ज्योतिषाचार्य विष्णु राजौरिया अध्यक्ष, परशुराम कल्याण बोर्ड तथा सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य राजेश दुबे एवं सारस्वत अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध कथावाचक पं. रमेश शर्मा उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुफा मन्दिर धाम श्री स्वामी रामप्रवेशदेवाचार्य महाराज करेंगे।

कार्यक्रम में 30 मार्च 2025 से प्रारम्भ होने वाले आगामी सत्र के निःशुल्क ज्योतिष पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु पंजीयन भी प्रारम्भ किया जाएगा।

कुंजीलाल दुबे संसदीय विद्यापीठ द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

भोपाल। संविधान की प्रस्तावना विषय पर आयोजित यह चित्र कला प्रतियोगिता भोपाल स्थित महाविद्यालयों एवं विद्यालयों के लिए शुक्रवार को विद्यापीठ के सभागार में संपन्न हुई। जिसमें 48 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रतियोगिता का उद्घाटन मुख्य अतिथि अनिरुद्ध माधव मारू, विधायक, मनासा एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. संजय तिवारी, कुलगुरु, भोज विश्वविद्यालय की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर डॉ. प्रतिमा यादव, संचालक, संसदीय विद्यापीठ ने विद्यापीठ की विभिन्न गतिविधियों एवं उद्देश्यों के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने विद्यार्थियों को संविधान की प्रस्तावना के महत्व से अवगत कराते हुए लोकतांत्रिक

मूल्यों के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। विधायक मारू द्वारा सीमित बजट, सीमित अमले से विद्यापीठ द्वारा संसदीय क्षेत्र में किये जा रहे प्रयास की सराहना की तथा प्रतिभागी विद्यार्थियों को समय प्रबंध कर अपनी रुचि के क्षेत्र में लक्ष्य निर्धारित कर उसे पूर्ण करने हेतु प्रोत्साहित किया। भोज विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. संजय तिवारी ने संविधान की प्रस्तावना, महत्व एवं विशेषताओं पर प्रकाश डाला। निर्णायक के रूप में देवीलाल पाटीदार, सेवानिवृत्त कार्यवाहक प्रबंधक, भारत भवन, भोपाल एवं वरिष्ठ चित्रकार राज सैनी, श्रीमती भावना चौधरी चंद्रा उपस्थित रहे।

भोपाल में मैकेनिकल वोटिंग मशीन एमवीएम लॉन्च

भोपाल। चुनावी प्रक्रिया में पारदर्शिता और विश्वसनीयता बढ़ाने के उद्देश्य से शुक्रवार को नई मैकेनिकल वोटिंग मशीन (एमवीएम) लॉन्च की गई है। राजधानी के एक होटल में प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए इस मशीन को बनाने वाले रामप्रसाद विश्वकर्मा ने इसे प्रदर्शित किया।

मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के ग्राम मनेरा के रहने वाले 75 वर्षीय रामप्रसाद विश्वकर्मा ने इस मशीन का आविष्कार किया है। भारत सरकार ने आधिकारिक रूप से इसे पेटेंट प्रदान किया है। मशीन के बारे में विश्वकर्मा ने कहा कि यह मशीन इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का विकल्प नहीं है। बल्कि बैलेट पेपर आधारित मतदान को अधिक सुरक्षित और प्रभावी बनाने का समाधान है।

बिना बिजली, बिना झंझट -पूरी तरह मैकेनिकल!- एमवीएम एक ऐसी मतदान प्रणाली है, जो किसी भी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण या बिजली पर निर्भर नहीं है। यह पूरी तरह मैकेनिकल है और पारंपरिक बैलेट पेपर मतदान को अधिक सुरक्षित, पारदर्शी और विश्वसनीय बनाती है। यह

मशीन उन चुनावों के लिए आदर्श है, जहां विश्वास और सुरक्षा सबसे बड़ी प्राथमिकता होती है। मैकेनिकल विशेषज्ञ रामप्रसाद विश्वकर्मा ने इस मशीन को बनाने में चार साल से अधिक का समय लगाया। उन्होंने चुनावी प्रणाली को अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनाने के लिए इस मशीन का निर्माण किया है, जो बैलेट पेपर प्रणाली का उन्नत संस्करण है।

'हत्या' के डेढ़ साल बाद घर लौट आई महिला

परिजन अचंभित रह गए, लौटकर सुनाई हैरान करने वाली कहानी

इंदौर। मंदसौर जिले के गांधीसागर थाना क्षेत्र के नावली गांव की ललिता बाई डेढ़ साल बाद घर लौट आई तो सभी अचंभित रह गए। अचंभा इसलिए कि यह मान लिया गया था कि ललिता की हत्या हो गई है। उनके कथित शव का अंतिम संस्कार भी कर दिया गया था। ललिता की हत्या के आरोप में चार युवक झाबुआ की जेल में बंद हैं। कोर्ट में यह मामला विचाराधीन है। ललिता ने गांधीसागर थाना पुलिस को उनके अपहरण, बेचे जाने और बंधक रहने की कहानी भी बता दी है। ललिता ने आधार, वोटर आईडी कार्ड आदि दस्तावेज पुलिस को दिखा दिए हैं।

इस बीच, ललिता के घर लौटने से उसके दो बच्चे बहुत खुश हैं।

बिना बताए कहीं चली गई थी- ललिता के पिता रमेश ने बताया कि अगस्त, 2023 में ललिता बिना बताए कहीं चली गई थी। उसकी गुमशुदगी गांधीसागर थाने में दर्ज कराई गई थी। नौ सितंबर, 2023 को झाबुआ जिले के थांदला थाना क्षेत्र में एक वीडियो में महिला को ट्रक से कुचलते हुए देखा गया। यह वीडियो बहुप्रसारित होने के बाद थांदला थाने पर संपर्क किया गया। वहां क्षत-विक्षत शव की पहचान ललिता के रूप में हुई। पुलिस ने हत्या के आरोप में भानपुरा निवासी इमरान, शाह रुख, सोनू और एजाज को गिरफ्तार कर लिया था। फिलहाल मामला विचाराधीन हैं और चारों न्यायिक हिरासत में झाबुआ जेल में हैं।

शाहरुख ने पांच लाख रुपये में बेच दिया था

ललिता ने पुलिस को बताया कि घर से जाने के बाद वह दो दिन तो भानपुरा निवासी शाह रुख के साथ रही। उसने उसे कोटा में रहने वाले किसी दूसरे शाह रुख को पांच लाख रुपये में बेच दिया। इसके बाद से वह कोटा में ही बंधक रही। मौका मिला तो वहां से भाग निकली और घर लौट आई। उधर, ललिता को जीवित देखकर स्वजन और ग्रामीण दंग रह गए। कुछ देर तक उन्हें इसका भरोसा ही नहीं हुआ। गांधीसागर थाना प्रभारी तरुणा भारद्वाज ने बताया कि ललिता ने थाने में आकर अपने जीवित होने की सूचना दी है। हमने गांव जाकर आसपास रहने वाले लोगों और परिवार वालों से जानकारी लेते हुए उसकी पहचान करवाई। सभी उसे ललिता ही मान रहे हैं।

बड़ा सवाल- शव किसका था?

सवाल यह है कि वास्तव में जिसका शव मिला था, वह महिला कौन थी ? अब नए सिरे से उक्त महिला की पहचान करनी होगी। साथ ही यह सवाल भी है कि पुलिस की जांच इतनी सतही कैसे रही। ट्रक जब्ती व हत्या की कहानी किस आधार पर गढ़ ली गई?

एफआईआर से नाम हटाने के लिए हेड कॉन्सटेबल ने मांगी रिश्वत

पीड़ित की शिकायत पर लोकायुक्त ने बिछाया जाल

धार। लोकायुक्त पुलिस ने सरदारपुर में शुक्रवार शाम कार्रवाई करते हुए राजोद थाना में पदस्थ प्रधान आरक्षक बने सिंह परमार के कहने पर रिश्वत लेने वाले ग्राम पांच महुआ के भारत डामर को 22,500 रुपये की रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ा।दरअसल, प्रधान आरक्षक परमार ने फरियादी नानूराम ओसारी निवासी झिंझियापांड़ा से एफआइआर में नाम हटवाने के लिए 50,000 रुपये की रिश्वत की मांग की थी। इस पर नानूराम ने 22,500 रुपये पहली किस्त के रूप में देने की पेशकश करते हुए लोकायुक्त में शिकायत करते हुए पकड़ाया।

॥ मंदिरम् ॥

63

जटाशंकर धाम, छतरपुर, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश का केदारनाथ, जटाशंकर धाम, मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में विजावर तहसील के पास स्थित एक 14 वीं शताब्दी का शिव मंदिर है जो हिन्दू मन्दिर है। यह छतरपुर से 50 किलोमीटर दूर है। गुफा में भगवान शंकर का मन्दिर है और हिन्दुओं का तीर्थ है। इस मंदिर पर तीन छोटे-छोटे जल कुंड हैं, जिनका जल कभी खत्म नहीं होता। विशेष बात यह है कि इन कुंडों के पानी का तापमान हमेशा मौसम के विपरीत होता है। ठंड में इनका पानी गर्म होता है, वहीं गर्मी में जल शीतल होता है। इन कुंडों का पानी कभी खराब भी नहीं होता। लोगों का मानना है कि यहां के पानी से स्नान करने से कई बीमारियां खत्म हो जाती हैं। यही कारण है कि जो भी श्रद्धालु यहां आता है, वह कुंड के पानी से स्नान जरूर करता है। लोग यहां के जल को अपने साथ घर भी ले जाते हैं।

स्वयं के साथ समाज के अन्य लोगों को भी करें जागरूक : एसीएस श्रीमती शमी

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस कार्यक्रम आयोजित

भोपाल (नप्र)। हम सभी किसी न किसी रूप में उपभोक्ता हैं, लेकिन हमें अधिकारों की जानकारी नहीं है। स्वयं के साथ समाज के अन्य लोगों को भी जागरूक करना हमारी जिम्मेदारी है। अपर मुख्य सचिव खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण श्रीमती रश्मि अरूण शमी ने यह बात विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस के भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में कही।

श्रीमती शमी ने कहा कि वर्तमान में अधिकांश खरीदी ई-प्लेटफार्म के माध्यम से की जा रही हैं। इसमें गुणवत्तायुक्त सामग्री नहीं मिलने पर क्या कार्यवाही की जा सकती है, इसकी जानकारी होना चाहिए। जिला उपभोक्ता संरक्षण अदालतों में 50 लाख रूपये तक, राज्य उपभोक्ता संरक्षण आयोग में 50 लाख रूपये से 2 करोड़ रूपये तक और राष्ट्रीय उपभोक्ता संरक्षण आयोग में इससे अधिक राशि के प्रकरणों की सुनवाई की जाती है। उपभोक्ता निर्णय से असंतुष्ट होने पर 45 दिन में अगले स्तर पर अपील कर सकते हैं। उन्होंने सामाजिक संगठनों से आग्रह किया कि उपभोक्ताओं को सतत् जागरूक करते रहें। मध्यप्रदेश राज्य खाद्य आयोग के अध्यक्ष श्री व्ही.के. मल्होत्रा ने कहा कि उपभोक्ताओं की जागरूकता और योजनाओं का क्रियान्वयन करने वालों की संवेदनशीलता बहुत जरूरी है।

रजिस्ट्रार मध्यप्रदेश उपभोक्ता विवाद प्रतितोषण आयोग श्री शोभित जैन ने कहा कि इस तरह की कार्यशालाएं संभाग और जिला स्तर पर भी आयोजित कर उपभोक्ताओं को जागरूक किया जाये। उन्होंने सस्टेनेबल फ्यूचर और ग्रीन फुट-प्रिंट के बारे में भी उपभोक्ताओं को जागरूक करने पर जोर दिया। आयुक्त खाद्य श्री कर्मवीर शर्मा ने बताया कि उपभोक्ता अदालतों

में ऑनलाइन सुनवाई की भी व्यवस्था की गई है। इससे उपभोक्ता घर से ही सुनवाई में शामिल हो सकते हैं। उन्होंने उपभोक्ताओं को प्रदत्त अधिकारों के बारे में भी जानकारी दी।

अतिथियों ने उपभोक्ता जागरूकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली संस्था जागरूक उपभोक्ता समिति इंदौर को एक लाख 11 हजार रूपये का प्रथम पुरस्कार और अखिल भारतीय उत्थान संगठन सतना को 51 हजार रूपये का द्वितीय पुरस्कार दिया। उपभोक्ता अधिकार विषय पर राज्य स्तरीय निंबध प्रतियोगिता के विजेता छात्र शा.उ.म. विद्यालय विरसा जिला बालाघाट के श्री धारेन्द्र मरावी को 6 हजार रूपये का प्रथम, शा.मा. विद्यालय क्रमांक-19 नया बसेरा के श्री पवन ताकतोड़े को 4 हजार रूपये का द्वितीय और क्रिस्टिना कॉन्वेंट हायर सेकेण्डरी स्कूल महूगांव जिला इंदौर की सुश्री हीरल दसोंधी को 2 हजार रूपये का तृतीय पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र दिया गया। इसी तरह पोस्टर प्रतियोगिता के विजेता छात्र इंदौर के शा.प्रा.वि. 19 नया बसेरा जिला इंदौर की कुमारी पूनम बोदड़े को 6 हजार रूपये का प्रथम, शा.उ.मा.वि. बिरसा जिला बालाघाट की कुमारी झरना रहांगडाले को 4 हजार रूपये का द्वितीय और पीएमश्री शा.क.उ.मा.वि. बैहर जिला बालाघाट की कुमारी सेजल टेकाम को 2 हजार रूपये का तृतीय पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा उपभोक्ता जागरूकता संबंधी लगाई गई प्रदर्शनी का अतिथियों ने अवलोकन किया। उन्होंने नाप-तौल विभाग की प्रदर्शनी को प्रथम, वेयर हाउसिंग की प्रदर्शनी को द्वितीय और खाद्य एवं औषधि प्रशासन की प्रदर्शनी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया।

हॉस्टल की 5वीं मंजिल से कूदा इंजीनियरिंग छात्र

सुसाइड नोट में लिखा- दोस्त को उधार नहीं लौटा पा रहा

गुना (नप्र)। गुना में इंजीनियरिंग छात्र ने हॉस्टल की पांचवीं मंजिल से छलांग लगाकर सुसाइड कर लिया। आज शुक्रवार सुबह वॉर्डन ने शव को देखकर मैनेजमेंट को सूचना दी। छात्र के लैपटॉप में सुसाइड नोट मिला है। उसने लिखा है कि दोस्त से उधार लिए थे, अब उसे पैसे लौटा नहीं पा रहा हूं।

घटना राघौगढ़ की जेपी यूनिवर्सिटी की है। छात्र वैभव वर्मा बीई कम्प्यूटर साइंस ब्रांच में सेकेंड ईयर का छात्र था। पांचवीं मंजिल पर उसका मोबाइल मिला है। वह उत्तरप्रदेश के कानपुर का रहने वाला था। वह यूनिवर्सिटी कैंपस में ही हॉस्टल में रहता था। राघौगढ़ पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। मां का आरोप है कि बेटे की हत्या हुई है।पुलिस को छात्र के अकाउंट से 25 हजार का एक ट्रांजेक्शन मिला है। अब पुलिस यह जानकारी जुटा रही है कि ये पैसे किसे भेजे गए हैं।

राघौगढ़ टीआई जुबेर खान ने बताया, जेपी यूनिवर्सिटी के एक छात्र ने सुसाइड किया है। वह हॉस्टल की पांचवीं मंजिल से कूदा था। घटनास्थल से उसका मोबाइल मिला है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सुसाइड नोट में लिखा- पहले ये ऊपर का ही पढ़ना। नीचे का तब पढ़ना, जब मुझे दो कॉल कर लो और मैं कॉल न उठाऊं। तब तक शायद मैं जा चुका होऊंगा।

अनुज मेरे दोस्त, तेरे साथ बहुत अच्छा समय निकला। जितना भी समय था, बहुत अच्छे से गुजारा है। हालांकि, ये समय कुछ और ज्यादा होना था। मैं बहुत गिल्ट में हूं।मेरे साथ 20 हजार रुपए का फ्रॉड हुआ। मैंने दोस्त से 15 हजार उधार लिए और उसे वापस नहीं कर पा रहा हूं। इसका मुझे बहुत दुख है।

विधानसभा के आठवें दिन कार्यवाही शुरू होते ही कांग्रेस विधायकों ने कानून व्यवस्था का मामला उठाया

विधानसभा में रो पड़े मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल

कांग्रेस विधायक के परिवार की सुरक्षा का सवाल उठाने पर भावुक हुए ; कहा-मेरे बेटे पर भी केस

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश विधानसभा के बजट सत्र का आज आठवां दिन है। कार्यवाही शुरू होते ही कांग्रेस विधायकों ने कानून व्यवस्था का मामला उठाया। सेमरिया से कांग्रेस विधायक अभय मिश्रा ने प्रश्नोत्तर काल के दौरान अपने और बेटे पर दर्ज केस को लेकर कहा कि उनका चुनाव लड़ना अपराध हो गया है।

थाना चोरहटा में उनके और उनके बेटे विभूति नारायण मिश्रा के खिलाफ अपराध दर्ज किया गया है। ये सुनकर मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल भावुक हो गए और उच्च स्तरीय जांच के साथ ही टीआई को सस्पेंड करने की बात कही।

गृह विभाग से जुड़े सवालों के जवाब देते हुए मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि परिवार से जुड़ा मसला हो तो केस के निराकरण के लिए दूसरे रास्ते हो सकते हैं। मंत्री ने कहा कि अभय मिश्रा के मामले में दोनों ही अधिकारी एक नहीं थे। रिपोर्ट करने वाले हीरामणि पटेल थे, जांच करने वाले राजेश तिवारी थे।

न्याय के लिए आपके चरणों में गिरने को तैयार- कांग्रेस विधायक मिश्रा ने कहा कि न्याय के लिए आपके चरणों में गिरने को तैयार हैं पर कार्रवाई होनी चाहिए। इस पर मंत्री पटेल ने कहा कि किसी तरह का अन्याय नहीं होने देंगे। पुलिस का

मनोबल बना रहे, इसलिए उन्हें जिले से हटाकर जांच कर लेते हैं। मंत्री ने घोषणा की कि थाना प्रभारी को निलंबित करेंगे और जांच कराएंगे। इस बीच विधायक अजय सिंह ने कहा कि अगर पहले ऐसी कार्रवाई हो जाती तो मऊगंज जैसी घटना नहीं होती। इस पर जमकर शोर-शराबा हुआ।

इसके बाद नेता प्रतिरोध प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि विधायक नारायण सिंह पट्टा के साथ भी ऐसे ही घटना हो चुकी है। जो अच्छा करे उसे सजा नहीं मिलनी चाहिए, लेकिन जो गलत करे उसे सजा मिलनी चाहिए।

अभय बोले- मंत्री जी को आपबीती याद आई- सदन में अपने परिवार की सुरक्षा को लेकर

सवाल उठाने वाले कांग्रेस विधायक अभय मिश्रा ने कहा कि कोई मंत्री हो या संतरी सबके अंदर धड़का हुआ दिल है। मंत्री जी को आपबीती याद आई। दो महीने पहले उनके बच्चे के ऊपर फर्जी मुकदमा लगा। वो मंत्री होते हुए भी नहीं रुकवा पाए। वही उनको ध्यान आया होगा, वो भावुक हो गए।

सरकार पर सवाल उठा नहीं सकते, इसलिए भावुक हुए- उपनेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे ने कहा कि अभय मिश्रा जी ने जो सवाल उठाया वो बेहद गंभीर है। एक विधायक और उनके परिवार को किस तरह झूठे प्रकरणों में फंसाया जा रहा है, ये एक उदाहरण है।

राज्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल के विधानसभा के अंदर रोने को लेकर उप नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि वो गृह मंत्री तो हैं नहीं। वो भावुक इसलिए हो गए क्योंकि जो गृह मंत्री हैं प्रदेश के यानी मुख्यमंत्री जी, उनके ही रहते हुए नरेंद्र शिवाजी पटेल के परिवार के ऊपर झूठी एफआईआर दर्ज है। अपनी सरकार पर वो सवाल नहीं उठा सकते थे, ऐसी स्थिति में वो भावुक हो गए।

मंत्री सारंग बोले-कांग्रेस विधायकों को फंड देने में भेदभाव नहीं- कांग्रेस विधायकों को फंड देने में भेदभाव के आरोपों पर मंत्री विश्वास सारंग बोले- कोई भेदभाव नहीं है। हमारी सरकार दलगत नीति से ऊपर उठकर काम करती है। कांग्रेस का एक विधायक बताए कि उन्होंने विधानसभा में अपने क्षेत्र के विकास का कोई एजेंडा बनाया? कोई रोडमैप बनाया? सरकार की ओर से कहा गया था। मुख्यमंत्री ने कहा था कि हर विधायक को अपनी विधानसभा में क्या-क्या करना है। 5 साल की क्या प्लानिंग है बनाए। आप नकारात्मक राजनीति कर रहे हो। आपको अपने क्षेत्र की जनता से कोई लेना-देना नहीं है। कांग्रेस केवल गुट और गिरोह में बंटकर इधर-उधर की बातें करती है। आप विकास की बात करिए, एजेंडा बनाइए। सरकार हर जगह विकास करना चाहती है।

अच्छे पुलिस अधिकारी हैं, उन्हें फील्ड में रहना चाहिए : नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा कि जो अच्छे पुलिस अधिकारी हैं, उन्हें फील्ड में रहना चाहिए। जो दबंगई दिखाते हैं, विधायक के परिवार को प्रताड़ित कर रहे हैं। इस पर सरकार ने तत्काल आरोपी अफसर को सस्पेंड किया।

कांग्रेस विधायक शेखावत ने कहा- सहकारी संस्था में चुनाव नहीं हो रहे- कांग्रेस विधायक भंवर सिंह शेखावत ने कहा कि सहकारिता विभाग में चुनाव नहीं कराए जा रहे। सरकारी संस्थाएं किसी के चलते अब सहकारी संस्थाएं बनकर रह गई हैं। जकार्ता नियमों में प्रावधान है कि किसी भी सरकारी संस्था का संचालक मंडल 6 महीने से अधिक तक भंग नहीं रहेगा।

मंत्री नरेंद्र शिवाजी बोले- पुलिस जान की बाजी लगाकर ड्यूटी कर रही- मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा कि पुलिस अपने प्राणों की बाजी लगाकर ड्यूटी कर रही है।

मंत्री सिलावट बोले- शिप्रा के दोनों ओर 29 किमी तक घाट बनेंगे

जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट ने कहा कि सरकार बांधों की सुरक्षा को लेकर सजग है। बांधों के निरीक्षण के लिए बनाई गई कमेटी हर साल रिपोर्ट देती है। आज तक 44 लाख हेक्टेयर की सिंचाई क्षमता विकसित की जा चुकी है। अगले पांच साल में 100 लाख हेक्टेयर तक सिंचाई क्षमता बढ़ाने का काम किया जाएगा। केन बेतवा परियोजना के आकार लेने पर बुंदेलखंड में पेयजल और सिंचाई संकट में कमी आई है। एमपी को एक अन्य सिंचाई परियोजना पार्वती कालीसिंध चंबल नदी परियोजना के रूप में मिली है।शिप्रा नदी के जल को कान्ह नदी के दूषित जल से सुरक्षित रखने का काम किया जा रहा है। इस योजना पर तेजी से काम हो रहा है। सिंहस्थ 2028 के पहले योजना को पूरा कर लिया जाएगा। शिप्रा के दोनों ओर 29 किमी घाट बनाए जाएंगे जिसके लिए 775 करोड़ की स्वीकृति दी जा चुकी है।

प्रदेश में तेज आंधी, बारिश और ओले गिरने का अलर्ट

कई जिलों में बदला मौसम ; सिंगरौली, मंडला और डिंडौरी में पानी गिरा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अगले कुछ घंटे में कई जिलों में ओले गिरने, तेज आंधी चलने और बारिश होने का अलर्ट है। मौसम विभाग के अनुसार डिंडौरी, मंडला, अनूपपुर के अमरकंटक, शहडोल, पन्ना और मैहर में आकाशीय बिजली गिरने और ओलावृष्टि होने और तेज आंधी चलने का संभावना है।

सागर, दमोह, बालाघाट, छिंदवाड़ा, सिवनी, दक्षिण मंडला, उमरिया, सीधी, सिंगरौली, उत्तर शहडोल, दक्षिण सतना, दक्षिण रीवा में आकाशीय बिजली के साथ हल्की गरज के साथ बारिश जारी रहने की संभावना है। शाम के समय मऊगंज, जबलपुर और कटनी जिलों में मौसम बदला रहेगा।

इससे पहले शुक्रवार सुबह सिंगरौली और मंडला में गरज-चमक के साथ बारिश हुई। 24 घंटों के दौरान मंडला में 1 मिमी बारिश दर्ज की गई है। डिंडौरी में बूंदाबांदी हुई है।

शहडोल के ब्यौहारी में 3.5 इंच पानी गिरा, 30 जिलों में बारिश- सिस्टम की एक्टिविटी के चलते मध्यप्रदेश में पिछले 24 घंटे के अंदर कई जिलों में बारिश हुई। इनमें शहडोल, कटनी, उमरिया, जबलपुर, सिंगरौली, अनूपपुर, सीधी, दमोह, सीधी, छिंदवाड़ा, डिंडौरी, सिवनी, पन्ना, सागर, मंडला, रीवा, बैतूल, भोपाल, रायसेन, शिवपुरी, विदिशा, नर्मदापुरम, मऊगंज, निवाड़ी, टीकमगढ़, नरसिंहपुर, छतरपुर, अशोकनगर, राजगढ़, बालाघाट आदि जिले शामिल हैं।

सबसे ज्यादा बारिश शहडोल के ब्यौहारी में 87 मिमी यानी, 3.5 इंच बारिश हो गई। कटनी के धीमरखेड़ा में सवा इंच, उमरिया के मानपुर और जबलपुर के मंझौली में पौन इंच बारिश दर्ज की गई।

भोपाल की सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया-वर्तमान में प्रदेश में दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन और एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव है। इसके असर से प्रदेश में ओलावृष्टि, बारिश, गरज-चमक और आंधी चल रही है।

21, 22 और 23 मार्च को भी ऐसा मौसम बना रहेगा। मौसम बदलने से कई शहरों में दिन के तापमान में खासी गिरावट हुई है। सीधी में 27.8 डिग्री, रीवा में 28.8 डिग्री, सतना में 31.4 डिग्री और नौगांव में पारा 32.5 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। सिंगरौली में शुक्रवार सुबह गरज-चमक के साथ बारिश हुई।

दमोह-कटनी में गिरेंगे ओले- मौसम विभाग के अनुसार, अगले 24 घंटे के दौरान दमोह, कटनी, उमरिया, शहडोल, डिंडौरी और अनूपपुर में ओले गिर सकते हैं। मुरैना, ग्वालियर, भिंड और दतिया में तेज आंधी चलने का ऑरेंज अलर्ट है।

शिवपुरी, अशोकनगर, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, जबलपुर, मंडला, नरसिंहपुर, सिवनी, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, नर्मदापुरम, बैतूल और हरदा में गरज-चमक, तेज आंधी चलने की संभावना है।

छात्र के सिर पर चप्पल रखवाई, बुलवाया-लव जिहाद पाप है

छात्रा से छेड़छाड़ के आरोप में पीटा ; वीडियो आया सामने

शुजालपुर (नप्र)। शाजापुर जिले के शुजालपुर में शुक्रवार को एक वीडियो सामने आया है। जिसमें कुछ लोगों ने 9वीं कक्षा के एक छात्र (उम्र 16 साल) के सिर पर चप्पलें रखवाई और उससे जबरदस्ती बुलवाया कि लव जिहाद पाप है, हिंदू संगठन हमारा बाप है।

ये वीडियो गुरुवार रात को शुजालपुर सिटी स्थित एक कैफे का बताया जा रहा है। जहां ये नाबालिग लड़का 10वीं में पढ़ने वाली एक नाबालिग लड़की के साथ बैठा था। तभी कुछ लोग वहां पहुंचे और लड़के के साथ मारपीट की। लड़की ने बताया कि वह यहां किसी काम से आई थी।

लड़की के भाई की शिकायत पर पुलिस ने नाबालिग छात्र पर पाक्सो के तहत केस दर्ज किया है। साथ ही उसके पिता पर धमकाने का मामला दर्ज किया है। हालांकि कैफे में नाबालिग छात्र से मारपीट करने और सिर पर चप्पल रखवाने के मामले में अब तक कार्रवाई नहीं की है।शुजालपुर सिटी थाना के प्रधान आरक्षक नरेंद्र ने बताया कि लड़की राजगढ़ जिले के एक गांव की रहने वाली है। वह 10वीं की परीक्षा दे रही है। उसकी 9वीं के छात्र से एक साल से दोस्ती है।

इंस्टाग्राम पर हुई थी दोस्ती- लड़की के भाई ने पुलिस को बताया है कि इंस्टाग्राम पर उसकी बहन की दोस्ती इस लड़के से हुई थी। वह 40 किलोमीटर दूर सारंगपुर जाकर लड़की से मिला। वहां उसके साथ कुछ फोटो खींच लिए। बाद में जब लड़की ने दोस्ती खत्म करना चाही तो आरोपी ने फोटो वायरल करने की धमकी दी।

लड़की के भाई ने बताया- कुछ महीने पहले मैंने लड़के को समझाने के लिए फोन किया था, जिसे आरोपी के पिता ने रिसीव किया। वो उल्टा मुझे ही धमकाने लगे। गुरुवार को आरोपी ने बहन को शुजालपुर बुलाया। यहां दोनों एक कैफे में

मिले। वहां लड़के ने उसके साथ छेड़छाड़ की।

कैफे ले जाकर छेड़छाड़ की- लड़की के परिजन का आरोप है कि 20 मार्च को दोपहर करीब डेढ़ बजे आरोपी ने फिर से लड़की को फोन किया और फोटो वायरल करने की धमकी दी। उसे बस में बैठकर शुजालपुर आने को कहा। जब लड़की शुजालपुर पहुंची तो अकोदिया नाका पर आरोपी पहले से खड़ा मिला। लड़की ने उससे फोटो डिलीट करने को कहा, लेकिन आरोपी ने कहा कि पहले पास के कैफे में चलो, फिर फोटो डिलीट करूंगा।

कांग्रेस विधायकों को सरकारी फंड देने में हो रहा भेदभाव

पीसीसी चीफ बोले-बीजेपी विधायकों के फंड का भी 40 प्रतिशत कमीशन में चला जाता है

भोपाल (नप्र)। मप्र में विधायकों को दिए जाने वाले सरकारी फंड में हो रहे भेदभाव को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने सीएम डॉ मोहन यादव को पत्र लिखा है। पटवारी ने अपने पत्र में लिखा- मुझे यह पत्र लिखते हुए अत्यंत खेद और चिंता हो रही है कि आपकी सरकार द्वारा प्रदेश में विकास निधि के आवंटन को लेकर गंभीर भेदभाव किया जा रहा है।

सरकार पक्षपाती राजनीति कर रही

पटवारी ने आगे लिखा, आपने मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते समय निष्पक्ष और समान भाव से सभी नागरिकों की सेवा करने का वचन दिया था, लेकिन वर्तमान परिदृश्य यह दर्शाता है कि सरकार पक्षपातपूर्ण संकीर्ण राजनीति कर रही है। कांग्रेस विधायकों के क्षेत्र में जनता भी निवास करती है, जो करदाता हैं और जिन्हें समान रूप से सरकारी योजनाओं और विकास कार्यों का लाभ मिलना चाहिए। यदि एक लोकतांत्रिक सरकार ही अपने दायित्वों का निर्वहन भेदभाव के आधार पर करने लगे, तो इससे जनता का विश्वास प्रणाली से उठ जाएगा।

बीजेपी विधायकों की निधि का 40 प्रतिशत कमीशन में चला जाता है

पटवारी ने आगे लिखा, इसके बाद भी नौकरशाही और ठेकेदारी के स्तर पर व्यापक भ्रष्टाचार और कमीशन का बोलबाला है, जिससे जनता के विकास के नाम पर स्वीकृत धन का बहुत कम अंश वास्तविक कार्यों में लगता है। यदि मोटे तौर पर अनुमान लगाया जाए तो एक लाख रुपए में से करीब 65 से 70 हजार रुपया भ्रष्टाचार और कमीशन में चला जाता है और केवल 30-35 प्रतिशत राशि विकास के नाम पर खर्च होती है। यह बेहद चिंताजनक और निंदनीय स्थिति है, जिससे मध्यप्रदेश की छवि देश के सबसे भ्रष्ट राज्य के रूप में बन रही है।

पटवारी ने सीएम से की तीन मांगें

- सभी विधायकों को, चाहे वे किसी भी दल से हों, समान रूप से 15 करोड़ रुपए की विकास निधि प्रदान की जाए।
- निधि के आवंटन और व्यय की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाया जाए, ताकि भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी पर रोक लगाई जा सके।
- जिन अधिकारियों और ठेकेदारों पर कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार के आरोप हैं, उनकी निष्पक्ष जांच कर कठोर कार्रवाई की जाए।

विधायकों को समान अवसर दिए जाएं

पीसीसी चीफ ने आगे लिखा, मध्य प्रदेश की जनता ने अपने विधायकों को उनके क्षेत्र के विकास के लिए चुना है, न कि भेदभाव और भ्रष्टाचार झेलने के लिए। यदि आपकी सरकार वास्तव में 'सबका साथ, सबका विकास' की नीति में विश्वास रखती है, तो इस अन्यायपूर्ण नीति को तुरंत समाप्त किया जाए और सभी विधायकों को समान अवसर और अधिकार दिए जाएं। आशा है कि आप मध्य प्रदेश की खराब होती छवि को लेकर गंभीरता से विचार करेंगे और जनहित में अपनी संकीर्ण सोच और मानसिकता से मुक्त होकर मुख्यमंत्री के मूल कर्तव्य का निर्वहन करेंगे।